04 - पेरिस समझौते से अमेरिका के बाहर निकलने का अर्थ

05 - उपभोक्ता अधिकार : आपकी ताकत, आपकी पहचान

A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 24 दिसंबर, 2024

06 - किसान नहीं कराते मिट्टी का परीक्षण, रासायनिक खाद मिट्टी से छीन रहे...

07 - बेस्ट ऑफ फाइव योजना एमपी बोर्ड में फिर लागू

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष -22 अंक-114 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

प्रसंगवश

डेढ़ अरब वाले भारत में और बच्चे पैदा करने की मांग क्यों?

सौतिक बिस्वास

संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार, पिछले साल चीन को पीछे छोड़कर भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया।

क़रीब 1.45 अरब लोगों की आबादी के साथ, आप सोच रहे रहे होंगे कि देश अब और अधिक बच्चे पैदा करने पर चुप्पी साध लेगा। लेकिन इस मामले में बहस अचानक और तेज़ हो गई है। दो दक्षिणी राज्यों आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के नेताओं ने हाल ही में और बच्चे पैदा करने की वकालत की।

गिरती जन्मदर और बुज़ुर्ग होती आबादी का हवाला देते हुए आंध्र प्रदेश प्रोत्साहन देने के बारे में सोच रहा है। राज्य ने स्थानीय निकाय चुनावों में दो बच्चों की नीति को भी रद्द कर दिया और रिपोर्टों में कहा गया है कि पड़ोसी तेलंगाना राज्य भी निकट भविष्य में ऐसा ही कर सकता है। एक अन्य पड़ोसी राज्य तमिलनाडु भी इसी तरह के बल्कि और बढ़ा-चढ़ाकर किए जाने वाले दावे कर रहा है।

भारत की प्रजनन दर में काफ़ी कमी आई है और 1950 में प्रति महिला 5.7 के मुकाबले यह गिरकर मौजूदा समय में दो रह गई है। 29 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से 17 में प्रजनन दर प्रति महिला दो जन्म के प्रतिस्थापन स्तर से भी नीचे चली गई है। (प्रजनन दर जब 2.1 पर पहुंची है तो उसे 'रिप्लेसमेंट लेवल फर्टिलिटी' कहा जाता है। इस आंकड़े तक पहुंचने का मतलब होता है कि अगले तीन से चार दशक में देश की आबादी स्थिर हो जाएगी।)

पांच दक्षिणी राज्य भारत के बाकी राज्यों के मुक़ाबले प्रतिस्थापन स्तर के प्रजनन दर को हासिल करने में काफ़ी आगे हैं। केरल ने यह उपलब्धि 1988 में, तमिलनाडु ने 1993 में और बाकियों ने 2000 के दशक के मध्य तक हासिल कर ली थी। आज, पांच दक्षिणी राज्यों की कुल प्रजनन दर 1.6 से नीचे है, जिनमें कर्नाटक की प्रजनन दर 1.6 और तमिलनाडु की 1.4 है। दूसरे शब्दों में, इन राज्यों में प्रजनन दर अधिकांश यूरोपीय देशों के बराबर है या उनसे भी कम है। लेकिन इन राज्यों को डर है कि अलग-अलग राज्यों में आबादी के अंतर के साथ भारत की बदलती जनसांख्यिकी निश्चित रूप से चुनावी प्रतिनिधित्व, संसदीय सीटों के राज्यवार आवंटन और सरकारी राजस्व में हिस्सेदारी पर असर डालेगी। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फ़ॉर पापुलेशन साइंसेज़ में जनसांख्यिकी के प्रोफ़ेसर श्रीनिवास गोली ने कहा, 'बेहतर आर्थिक प्रदर्शन और संघीय राजस्व में अच्छा ख़ासा योगदान देने के बावजूद उन्हें अपनी असरदार जनसंख्या नियंत्रण नीति के लिए दंडित किए जाने का डर है।'

दक्षिणी राज्य एक अन्य बड़ी चिंता से जूझ रहे हैं क्योंकि 1976 के बाद भारत, 2026 में पहली बार परिसीमन की तैयारी कर रहा है। ये कवायद आबादी में बदलाव को प्रतिबिंबित करने के लिए चुनावी परिसीमा को फिर से निर्धारित करेगी, जिससे आर्थिक रूप से संपन्न दक्षिणी राज्यों की संसदीय सीटों में कमी आने की संभावना है। चूंकि सरकारी राजस्व को राज्य की आबादी के लिहाज से आवंटित किया जाता है, इसलिए कई राज्यों को डर सता रहा है कि इससे उनकी आर्थिक परेशानी और बढ़ सकती है और नीतियां बनाने की उनकी आज़ादी बाधित हो सकती है। जनसांख्यिकी विशेषज्ञ केएस जेम्स और शुभ्रा कृति का अनुमान है कि परिसीमन से उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे घनी आबादी वाले उत्तर भारतीय राज्यों को अधिक सीटें मिलेंगी जबकि तमिलनाडु, केरल और आंध्र प्रदेश जैसे दक्षिणी राज्यों को नुकसान हो सकता है और इससे राजनीतिक प्रतिनिधित्व में और बदलाव आएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई लोगों ने संकेत दिया है कि राजस्व हिस्सेदारी और संसदीय सीटों के आवंटन को लेकर जल्दबाज़ी नहीं की जाएगी। जनसांख्यिकी विशेषज्ञों के मुताबिक, मुख्य चुनौती है कि प्रजनन दर गिरने के साथ ही भारत की आबादी तेज़ी से बूढ़ी हो रही है। आबादी के बूढ़े होने की इस तेज़ रफ़्तार का संबंध, प्रजनन गिरावट में भारत की अनोखी सफलता से है। अधिकांश देशों में, जीवनस्तर और शिक्षा में सुधार और शहरीकरण स्वाभाविक रूप से प्रजनन को कम कर देता है क्योंकि बच्चों के जीवित रहने में सुधार होता है। लेकिन भारत में मामूली सामाजिक और आर्थिक प्रगति के बावजूद प्रजनन दरों में तेज़ी से गिरावट दर्ज की गई, इसका कारण आक्रामक परिवार नियोजन कार्यक्रम थे, जिन्होंने लक्ष्य, प्रोत्साहन और हतोत्साहित करने वाले उपायों के माध्यम से छोटे परिवारों को बढ़ावा दिया। गोली कहते हैं कि, इसके कुछ अनअपेक्षित नतीजे भी हुए। आंध्र प्रदेश की प्रजनन दर 1.5 है जो स्वीडन के बराबर है, लेकिन इसकी प्रति व्यक्ति आय उससे 28 गुना कम है। बढ़ते कर्ज और सीमित संसाधनों के साथ क्या इस तरह के राज्य एक तेज़ी से बूढ़ी होती आबादी के लिए ऊंची पेंशन या सामाजिक सुरक्षा मुहैया करा सकते हैं? इस पर सोचने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की ताज़ा इंडिया एजिंग रिपोर्ट के अनुसार, 40 प्रतिशत से अधिक बुज़ुर्ग भारतीय (60+साल) धन वितरण के मामले में आबादी के निचले 20 प्रतिशत में आते हैं। गोली कहते हैं, 'भारत अमीर होने से पहले ही ग़रीब हो रहा है।'

कम बच्चों का मतलब वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात में बढ़ोतरी भी है, जिससे बढ़ती बुज़ुर्ग आबादी की देखभाल करने वालों की संख्या भी कम होती है।

जनसांख्यिकी विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि भारत की स्वास्थ्य सेवा, सामुदायिक केंद्र और ओल्ड एज होम्स इस बदलाव के लिए तैयार नहीं हैं। शहरीकरण, प्रवासन, और बदलते श्रम बाज़ार भी पारंपरिक पारिवारिक सपोर्ट को और अधिक कमज़ोर कर रहे हैं जोकि भारत का मजबूत पक्ष रहा है, इससे और अधिक बुज़ुर्ग पीछे छूट रहे हैं। लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में जनसांख्यिकी विशेषज्ञ टिम डायसन ने बताया कि एक या दो दशक बाद, 'प्रजनन का बहुत कम स्तर का बने रहना, आबादी में तेज़ी से कमी का कारण बनेगा।' प्रति महिला 1.8 जन्म की प्रजनन दर, धीमी रफ़्तार और आबादी में संतुलन लायक कमी का कारण बनती है। लेकिन 1.6 या उससे कम दर 'तेज़, जनसंख्या में बेकाबू गिरावट' का ट्रिगर हो सकती है। बहुत कम संख्या में लोग प्रजनन और मुख्य रूप से कामकाजी उम्र में प्रवेश करेंगे और यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से विनाशकारी होगा। यह एक जनसांख्यिकी प्रक्रिया है और इसे उलटना बहुत मुश्किल है।' जनसांख्यिकी विशेषज्ञों का कहना है कि भारत को ऐसी नीतियों को प्राथमिकता देना चाहिए ताकि बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं से ज़िंदगी के सेहतमंद साल बढ़ें। भारत को अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का भी बेहतर लाभ उठाना चाहिए, यानी ऐसा आर्थिक विकास जो किसी देश में बड़ी संख्या में, कामकाजी उम्र वाली आबादी के कारण होता है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

शाम घर आकर जब मैंने
खुद को झड़या तो
इतनी आँखें गिरी जमीं पर
कुछ घूरती, कुछ रेंगती
कुछ टटोलती मेरा तन मन
कुछ आस्तीन में फंसी थी
कुछ कॉलर में अटकी थी
कुछ उलझी थी बालों में
गर्दन के पीछे चिपकी मिली
कुछ उंगलियों में पोरों में
कुछ नशीली कुछ रसीली
कोई बेशर्मी से भरी हुई
ये आंखें ऐसी क्यों हैं?
उनकी हमारी सी आंखें
पर इतना अंतर क्यों है?
मैं रोज़ प्रार्थना करती हूँ
कुछ न चिपका मिले मुझ पर
जैसी मैं सुबह जाती हूँ घर से
वैसे साफ सुथरी आऊं वापस
मगर ऐसा हो पाता नहीं
बोझ उठाये नजरों का हरदम
चलते रहना नियति है मेरी, शायद।

- संजय मृदुल

पीएम मोदी ने 71 हजार को ज्वाइनिंग लेटर बांटे

कहा- डेढ़ साल में करीब 10 लाख पक्की नौकरी दी पहले की सरकारों ने ऐसा नहीं किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को देश के 45 जगहों पर आयोजित रोजगार मेले में 71 हजार युवाओं को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ज्वाइनिंग लेटर बांटे। 2024 लोकसभा चुनाव के बाद प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल का यह दूसरा रोजगार मेला है।

पीएम मोदी ने कहा- पिछले डेढ़ साल में हमारी सरकार में करीब 10 लाख पक्की नौकरियां दी गईं। पहले की सरकारों ने ऐसा नहीं किया। आज युवाओं के लिए नए अवसरों का निर्माण हो रहा है।

रोजगार मेले की शुरुआत अक्टूबर 2022 में हुई थी। अब तक 14 मेलों में 9.22 लाख से ज्यादा युवाओं को नौकरी दी जा चुकी है। इससे पहले आखिरी रोजगार मेला 29 अक्टूबर 2024 को आयोजित किया गया था, जिसमें 51 हजार से ज्यादा लोगों को जॉइनिंग लेटर बांटा गया था।

विकसित भारत पर : भारत ने 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का संकल्प लिया है। हमें इस संकल्प पर भरोसा है और लक्ष्य की प्राप्ति का विश्वास है, क्योंकि भारत में हर नीति और हर निर्णय के केंद्र में भारत का प्रतिभाशाली युवा है। आज देश में न केवल लाखों युवाओं को सरकारी नौकरियां मिल रही हैं, बल्कि ये नौकरियां पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ दी जा रही हैं। किसी भी देश का विकास उसके युवाओं के श्रम, सामर्थ्य और नेतृत्व से होता है।

शेख हसीना को वापस बांग्लादेश भेजे भारत

अंतरिम यूनुस सरकार ने भेजा राजनयिक नोट

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना अपनी सरकार के खिलाफ बड़े पैमाने पर छात्र नेतृत्व वाले विद्रोह के बीच पांच अगस्त को भारत चली गई थीं। इस दौरान हुए विरोध प्रदर्शन में कई लोग घायल हुए। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुताबिक विरोध प्रदर्शनों के दौरान कम से कम 753 लोग मारे गए और हजारों घायल हुए। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को ढाका वापस भेजने के लिए भारत को एक राजनयिक नोट भेजा है। बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार तौहीद हुसैन ने अपने कार्यालय में सोमवार इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमने भारत सरकार को एक नोट वर्बल (राजनयिक संदेश) भेजा है जिसमें कहा गया है कि बांग्लादेश न्यायिक प्रक्रिया के लिए शेख हसीना को वापस चाहता है।

इससे पहले आज दिन में, गृह सलाहकार जहांगीर आलम ने कहा कि उनके कार्यालय ने अपदस्थ प्रधानमंत्री के भारत से प्रत्यर्पण की सुविधा के लिए विदेश मंत्रालय को एक पत्र भेजा है। प्रक्रिया अभी चल रही है। उन्होंने कहा कि ढाका और नई दिल्ली के बीच प्रत्यर्पण संधि पहले से मौजूद है और संधि के तहत हसीना को बांग्लादेश वापस लाया जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने सागर में विभिन्न विकास कार्यों का भूमि-पूजन और लोकार्पण किया

लाखा बंजारा झील के नए स्वरूप का लोकार्पण

सागर (नप्र)। सागर गौरव दिवस के मौके पर सोमवार को सीएम डॉ. मोहन यादव ने लाखा बंजारा झील के पुनर्विकास कार्य का लोकार्पण किया। संजय ड्राइव पर आयोजित कार्यक्रम में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी भी शामिल हुए। डॉ. यादव ने सागर सिटी गवर्नेंस नगर पालिका निगम कार्यालय और दो जोनल सेंटर का भी लोकार्पण किया। इस दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी प्रस्तुति दी गई।

मुख्यमंत्री ने सागर में कैंसर अस्पताल खोलने, राजकीय विश्वविद्यालय में विधि संकाय शुरू करने समेत देवरी विधानसभा की गौरझामर ग्राम पंचायत को नगर परिषद बनाने की घोषणा की।

भूपेंद्र सिंह ने नहीं कराया अपना स्वागत,सागर में मंच पर अधिकारी के जोड़े हाथ

सागर में पूर्व मंत्री और खुरई से विधायक भूपेंद्र सिंह ने भरे मंच पर अपना स्वागत कराने से इंकार कर दिया। बाद में गुलदस्ता सीएम को थमा दिया। मंच पर सीएम डॉ. मोहन यादव और उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी भी मौजूद थे।भूपेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में मंत्री गोविंद सिंह राजपूत का नाम भी नहीं लिया। वहीं कार्यक्रम को लेकर लगे बैनर-पोस्टर में उनका फोटो नहीं होने पर कहा कि बैनर पोस्टर में फोटो नहीं, दिलों में जगह होना चाहिए। दरअसल, आयोजन को लेकर छापे गए पोस्टर्स में भूपेंद्र सिंह का फोटो और आमंत्रण पत्र में नाम नहीं था। लेकिन रात के समय नए पोस्टर लगाए गए, उनमें फोटो लगाई गई थी।सोमवार को सागर गौरव दिवस के मौके पर सीएम ने लाखा बंजारा झील का कायाकल्प होने के बाद इसका लोकार्पण किया। इस दौरान मंच पर विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर, डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल, नागरिक एवं खाद्य आपूर्ति उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव और भूपेंद्र सिंह मौजूद रहे। पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह ने जब कार्यक्रम को संबोधित किया तो मंत्री गोविंद सिंह राजपूत का नाम नहीं लिया। गोविंद सिंह की बजाय विधायक शैलेंद्र जैन को कार्यक्रम का आयोजक बताया। भूपेंद्र सिंह ने कहा कि बैनर-पोस्टर में फोटो नहीं, दिलों में जगह होना चाहिए।

सीहोर में पुल की मिट्टी धंसने से चार मजदूर दबे, तीन की मौत

भोपाल/सीहोर (नप्र)। जिले के बुधनी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम सियागहन में निर्माणधीन पुल की मिट्टी धंसने से चार मजदूर दब गए, जिसमें से तीन की मौत हो गई। रेस्क्यू टीम ने एक मजदूर को बाहर निकाल लिया था। दबे हुए तीन मजदूरों को निकालने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन कर कर निकला गया, लेकिन उनकी मौत हो गई है।

काम के दौरान धंसी मिट्टी- जानकारी के अनुसार ग्राम शियागहन में निर्माण के लिए पुल के पास से मिट्टी खोदी जा रही थी, जहां अचानक मिट्टी धंस गई। हादसे की सूचना क्षेत्र के लोगों ने प्रशासन को दी, जिसके बाद रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची और काम शुरू किया। तीन मजदूर की मौत हो गई।

अस्पताल में भर्ती- रेस्क्यू टीम मौके पर घायल वीरेंद्र पिता सुखराम गौड उम्र 25 वर्ष निवासी ग्राम धनवास थाना मुरवास तहसील लटेरी जिला विदिशा को घायल अवस्था में नर्मदा हॉस्पिटल नर्मदापुरम भेजा गया है।

3 मजदूरों की मौत- वहीं करण पिता घनश्याम उम्र 18 वर्ष, निवासी ग्राम धनवास थाना मुरवास तहसील लटेरी जिला विदिशा, रामकृष्ण उर्फ रामू पिता मांगीलाल गौड उम्र 32वर्ष निवासी ग्राम धनवास थाना मुरवास तहसील लटेरी जिला विदिशा ओर भगवान लाल पिता बरसादी गौड़ निवासी ग्राम बेरखेड़ी, थाना धरनावदा जिला गुना की मौत हो गई।

श्रीनगर में डल झील पर आधा इंच बर्फ की परत

नई दिल्ली/भोपाल/जयपुर/श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी से पारा लगातार गिर रहा है। उत्तराखंड के ऊंचे हिमालयी इलाकों में बर्फबारी और बारिश के चलते कड़ाके की ठंड पड़ रही है। कई जगहों पर तापमान माइनस से 10 डिग्री नीचे तक पहुंच गया है।

श्रीनगर में 21 दिसंबर की रात 50 साल में सबसे ठंडी रात रही। यहां पारा माइनस 8 डिग्री था। 22 दिसंबर को तापमान 4 डिग्री के करीब रिकॉर्ड किया गया। चिल्लई कलां के तीसरे दिन डल झील भी जम गई। यहां झील की सतह पर आधा इंच मोटी बर्फ की परत दिखाई दे रही है। बद्रीनाथ धाम के पास उर्वशी धारा का झरना लगातार हो रही बर्फबारी के कारण बहते-बहते ही पूरी तरह जम गया है।

बद्रीनाथ में झरना जमा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बारिश के आसार, म.प्र.में ओले गिरने का अलर्ट

कश्मीर के जोजिला में तापमान -25 डिग्री

जम्मू-कश्मीर में चिल्लई कलां के दौरान कई जिलों में तापमान माइनस में चल रहा है। सोमवार सुबह श्रीनगर में पारा -3.6 डिग्री, पहलगाम में -5.0 डिग्री, गुलमर्ग में -4.8 डिग्री, सोनमर्ग में -5.1 डिग्री, जोजिला में -25.0 डिग्री, अनंतनाग में -6.1 डिग्री, शोपियां में -7.3 डिग्री, लेह में -9.2 डिग्री, कारगिल में -9.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 24 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

जयपुर में जिस एलपीजी टैंकर में ब्लास्ट, उसका ड्राइवर जिंदा बचा

गैस लीक होते ही भाग गया था; घायलों के परिवार से मिलीं वसुंधरा राजे

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में एलपीजी ब्लास्ट मामले में पुलिस को टैंकर के ड्राइवर की जानकारी मिल गई है। एसएचओ भांकरोटा मनीष कुमार शर्मा ने बताया- टैंकर ड्राइवर टक्कर के दौरान गैस लीक होने पर जयपुर की तरफ दौड़ा था। इससे उसकी जान बच गई। सोमवार सुबह पूर्व सीएम वसुंधरा राजे घायलों के परिवार वालों से मिलने एसएमएस हॉस्पिटल पहुंचीं। राजे ने उनसे बात की और हिम्मत दी। सीनियर डॉक्टरों से इलाज के बारे में पूछा।

पूर्व आईएएस पूजा खेडकर की अग्रिम जमानत याचिका खारिज

पीएससी एग्जाम में धोखाखड़ी का आरोप; फर्जी दस्तावेज लगाए थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने सोमवार को पूर्व आईएएस पूजा खेडकर की अग्रिम जमानत याचिका खारिज कर दी। पूजा पर पीएससी एग्जाम में धोखाधड़ी और ओबीसी और विकलांगता कोटे का गलत तरीके से फायदा लेने का आरोप है। यूपीएससी की शिकायत के बाद दिल्ली पुलिस ने पूजा खेडकर के खिलाफ धोखाधड़ी और जालसाजी का केस दर्ज किया था। पूजा ने गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत याचिका लगाई थी। जस्टिस चंदर धारी सिंह की बेंच ने 27 नवंबर को मामले में अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था।

यूपी के पीलीभीत में 3 खालिस्तानी आतंकियों का एनकाउंटर

पंजाब में थाने पर हमला किया था, 2 एके47 और कारतूस बरामद, 2 सिपाही जख्मी

पीलीभीत (एजेंसी)। यूपी के पीलीभीत में 3 खालिस्तानी आतंकियों को एनकाउंटर में मार गिराया गया। पीलीभीत पुलिस और पंजाब पुलिस ने सोमवार तड़के यह ऑपरेशन किया। सभी आतंकी खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स के सदस्य थे। इन्होंने 19 दिसंबर को पंजाब के गुरदासपुर जिले में पुलिस चौकी पर ग्रेनेड से हमला किया था।

मणिशंकर अय्यर बोले-

कांग्रेस इंडिया ब्लॉक की अगुआई करना न सोचे

ममता बनर्जी में क्षमता है, जो भी विपक्षी गठबंधन को लीड करना चाहे, उसे करने दें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर ने कहा कि कांग्रेस को विपक्षी गठबंधन इं..डि..या. ब्लॉक को लीड करने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। अय्यर ने कहा, ममता बनर्जी में क्षमता है, दूसरे नेता भी हैं, जो गठबंधन को लीड कर सकते हैं।

जो भी इसकी अगुआई करना चाहे, उसे करने देना चाहिए। मणिशंकर अय्यर ने कहा कि इससे फर्क नहीं पड़ता कि विपक्षी गठबंधन को कौन लीड करता है। वजह यह कि कांग्रेस और उनके नेताओं का स्थान हमेशा ही अहम रहेगा। जरूरी नहीं कि वो अकेली अहम पार्टी हो। वह विपक्षी गठबंधन में अहम पार्टी रहेगी। सोनिया को लगता है कि मैं बेलगाम तोप हूं: मुझे नहीं पता कांग्रेस पार्टी को मेरे बारे में क्या अच्छा नहीं लगता। सोनिया गांधी ने कहा था कि मैं एक बेलगाम तोप हूं, लेकिन गांधी और नेहरू की कांग्रेस में बेलगाम तोपों को बहुत उपयोगी लोग माना जाता था।

एक्टिव पॉलिटिक्स के लिए बूढ़ा हूं- राहुल गांधी मुझसे 30 साल छोटे हैं। मैं उनके पिता से जुड़ा हुआ था, इसलिए राहुल को लगता है कि मैं उनके पिता की पीढ़ी का हूं। राहुल कांग्रेस के नेता हैं और मैं उनका अनुयायी हूं।

इसलिए मुझे स्वीकार करना होगा कि मैं एक्टिव पॉलिटिक्स के लिए बहुत बूढ़ा हो चुका हूं, लेकिन मैंने कांग्रेस नहीं छोड़ी है। मैं कांग्रेस कभी नहीं छोड़ूंगा, खासकर भाजपा में जाने के लिए तो बिल्कुल नहीं।

कांग्रेस भी भाजपा की तरह

हर पार्टी का अलग-अलग कल्चर होता है। भाजपा में आप पीएम मोदी की तारीफ के बिना 2 लाइन भी नहीं लिख सकते हैं। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि कांग्रेस में भी ऐसा ही कल्चर रहा है। हालांकि यह भाजपा की तरह गुलामी वाला कल्चर नहीं है।

अरे उठाइए उनको... 'प्रगति यात्रा' में नीतीश कुमार को गुलदस्ता देने की होड़ में गिर गए कई नेता

बेतिया (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार 23 दिसंबर को अपनी 'प्रगति यात्रा' की शुरुआत की। इस यात्रा के दौरान बेतिया के मझौलिया प्रखंड के शिकारपुर गांव में एक अजीबोगरीब घटना सामने आई। सीएम नीतीश कुमार को गुलदस्ता देने की नेताओं में होड़ सी मच गई। नेताओं के बीच गुलदस्ता देने को लेकर मची अफरा-तफरी में सड़क किनारे की मिट्टी धंस गई। इससे कई नेता गिर पड़े। आनन-फानन में मौके पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों और लोगों ने उन्हें उठाया। नीतीश कुमार जनता का अभिवादन करते हुए सड़क पर पैदल चल रहे थे। इसी दौरान बांस-बल्ली की बैरिकेडिंग से निकल कर कुछ नेता अचानक आ गए। पार्टी के ये नेता नीतीश कुमार को फूलों का गुलदस्ता देना चाहते थे, तब तक जमीन से मिट्टी खिसक गई और एक के ऊपर एक कई नेता गिर पड़े।

दिग्गज निर्देशक श्याम बेनेगल का निधन, 90 साल की उम्र में ली आखिरी सांस

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड से एक बुरी खबर सामने आ रही है। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज निर्देशक श्याम बेनेगल का निधन हो गया है। उन्होंने 90 साल की उम्र में आखिरी सांस ली। उन्होंने भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और लीक से हटकर फिल्मों के लिए जाने गए। उन्होंने इंडस्ट्री में 50 साल से भी ज्यादा लंबा सफर तय किया।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल जी के नदी जोड़ो अभियान का सपना म.प्र. की धरती पर हो रहा साकार: मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश को मिलेगी केन-बेतवा लिंक परियोजना की सौगात

प्रधानमंत्री श्री मोदी का स्वागत-अभिनंदन है, मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ. धामी का स्वागत

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी केन-बेतवा लिंक परियोजना की सौगात देने मध्यप्रदेश पधार रहे हैं, उनका प्रदेश की धरती पर स्वागत अभिनंदन है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में नदी जोड़ो अभियान बड़े स्वरूप में आकार लेगा। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर प्रदेश को मिल रही इस सौगात से सागर, दतिया सहित सम्पर्ण बुंदेलखण्ड को पर्याप्त सिंचाई और पेयजल सुविधा उपलब्ध होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनकल्याण पर्व में सागर गौरव दिवस में क्षेत्र को सौगातें प्रदान करने के कार्यक्रम में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल की भी सहभागिता होगी। इन सौगातों से सम्पूर्ण क्षेत्र का आने वाला कल बेहतर होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राजकीय विमान तल पर मीडिया से चर्चा में यह बात कही।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में विकास और जनकल्याण की दिशा में हम निरंतर गतिशील है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राजकीय विमानतल पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री डॉ. पुष्कर सिंह धानी का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। साथ ही चंदेरी का अंगवस्त्र और राजभोज की प्रतिमा भेंट की। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री डॉ. धामी ने भी मुख्यमंत्री डॉ. यादव का पुष्पगुच्छ और शाल भेंट कर अभिवादन किया।

पीएम मोदी 25 दिसंबर को खजुराहो में केन-बेतवा लिंक परियोजना का करेंगे शिलान्यास

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि देश की प्रथम केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना केन्द्र सरकार, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के मध्य परस्पर सहयोग एवं समन्वय का एक अनूठा उदाहरण है। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नदी जोड़ो अभियान के सपने को साकार करने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बीड़ा उठाया है। बहुउद्देशीय और महत्वाकांक्षी केन-बेतवा लिंक परियोजना से मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के समूचे बुंदेलखंड क्षेत्र की तस्वीर और तकदीर बदलेगी। इस परियोजना से किसानों को जहां सिंचाई के लिए भरपूर जल उपलब्ध होगा, वहीं पेयजल और उद्योगों के लिए भी पर्याप्त पानी मिलेगा। क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक विकास के साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे। सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र में भूजल की स्थिति भी सुधरेगी। मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश की तस्वीर और तकदीर बदलने वाली इस परियोजना का शिलान्यास करने प्रधानमंत्री श्री मोदी 25 दिसंबर को छतरपुर जिले के खजुराहो आ रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन-बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना, देश में भूमिगत दाबयुक्त पाइप सिंचाई प्रणाली अपनाने वाली सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना है। यह परियोजना मध्यप्रदेश के छतरपुर और पन्ना जिले में केन नदी पर निर्मित की जा रही है। परियोजना के अंतर्गत पन्ना टाइगर रिजर्व में केन नदी पर 77 मीटर ऊँचाई एवं 2.13 किलोमीटर लंबाई के दौधन बांध एवं 2 टनल (अपर लेवल 1.9 कि.मी. एवं लोअर लेवल 1.1 कि.मी.) का निर्माण कर बांध में 2,853 मिलियन घन मीटर जल का भंडारण किया जायेगा। केन नदी पर दौधन बांध से 221 कि.मी. लंबी लिंक नहर के द्वारा दोनों राज्यों में सिंचाई एवं पेयजल की सुविधा प्रदाय करते हुये केन नदी के अधिशेष जल को बेतवा नदी में अंतरित किया जावेगा। परियोजना से दाबयुक्त सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के माध्यम से मध्यप्रदेश के 10 जिले पन्ना, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, सागर, रायसेन, विदिशा, शिवपुरी एवं दतिया के 2 हजार ग्रामों में 8.11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई हो सकेगी। इससे लगभग 7 लाख किसान परिवार लाभान्वित होंगे।

राजस्थान के स्कूलों में 12 दिन का शीतकालीन अवकाश

- 25 दिसंबर से 5 जनवरी तक नहीं खुलेंगे स्कूल

बीकानेर (एजेंसी)। प्रदेश के स्कूलों में 25 दिसंबर से 5 जनवरी तक शीतकालीन अवकाश रहेगा। हर साल शिविरा पंचांग में 25 दिसंबर क्रिसमस के दिन से ही सर्दी की छुट्टियां शुरू जाती हैं, जो पांच जनवरी तक चलती हैं। इस बार शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा था कि तेज सर्दी सर्दी पड़ने पर ही स्कूलों में शीतकालीन अवकाश (25 दिसंबर के बाद) किया जाएगा, हालांकि उनके इस बयान को लागू नहीं किया गया और शिविरा पंचांग के हिसाब से ही छुट्टियां दी गई हैं।

150 फीट गहरे बोरवेल में गिरी 3 साल की बच्ची, अंदर से आ रही थी रोने की आवाज

2 दिन पहले ही निकाला था पाइप

कोटपूतली (एजेंसी)। कोटपूतली में सोमवार दोपहर 1:50 बजे 3 साल की बच्ची बोरवेल में गिर गई। बोरवेल 700 फीट गहरा है। शुरुआत में बच्ची करीब 15 फीट की गहराई में थी, लेकिन अचानक फिसल कर और नीचे चली गई। मामला किरतपुरा क्षेत्र के बड़ियाली ढाणी का है।

जानकारी के अनुसार- चेतना चौधरी पुत्री भूपेंद्र चौधरी घर के पास खेल रही थी। इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और वह बोरवेल में गिर गई। रोने की आवाज सुनकर परिजन ने तुरंत पुलिस को बच्ची के बोरवेल में गिरने की जानकारी दी। सरुण्ड थाना पुलिस और प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया है। जेसीबी से बोरवेल के पास खुदाई शुरू कर दी गई है। बोरवेल में बच्ची तक पाइप के जरिए ऑक्सीजन पहुंचाई गई है।हादसे की सूचना मिलते ही मौके पर लोग जुट गए। वहीं प्रशासन रेस्क्यू अभियान में जुटा है।

परभणी हिंसा- राहुल गांधी मृतक सोमनाथ के परिवार से मिले

- बोले- ये 100 प्रतिशत हिरासत में मौत, सीएम फडणवीस ने विधानसभा में झूठ बोला

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के परभणी में 10 दिसंबर को अंबेडकर स्मारक में तोड़फोड़ हुई थी। घटना के 12 दिन बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी सोमवार को परभणी पहुंचे। उन्होंने यहां मृतक सोमनाथ सूर्यवंशी और विजय वाकोडे को श्रद्धांजली दी। साथ ही उनके परिवारों से मुलाकात की। सोमनाथ सूर्यवंशी को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। उसकी 15 दिसंबर को पुलिस कस्टडी में मौत हुई थी। राहुल ने कहा, मैं अभी पीड़ित परिवार से मिला, उन लोगों ने मुझे पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और फोटो-वीडियो दिखाए, सोमनाथ की मौत 100 व कस्टोडियल (हिरासत में मौत) डेथ है, पुलिस ने इनकी हत्या की है। चीफ मिनिस्टर ने पुलिस को मैसेज देने के लिए असेंबली में झूठ बोला है।

मेरठ महोत्सव में हेमामालिनी की नृत्य प्रस्तुति

ड्रीमगर्ल का गंगा अवतार, क्रांतिधरा पर दिया नदियों के संरक्षण का संदेश

मेरठ (एजेंसी)। ड्रीमगर्ल हेमामालिनी को मेरठ वासियों ने जब मां गंगा के अवतार में देखा तो मंत्रमुग्ध हो गए। दर्शक दीर्घा में बैठे सैकड़ों हाथों ने नमन कर मां गंगा को प्रणाम किया। तालियों की गड़गड़ाहट से प्रांगण गूंज उठा। मैं पुण्य सलिल हूं गंगा, मैं मोक्षदायिनी गंगा..इन पंक्तियों से स्टेज गूंज उठा।

मशहूर पार्श्व गायिका कविता कृष्णमूर्ति की आवाज में पगी इन पंक्तियों पर नृत्य करते हुए हेमामालिनी ने सभी को नयनाभिराम कर दिया। प्रस्तुति के साथ मां गंगा की कथा शनैः शनैः आकार पाती चली गई। दर्शक गंगा की लहरों में डूबते, उतरते चले गए। संगीत सम्राट स्व. रविंद्र जैन के संगीतबद्ध गीतों को सुरेश वाडेकर, शंकर महादेवन और अंत में मीका सिंह की आवाज में पिरोया गया। मंच पर एक-एक कर गंगा के जीवन का हर दृश्य अंकित होता गया। अंत में हेमामालिनी ने मेरठवासियों से संकल्प लिया कि सभी मिलकर गंगा को स्वच्छ, निर्मल, धवल रखें। उसकी पुण्यता को बरकरार रखेंगे। क्रांतिधरा वासियों ने भी वादा किया कि इस संकल्प के प्रति वो कटिबद्ध हैं।

नागपुर एयरपोर्ट काम में देरी पर गडकरी की चेतावनी

एक महीने में पूरा नहीं हुआ तो अधिकारी निलंबित

मुंबई (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सोमवर की सुबह नागपुर एयरपोर्ट के रनवे का निरीक्षण किया। उन्होंने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) के अधिकारियों को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि अगर नागपुर एयरपोर्ट के रनवे रिकार्पेटिंग का काम एक महीने में पूरा नहीं हुआ तो अधिकारियों को निलंबित कर दिया जाएगा। आखिरी रनवे रिकार्पेटिंग का काम 2013-14 में एएआई के माध्यम से की गई थी।

रणथंभौर में 2 बाघों की लड़ाई में 1 की मौत

- गले पर दांतों के गहरे निशान, गर्दन-पैर पर पंजे मारे; झाड़ियों में मिला शव

सवाई माधोपुर (एजेंसी)। रणथंभौर नेशनल पार्क में 2 बाघों की लड़ाई में 1 बाघ की मौत हो गई। सोमवार को सुबह वन कर्मियों ने ट्रैकिंग के दौरान झाड़ियों में साढ़े 3 साल के बाघ का शव पड़ा देखा। बाघ की गर्दन और पैरों पर चोट के निशान मिले हैं। गले पर दांतों के गहरे निशान हैं। वन विभाग के कर्मचारियों ने बाघ के शव को कब्जे में लिया और पोस्टमॉर्टम के बाद अंतिम संस्कार किया। विभाग का मानना है कि आमा घाटी वन क्षेत्र में बाघ टी-120 गणेश (6.5 साल) से टेरिटोरियल फाइट में बाघ टी-2309 की मौत हो गई।

भेल में रक्त दान अभियान

भोपाल। रक्त दान महज एक साधारण रस्मी आयोजन नहीं, अपितु जीवन दान का अद्भुत प्रयोजन है बशर्ते श्रद्धा समर्पण के भाव से समाहित हो। श्रद्धा के इसी भाव को अंतस में समोकर समाज की भलाई को समर्पित आर्य समाज समूह द्वारा भेल भोपाल में पिपलानी स्थित आर्य समाज मंदिर परिसर में 25 दिसंबर को प्रातः 10 बजे से एक वृहद रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। संयोजक अपर महाप्रबंधक, भेल, रानीपेट मनीष गोगिया ने शिविर में सम्मिलित होकर आयोजन को सफल बनाने की अपील की है।

भोपाल के वन मेले में बिकीं 40 लाख की जड़ी-बूटियां

लोगों को खूब भाए मोटे अनाज-जौ से बने व्यंजन; आज शाम को होगा समापन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में चल रहे अंतरराष्ट्रीय वन मेले का आज, सोमवार को समापन होगा। इसमें अब तक करीब 40 लाख रुपए की जड़ी-बूटियां और हर्बल उत्पाद बिक चुके हैं। लोगों को मोटे अनाज और जौ से बने व्यंजन खूब भाए हैं।

वन मेला 17 दिसंबर से शुरू हुआ था। इसमें 300 से ज्यादा स्टॉल लगे हैं। जहां अब तक 40 लाख रुपए से ज्यादा की जड़ी-बूटियां बिक चुकी है। इस बार मेले में आंवला एवं इससे बने उत्पाद जैसे आंवला कैंडी, अचार, सुपारी और शहद, हर्बल टी, अर्जुन चाय, गुड़ और बांस के ब्रश से लेकर सोफा, कुर्सियां, लकड़ी के खिलौने, गुड्डे-गुड़िया एवं हर्बल जड़ी-बूटियों की मांग अधिक रही।

ये भी भा रहे लोगों को

वन विभाग एवं राज्य लघु वनोपज, सहकारी संघ मर्यादित द्वारा लगाए गए इस मेले में लोगों का रुझान बढ़ा है। मोटे अनाज कोदो-कुटकी, मक्का-बाजरा और जौ से बने व्यंजन आगंतुकों के मन को खूब भाए। मेले में 300 से ज्यादा स्टॉल लगे हैं। वहीं, 90 से अधिक वैद्य उपचार कर रहे हैं।

मंत्रियों की मौजूदगी में होगा समापन

खेल मंत्री विश्वास सारंग के मुख्य आतिथ्य, उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार की अध्यक्षता और वन राज्य मंत्री दिलीप सिंह अहिरवार के विशिष्ट आतिथ्य में 7 दिवसीय वन मेले का समापन समारोह शाम 5 बजे होगा।

समापन समारोह में अपर मुख्य सचिव वन अशोक वर्णवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख असीम श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक लघु वनोपज विभाष कुमार ठाकुर और वन विभाग के अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

हाईकोर्ट से कसाई की बड़ी जीत

बूचड़खाने को लेकर नगर पालिका को दिया बड़ा आदेश

इंदौर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने मंदसौर शहर के एक पेशेवर कसाई की याचिका स्वीकार करते हुए स्थानीय निकाय को उसे भैंसों का बूचड़खाना खोलने के लिए एनओसी जारी करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने एनओसी के लिए कसाई की अर्जी खारिज करने के पीछे स्थानीय निकाय की इस दलील को 'पूरी तरह अस्वीकार्य' करार दिया है कि मंदसौर के एक धार्मिक शहर होने के कारण वहां बूचड़खाना खोलने की अनुमति नहीं दी जा सकती। हाई कोर्ट की इंदौर पीठ के जस्टिस प्रणय वर्मा ने मंदसौर निवासी साबिर हुसैन की याचिका 17 दिसंबर को स्वीकार करते हुए अपने फैसले में यह टिप्पणी की। हुसैन, पेशे से कसाई हैं। उन्होंने भैंस के गोश्त के कारोबार के वास्ते बूचड़खाना खोलने के मकसद से मंदसौर नगर पालिका से एनओसी हासिल करने के लिए वर्ष 2020 में अर्जी दायर की थी, लेकिन सीएमओ ने यह दावा करते हुए उनकी अर्जी खारिज कर दी थी कि प्रदेश सरकार ने मंदसौर शहर को 'पवित्र नगरी' घोषित कर रखा है।

पशुपतिनाथ मंदिर के करीब पवित्र क्षेत्र- दरअसल, प्रदेश सरकार के धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग ने नौ दिसंबर 2011 को जारी अधिसूचना में मंदसौर में भगवान शिव के पशुपतिनाथ मंदिर के 100 मीटर के दायरे को ''पवित्र क्षेत्र'' घोषित किया था। अधिसूचित क्षेत्र में पशु वध को प्रतिबंधित करते हुए अंडा, मांस, मछली और शराब की खरीद-फरोख्त पर रोक लगा दी गई थी।

पवित्र क्षेत्र है काफी दूर- हुसैन ने सीएमओ के सामने पेश में अर्जी में कहा था कि वह मंदसौर में जिस जगह बूचड़खाना खोलना चाहता है, वह ''पवित्र क्षेत्र'' से काफी दूर है। हाईकोर्ट ने कसाई की याचिका पर मामले के तथ्यों पर गौर करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार ने मंदसौर के केवल 100 मीटर के दायरे वाले स्थान को ''पवित्र क्षेत्र'' घोषित किया है, लिहाजा महज इस अधिसूचना के बूते पूरे शहर को ''पवित्र क्षेत्र'' नहीं माना जा सकता।

भोपाल में वेटिंग शिक्षकों ने की दंडवत पद यात्रा

वर्ग-1 के 20,000 पद बढ़ाने की मांग; गेट पर ज्ञापन चिपकाकर खत्म किया प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। भोपाल में वर्ग 1 (2023) भर्ती की दूसरी काउंसिलिंग में 20 हजार पदों की वृद्धि की मांग को लेकर 50 से अधिक अभ्यर्थियों ने प्रदर्शन किया। रानी कमलापति स्टेशन से अभ्यर्थी दंडवत मुद्रा में आगे बढ़ते हुए लोक शिक्षण संचालनालय (DPI) पहुंचें। महिलाओं ने मुंडन कराने की बात कही।

उनके पहुंचने से पहले ही अधिकारी वल्लभ भवन किसी मीटिंग में शामिल होने चले गए। इस वजह से कोई ज्ञापन लेने नहीं आया। इस दौरान अभ्यर्थियों ने जमकर नारेबाजी की, और गेट पर ज्ञापन चिपकाकर लौट गए।

जल वितरण प्रणाली को लीकेज प्रूफ बनाने के साथ रीवा के हर घर में शुद्ध जल सप्लाई सुनिश्चित करना है : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भविष्य आधारित, पर्यावरण अनुसंगत योजना का करें निर्माण, इजराइल का प्रतिनिधि मंडल करेगा सहयोग

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि जल प्रबंधन के लिये इजरायल का नाम विश्व में विख्यात है। उनके अनुभव, प्रयासों और सुझावों से रीवा नगर निगम क्षेत्र में बेहतर जल प्रबंधन किया जायेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि योजना का निर्माण भविष्य की आवश्यकताओं और मांग को ध्यान में रखकर किया जाये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रीवा शहर में जल वितरण प्रणाली को लीकेज प्रूफ बनाने के साथ हर घर में शुद्ध जल पहुँचना सुनिश्चित करना है। जल संग्रहण के साथ जल का संवर्धन भी भविष्य की मांग को पूरा करने के लिये आवश्यक है। जल को उपचारित कर पुनः प्रयोग करना समय की मांग है और पर्यावरण अनुसंगत है। इसे ध्यान में रखते हुए योजना का निर्माण किया जाये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने चार इमली स्थित निवास कार्यालय में नगर निगम रीवा में वाटर सप्लाई सुविधा के विस्तार, प्रबंधन और सशक्तीकरण के लिये इजराइल के प्रतिनिधि मंडल से चर्चा की।

जल प्रबंधन और वितरण नेटवर्क सुदृढ़ीकरण पर इज़राइल के प्रतिनिधि मंडल ने अनुभव किये साझा- इजरायल प्रतिनिधि मंडल ने बेहतर जल प्रबंधन और वितरण नेटवर्क सुदृढ़ीकरण पर अपने अनुभव को साझा किया। जल संसाधन प्रबंधन के लिये कृत्रिम और प्राकृतिक सोर्स का चिन्हांकन किया जाना महत्वपूर्ण है। कृत्रिम स्तंभों में अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग शामिल है। प्राकृतिक स्तंभों में वर्षा जल संग्रहण, भूजल पुनर्भरण, झील व भूजल निगरानी, और बाढ़ जल संग्रहण शामिल हैं। प्रभावी प्रबंधन के लिए संरक्षण और पुनःप्राप्ति सुनिश्चित कर जल संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। इजराइल प्रतिनिधि मंडल में वॉटर अटैशे श्रीमती नोआ अमसालेम, वरिष्ठ जल संसाधन विशेषज्ञ श्री नीरज गहलावत शामिल थे।

भारत में इज़राइल वॉटर अटैशे दोनों देशों के बीच जल संसाधन प्रबंधन, तकनीकी सहयोग और अनुसंधान में साझेदारी को मजबूत करने का कार्य करते हैं। जल संरक्षण, पुनर्चक्रण और कुशल सिंचाई तकनीकों जैसे क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, जल सुरक्षा, जल प्रदूषण नियंत्रण और नीति निर्माण में सहयोग प्रदान करते हैं। वॉटर अटैशे शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के बीच संयुक्त परियोजनाओं को प्रोत्साहित करते हैं और जल संकट से निपटने के लिए दीर्घकालिक समाधान विकसित करने में मदद करते हैं।

आगामी 2 वर्ष में रीवा शहर में 15 हज़ार नल कनेक्शन, 450 किमी वितरण नेटवर्क होगा तैयार- नगर निगम रीवा में तकनीकी सलाहकार यूएडीडी श्री सतीश कुमार राव ने रीवा में अब तक किये गये कार्य, प्रस्तावित योजना की जानकारी दी। रीवा शहर में वर्तमान में 550 किमी वितरण नेटवर्क से 45 हजार परिवारों को नल कनेक्शन दिये गये हैं। 23 मिलियन किली की भंडारण क्षमता है। 58 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट किया जा रहा है। अमृत 2.0 परियोजना में 2026 तक 37 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट 18.7 मिलियन किली भंडारण क्षमता 450 किमी वितरण नेटवर्क और 15 हज़ार नये जल कनेक्शन दिया जाना प्रस्तावित है। साथ ही पुरानी नेटवर्क प्रणाली को रिपेयर करना कार्ययोजना का प्रमुख अंग है। रीवा में 24×7 वॉटर सप्लाई सुनिश्चित करने के लक्ष्य पर योजना का निर्माण किया जा रहा है, इसके लिये जल के ज़िम्मेदारी पूर्ण उपयोग के लिये जन-जागरूकता अभियान को भी प्रस्ताव में शामिल किया जायेगा।

स्वास्थ्य मानकों में सुधार के लिए सशक्त स्वास्थ्य सेवाओं के साथ जन-जागरूकता जरूरी: शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश के हर नागरिक तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। स्वास्थ्य जागरूकता, समय पर निदान और रोकथाम के उपायों को सफलतापूर्वक लागू कर, हम प्रदेश को स्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनायेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर डिलीवरी और स्वास्थ्य मानकों में सुधार के लिए जनता को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने, स्वास्थ्य देखभाल के उचित तरीकों और आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने चार इमली स्थित निवास कार्यालय पर स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने और प्रदेश में स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के लिए जागरूकता गतिविधियों की समीक्षा की।

स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिये महत्वपूर्ण है समय पर चिन्हांकन- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता के लिए सही समय पर चिन्हांकन आवश्यक है। जिससे उनका सही समय पर समाधान भी सुनिश्चित किया जा सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रोकथाम आधारित स्वास्थ्य देखभाल (प्रिवेंटिव हेल्थ केयर मेजर्स) स्वास्थ्य सेवाओं के प्रदाय जितना ही महत्वपूर्ण है। इससे प्रदेश में शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) और मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) सहित विभिन्न स्वास्थ्य मानकों में सुधार लाया जा सकता है।

स्वास्थ्य अभियानों में जन-सहभागिता को करें प्रोत्साहित- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने जनता को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए जन-जागरूकता अभियानों को और प्रभावशाली बनाया जाए। आम नागरिकों को स्वास्थ्य प्रबंधन, सही खानपान, नियमित स्वास्थ्य जांच और स्वास्थ्य देखभाल के सही तरीकों के प्रति शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि क्या करें और क्या न करें की स्पष्ट जानकारी लोगों तक पहुंचाई जाए, जिससे बीमारियों की रोकथाम सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने जनसहभागिता को प्रोत्साहित करने पर बल दिया, जिससे स्वास्थ्य अभियानों को सफलतापूर्वक लागू किया जा सके।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिये हैं कि एक सप्ताह के भीतर जागरूकता गतिविधियों की विस्तृत कार्ययोजना तैयार की जाए। जिसमें स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों, समय पर निदान और स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावी डिलीवरी को शामिल किया जाए। बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल को प्रदेश में चल रही स्वास्थ्य जागरूकता गतिविधियों और आगामी योजनाओं की जानकारी दी गयी। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की प्रबंध संचालक डॉ. सलोनी सिडाना, आईईसी निदेशक डॉ. रचना दुबे और उप निदेशक (आईईसी) डॉ. अर्चना पुंधीर उपस्थित रहीं।

एम पी में नेताओं ने मंडल अध्यक्ष बनने बताई कम उम्र

बीजेपी को निरस्त करने पड़े 18 मंडलों के चुनाव; प्रदेश भर से 100 शिकायतें पहुंचीं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बीजेपी के संगठन चुनाव चल रहे हैं। 1 से 15 दिसंबर तक 1300 मंडलों में अध्यक्ष और जिला प्रतिनिधि चुने जाने थे। बीजेपी के संगठनात्मक रूप से मध्यप्रदेश में 60 जिले हैं, इनमें मंडल अध्यक्षों के चुनाव को लेकर चुनाव समिति के पास करीब 100 शिकायतें पहुंची हैं। अपीलीय समिति ने इन शिकायतों की छानबीन कर ली है। सोमवार को शिकायतों पर फैसला हो सकता है।

शिकायतों के मुताबिक, डेढ़ दर्जन ऐसे मंडल हैं, जहां पर अध्यक्ष बनने के लिए पदाधिकारियों ने खुद की उम्र घटाकर बताई है। इसके बाद 18 मंडलों के आधिकारिक तौर पर चुनाव ही निरस्त कर दिए गए हैं। इनमें सबसे ज्यादा सिवनी से हैं।

मंडल अध्यक्ष के लिए ये क्राइटेरिया तय थे- बीजेपी ने मंडल अध्यक्षों के लिए 45 साल से कम उम्र का क्राइटेरिया तय किया था। इसके अलावा ऐसे कार्यकर्ताओं को मंडल अध्यक्ष नहीं बनाने के निर्देश थे, जिनका आपराधिक रिकॉर्ड है। जिन्होंने पार्टी के खिलाफ काम किया है या जिन कार्यकर्ताओं ने पार्टी नेतृत्व के खिलाफ बयानबाजी की है।

भोपाल की ट्रेनों में सक्रिय हुए दिल्ली जैसे झापटमार

वर्ल्ड क्लास स्टेशन पर चलती ट्रेन में खींच रहे बैग, प्लेटफॉर्म पर मोबाइल भी हाथ से छीनकर भाग जा रहे

भोपाल (नप्र)। भोपाल और आसपास के इलाकों में चलती ट्रेनों से यात्रियों के सामान की झपटमारी की घटनाएं बढ़ रही है। ये झपटमार ट्रेन की गति धीमी होने पर दरवाजे पर रखा सामान और यात्रियों के हाथ का मोबाइल भी उड़ा लेते हैं। इस तरह की घटनाएं दिल्ली में अक्सर होती रहती हैं।

सप्ताह भर में ऐसे 4 मामले भोपाल और रानी कमला पति स्टेशन के सामने आए हैं। जिसमें आरोपियों ने रेल यात्रियों से झपटमारी कर लूट की। दूसरी तरफ जीआरपी के अनुसार इस तरह के मामलों में लगातार कार्रवाई जारी है, इसमें पूर्व में हुई कार्रवाई में अधिकांश नाबालिग की पकड़े गए हैं।

भोपाल के आसपास इन इलाकों में सक्रिय हैं यह लुटेरे- जीआरपी अधिकारियों के अनुसार भोपाल के आसपास के आउटर पर इस तरह की घटनाएं अधिक होती हैं, जिसमें छोला, भोपाल-आरकेएमपी के बीच यह लुटेरे सक्रिय हैं। इसमें अधिकतर छोला इलाके से गुजरने वाली ट्रेनों को निशाना बनाते हैं, वहीं स्टेशन की बात करें तो बजरिया और आसपास के इलाके के बदमाश यहां पर इस तरह की घटनाओं को अंजाम देते हैं।

मोबाइल पर हाथ मारकर गिराते हैं, फिर लेकर भाग जाते- जीआरपी अधिकारियों के अनुसार लगातार इस तरह के नाबालिग इस घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, आम तौर पर चलती गाड़ी में उन लोगों को शिकार बनाते हैं जो गेट पर मोबाइल लेकर बैठे हों, यह लोग मोबाइल छीनने की बजाय उस पर हाथ मारते हैं, जिससे की मोबाइल गिर जाए, उसके बाद यह उठाकर भाग जाते हैं।

केस 1- भोपाल की रहने वाली मधवी सनान्से 14 दिसंबर को ट्रेन नंबर 22170 हमसफ़र एक्स के कोच नं. बी/14 पर कोलकाता से रानी कमलापति की यात्रा कर रही थी। वह जब रानी कमलापति पर उतरने के लिए सामान लेकर गेट पर खड़ी हो गई। गति कम हुई तो एक लड़का अचानक से गेट पर लटक कर आया। उसने ट्रॉली बैग और उस पर रखा हैंड पर्स ट्रेन से गिरा गिरा दिया। इसके बाद वह भी ट्रेन से कूद गया। बैग में अंदर 12 न्यू ड्रेस, हैंड बैग में आधार कार्ड, एटीएम कार्ड था। जिनकी कुल कीमत करीब 50 हजार थी। मधवी ने पुलिस को बताया कि झपटमार की उम्र करीब 20-22 वर्ष होगी।

केस 2- सिंगरौली की रहने वाली ज्योति ने पुलिस को बताया कि वह एग्जाम देने भोपाल आई थी। वापसी में 18 दिसंबर 22165 ऊर्जाधानी-भोपाल-सिंगरौली एक्सप्रेस कोच स-6 बैठी थी। फोन पर बात कर रही थी कि एक अज्ञात बदमाश हाथ से फोन छीनकर भाग गया। मैने उसका पीछा किया, मगर वह फरार हो गया। मेरे मोबाइल की कीमत 15000 रुपए थी।

केस 3- सीहोर निवासी राजीव ठाकुर 9 दिसंबर को रानी कमलापति से छतरपुर के लिए 19483 अहमदाबाद-बरौनी एक्सप्रेस के पीछे के जनरल कोच में गेट पर खड़े थे। मोबाइल उनके हाथ में था। रेलवे स्टेशन रानी कमलापति से ट्रेन छूटने के करीबन 10 मिनट के बाद एक व्यक्ति हाथ में झपटामार कर मोबाइल छीन कर भाग गया। ट्रेन चल रही थी इसलिए में ट्रेन से कूद नहीं सका। मोबाइल की कीमत 8,500 थी।

स्त्रीवाद का विपक्ष पितृसत्ता है और चित्रा स्त्रीवादी कवि हैं : अनुराधा शंकर

भोपाल। 'साहित्य में स्त्रीवाद कोई आरोप या बुराई नहीं है क्योंकि इसका विपक्ष पितृसत्तात्मक व्यवस्था है, इसका विलोम पुरुषवाद नहीं समझना चाहिए। इन अर्थों में चित्रा सिंह का काव्य सृजन स्त्रीवाद के पक्ष में दृढ़ता से खड़ा हुआ है।' आब-ओ-हवा एवं स्पंदन, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'कवि और कविता' के अंतर्गत 'चित्रा सिंह' की पुस्तक 'धूप के नन्हे पाँव' पर एकाग्र कार्यक्रम में इस आशय के उद्गार साहित्यकार एवं पूर्व आईपीएस अनुराधा शंकर सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किये।

आब-ओ-हवा के संपादक भवेश दिलशाद के अनुसार 'कवि और कविता' कार्यक्रम के अंतर्गत क्रमानुसार रचनापाठ, पुस्तक चर्चा एवं कवि से बातचीत जैसे सत्र हुए। चित्रा सिंह ने कम शब्दों में अधिक बात कहती अपनी क़रीब दर्जन भर कविताओं का पाठ कर सभागार को कविता के साथ कुशलता से जोड़े रखा। इसके बाद चर्चित रंगकर्मी एवं कवि हेमंत देवलेकर ने 'धूप के नन्हे पाँव' की कविताई से जुड़े अनेक पहलुओं पर अपनी दृष्टि से चर्चा की और फिर कवि व समीक्षक द्वय सुमन सिंह एवं डॉ. रेखा पांडेय ने चित्रा सिंह के कृतित्व एवं रचनात्मक जीवन से जुड़े ? विषयों पर प्रश्नों के माध्यम से रोचक एवं सार्थक बातचीत की।

अध्यक्षीय वक्तव्य से पहले अपनी विशेष टिप्पणी में वरिष्ठ साहित्यकार मुकेश वर्मा ने कहा कि ऐसे आयोजनों में ही खुलकर और महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियां लेखक समाज कर पाता है। रंगकर्मी/कवि विवेक मृदुल ने कहा कि चित्रा सिंह उर्ध्वगामी सृजन कर रही हैं।

टिप्पणियों के क्रम में स्पंदन संस्था की प्रमुख एवं वरिष्ठ साहित्यकार उर्मिला शिरीष के संदेश का वाचन किया गया एवं विदिशा के चर्चित कवि ब्रज श्रीवास्तव ने अपने संदेश में उल्लेख किया, 'चित्रा सिंह की कविताएं पढ़ते हुए अमृता प्रीतम तो कभी गुलज़ार के रचनाकर्म जैसा अनुभव होता है और अक्सर वह हमारे आज के जटिल समय और संबंधों को भी बारीक़ी से अपने कवित्व में उकेरती हैं।' इन टिप्पणियों के बीच हेमंत देवलेकर ने विस्तृत समाचलोचकीय ढंग से अपनी बातें रखीं।

उन्होंने कहा कि चित्रा की कविताओं में प्रेम की गरिमा है, स्त्री स्वर है और इन कविताओं की भाषा में आक्रामकता प्रवेश नहीं करती है। इन कविताओं का एक और प्रमुख गुण आत्मविश्वास है। तमाम प्रतीक्षाओं, सूनेपन, एकाकीपन के बावजूद उनमें अदम्य जिजीविषा, साहस, फक्कड़पन और आनंद का अनुभव होता है। देवलेकर ने कविताओं की भाषा को जीवन्त और मार्मिक बताते हुए यह भी उल्लेख विशेष रूप से किया कि ये कविताएं अपने स्वरूप में शब्दों के अपव्यय की विरोधी हैं।

चित्रा सिंह की कविताओं की भाषा और शब्दावली को लेकर सुमन सिंह ने उल्लेख किया कि ये कविताएं भारी भरकम शब्दों से मुक्त और हृदय की भाषा की समर्थक हैं। इनमें प्रतीकात्मकता का सूक्ष्म खेल है तो आकार में छोटी लेकिन प्रभाव में ये कविताएं गहरी हैं। सुमन एवं रेखा पांडेय के प्रश्नों व जिज्ञासाओं पर चित्रा सिंह ने अपनी कविताओं की ही भांति संक्षेप में कुछ सार्थक टिप्पणी करते हुए श्रोताओं को अपने चिंतन एवं विचारणा से अभिभूत किया।

'शुभकामनाओं के फूल' को मिली दाद- मुझे संवेदनशीलता माँ से मिली। प्रेम भी। इस अवस्था में भी माँ की नज़रों में पिता की छवि वही दशकों पुराने मेरे उन पिता की है, जो उनके प्रेमी रहे। माँ से प्रगतिशीलता और मुखरता के गुण भी मुझे मिले। ऐसे अनेक कारणों से मेरी कविताओं के मन के केंद्र में उनका प्रमुख स्थान है।' अपनी कुछ कविताओं के संदर्भ में चित्रा सिंह ने अपनी नानी को भी आधुनिक सोच वाली महिला बताते हुए कहा कि उनकी प्रगतिशील समझ उनके जीवन के मूल में ही रची बसी रही। इसी तरह, अपने पिता प्रसिद्ध लेखक/कवि विजय बहादुर सिंह के बारे में चित्रा ने कहा कि उनका प्रभाव आनुवांशिक ही रहा क्योंकि होश संभालने की उम्र में पिता के सान्निध्य से वह अपेक्षित रूप से वंचित रहीं।

अध्यक्षीय वक्तव्य में अनुराधा शंकर ने अपने पितामह बाबा नागार्जुन के समय से चित्रा सिंह के परिवार के बीच आत्मीय संबंधों की स्मृतियों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा 'जिन्हें बचपन से देखा, वह चित्रा सिंह एक स्थापित कवि के रूप में अपनी पहचान बना रही हैं, हमें और पूरे साहित्य समाज को उन पर गर्व है। आभार प्रदर्शन मनस्वी अपर्णा ने व कार्यक्रम संचालन भवेश दिलशाद ने किया। उन्होंने कहा कि 'आब-ओ-हवा' भविष्य में भी इस प्रकार का सिलसिला बनाये रखने के लिए संकल्पित है। इस आयोजन में सर्वश्री इक़बाल मसूद, डॉ. किशन तिवारी, शमीम ज़ेहरा, मौसमी परिहार, पीयूष बबेले, जयजीत अकलेचा आदिमौजूद रहे।

संपादकीय

अब आलू पर रार!

पश्चिम बंगाल सरकार के ताजा फैसले से आलू को लेकर पड़ोसी राज्यों में ठन गई है। इस फैसले से न केवल पश्चिम बंगाल से निर्यात किए जाने वाले आलू की कीमतें बढ़ गई हैं, बल्कि राज्य में भंडारित आलू के खराब होने की आशंका भी बढ़ गई है। राज्य के कोल्ड स्टोरेज में वर्तमान में करीब साढ़े 3 लाख टन आलू रखा हुआ है। पश्चिम बंगाल देश में यूपी के बाद दूसरा सबसे बड़ा आलू उत्पादक राज्य है। यहीं से झारखंड और ओडिशा व समूचे पूर्वोत्तर राज्यों को आलू भेजा जाता है। इस बीच पश्चिम बंगाल सरकार ने राज्य से बाहर आलू भेजने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस सम्बन्ध में राज्य के कृषि मंत्री बेचाराम मन्ना का कहना है कि आलू की आपूर्ति राज्य के बाहर तब तक नहीं की जाएगी, जब तक राज्य में आलू की क़ीमतें स्थिर नहीं हो जातीं। यानी सरकार की मंशा राज्य में आलू के भाव नहीं बढ़ने देने की है। इससे उपभोक्ताओं को भले तात्कालिक लाभ हो जाए, लेकिन आलू व्यापारियों के चेहरे पर चिंता बढ़ गई है। इसका कारण यह है कि राज्य में जितना आलू उत्पादन होता है, उस तुलना में उतनी खपत है नहीं। पश्चिम बंगाल कोल्ड स्टोरेज संघ के प्रवक्ता सुभाषजीत साहा के अनुसार अगर गोदामों से आलू नहीं निकाला गया, तो वो ख़राब हो सकता हैं और इससे व्यापारियों और किसानों को करोड़ों का नुक़सान होगा। राज्य में कुल 475 कोल्ड स्टोरेज हैं। इनमें भी ज़्यादातर कोल्ड स्टोरेज पश्चिम मिदनापुर और बांकुड़ा में हैं। दूसरी परेशानी यह है कि राज्य में अन्य प्रदेशों से भी आलू की आवक होने लगी है। ऐसे में राज्य में उत्पादित आलू बाजार तक नहीं पहुंचा तो दोहरा नुकसान होगा। इसे देखते हुए आलू व्यापारियों ने हड़ताल की चेतावनी दे दी थी, जिसे सरकार के आश्वासन के बाद फिलहाल वापस ले लिया गया है। दरअसल पश्चिम बंगाल की ममता बैनर्जी सरकार आलू की आड़ में राजनीति भी कर रही है। राज्य के कृषि मंत्री बेचाराम मन्ना ने केंद्र सरकार पर आरोप लगाया कि वो राज्य में रोक के बावजूद बांग्लादेश को आलू का निर्यात कर रही थी। ऐसा कुछ व्यापारियों के साथ मिलकर किया जा रहा था। इसके बाद राज्य सरकार ने बांगलादेश जा रहे आलू के ट्रक रोक दिए। इससे व्यापारियों को भारी नुकसान हुआ। इस बीच दाना तूफान के कारण भी आलू के भाव राज्य में बढ़ गए। जैसे ही स्थिति सामान्य होगी, आलू निर्यात पर रोक पर पुनर्विचार किया जाएगा। हालांकि बाजार में आलू की कीमत 40 रू. प्रति किलो तक पहुंच गई है। भाव बढ़ने के कारण प.बंगाल से आलू की तस्करी भी होने लगी है। जिससे पड़ोसी राज्यों झारखंड और ओडिशा में आलू को लेकर लोगों की परेशानी बढ़ गई है। पिछले अगस्त में भी ऐसी ही स्थिति बनी थी, जिसके परिणामस्वरूप ओडिशा विधानसभा में भारी हंगामा हुआ था। इस पर वहां की सरकार ने राज्य में यूपी से आलू मंगवाने की बात कही थी। गौरतलब है कि दुनिया में भारत दूसरा सबसे बड़ा आलू उत्पादक देश है। जबकि पश्चिम बंगाल ने यूपी के बाद सबसे ज्यादा आलू होता है। कुल उत्पादन का करीब सात प्रतिशत आलू मध्यप्रदेश में भी होता है। अन्य राज्य प्रमुख आलू उत्पादक प्रदेशों से ही आलू मंगवाते हैं। आलू आज के जमाने में सब्जी का एक जरूरी घटक है। आलू पूरे देश में चाव से खाया जाता है। यह गरीबों की सब्जी भी है। केवल राजनीतिक स्वार्थों के चलते आलू निर्यात पर रोक लगाना सही फैसला नहीं है। ममता सरकार को यह फैसला तुरंत वापस लेना चाहिए।

पेरिस समझौते से अमेरिका के बाहर निकलने का अर्थ

नजरिया

वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली

लेखक पत्रकार हैं।

दिसम्बर 2015 में 'पेरिस जलवायु समझौता' 'ग्रीनहाऊस गैसों' का उत्सर्जन कम करने और जलवायु परिवर्तन के कुप्रभावों को घटाने के लिए दुनिया के 196 देशों के बीच हुआ था। इसका उद्देश्य 2030 तक पृथ्वी के तापक्रम को 2 डिग्री सेंटीग्रेड कम करने का है। बजाए बाध्यकारी वैधानिकता के, इस समझौते के अनुपालन की अपेक्षायें नैतिकता आधारित हैं। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसी समझौते के संदर्भ में अपने पहले कार्यकाल में 4 अगस्त 2017 को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (यूएनओ) को यह आधिकारिक सूचना दी थी कि उन्होंने अमेरिका को 'पेरिस जलवायु समझौते' से मुक्त कर लिया है। इसके पहले उन्होंने एक जून 2017 को सार्वजनिक बयान भी दिया था कि अमेरिकी नौकरियों तथा उसके खनिज, तेल, कोयला उद्योगों के खरबों डालर के नुकसान से बचने के लिए वे अमेरिका को 'पेरिस जलवायु समझौते' से बाहर निकालने का निर्णय कर रहे हैं।

बदली परिस्थितियों में अमेरिका आज इतना अलग-थलग पड गया है कि जुलाई में जी-20 सम्मेलन में राष्ट्रपति ट्रंप के हैम्बर्ग पहुंचने पर राजनैतिक विश्लेषकों ने आयोजन को '19 बनाम एक' कह दिया था। 'यूएनओ' के कार्यकारी निदेशक एरिक सोलेहेम का मानना था कि वाशिंगटन अपने को 'पेरिस जलवायु समझौते' से बाहर खींच रहा है, अमेरिका नहीं। अमेरिका में ही कई राज्य, शहरी निकाय, बड़ी-बड़ी कम्पनियां व बहुसंख्यक नागरिक अपने पावों पर कुल्हाड़ी मारने को तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि वे कार्बन उत्सर्जन को कम-से-कम करने की अपनी-अपनी तय रणनीतियों पर चलते रहेंगे। यही नहीं, वे उन तकनीकों को भी विकसित करते रहेंगे जिनसे विभिन्न क्षेत्रों में 'ग्रीनहाऊस गैसों' का उत्सर्जन कम किया जा सके।

आज विश्व बिरादरी की सहमति इसी पर बनती लग रही है कि अमेरिका को धिक्कारने तथा उसके कदम पर हताशा व्यक्त करने से बेहतर है कि उसके सापेक्ष बड़ी - बड़ी लकीरें खींची जायें। पूर्ववर्ती राष्ट्रपति ओबोमा ने राष्ट्रपति ट्रंप के इस आत्मघाती कदम के संदर्भ में कहा है कि अमेरिका साथ रहे, न रहे अन्य देश 'पेरिस समझौते' पर आगे बढ़ते रहेंगे। जनवरी 2025 (ट्रंप की ताजपोशी) के बाद भी यही होने वाला है।

अमेरिका नेतृत्वकारी भूमिका से चूकेगा तो यूरोपीय संघ और चीन 'पेरिस समझौते' के अगले नेता होंगे। यह समय की जरूरत भी है। कारण इनका 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) है। चीन बड़ी लकीर खींचने में लगा है। वह विश्व का दूसरे नम्बर का कार्बन उत्सर्जक है। साथ ही उसकी दूसरे नम्बर की 'जीडीपी' कुल विश्व की 23 प्रतिशत है। भारत से तीन गुणा से भी ज्यादा। आज वह अपने कोयले आधारित संयंत्रों को बंद करने में नहीं हिचकिचा रहा। वैकल्पिक ऊर्जा टैक्नॉलॉजी में अग्रणी शोध कर रहा है। सौर-ऊर्जा तकनीकों के विकास में वह अग्रणी है।

बड़ी लकीर खींचने की जिम्मेदारी भारत पर भी है। ट्रंप का कहना था कि 'पेरिस समझौता' भारत, चीन, ब्राजील पर विशेष नरम है व अरबों-खरबों डालर पाने

के लालच में भारत ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। भारत पर आरोप लगाते हुए राष्ट्रपति ट्रंप यह भूल रहे थे कि विश्व में पर्यावरण चेतना पैदा करने में प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गांधी का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने लगातार वैश्विक पर्यावरण के मुद्दे को इतना जीवित रखा कि वह अन्तरराष्ट्रीय राजनैतिक विमर्शों का हिस्सा बनता गया।

1972 में मानवीय पर्यावरण पर 'यूएनओ' द्वारा प्रायोजित पहले सम्मेलन में स्टॉकहोम में इंदिरा जी के भाषण ने ही भविष्य के जलवायु बदलाव की चिंता और कार्यवाहियों पर बहस, समर्थन या विरोध के लिए नींव तैयार की थी। इस सम्मेलन में मेजबान देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री ओलिफ पाल्मे के अलावा वे वहां उपस्थित किसी भी सरकार की अकेली मुखिया थीं। इस सम्मेलन में पहली बार विश्व नेताओं ने पृथ्वी के भविष्य और पर्यावरणीय सुरक्षा पर - 'केवल एक पृथ्वी ही है' - का उद्घोष कर प्रदूषण पर गंभीर चिन्ता जताई थी।

राष्ट्रपति ट्रंप अवश्य ही जीवाश्म ईंधनों, मुख्यतः कोयले के उपयोग को प्रोत्साहित करने की अपनी नीति पर कायम रहेंगे। हालांकि विश्व को पहले की ही तरह वे यह भरोसा भी दिलायेंगे कि वे उसे साफ कर ऐसे उपयोग करेंगे, ताकि कार्बन उत्सर्जन कम-से-कम हो। जीवाश्म ईंधन का भी उपयोग यदि परिष्कृत कर हो रहा हो साथ ही अच्छी दक्षता वाले वाहनों मशीनों, पम्पों, आदि भी काम में लाये जा रहे हों, तो वह भी कार्बन उत्सर्जन की मात्रा अपेक्षकृत कम कर देगा।

पाश्चात्य देशों पर भारत की निर्भरता और खीज का एक कारण शायद यह भी है कि हमारी तरह कई विकासशील देशों ने विकास के वही मॉडल अपनाये हैं जो अमेरिका जैसे देशों के थे। इन मॉडलों के पर्यावरणीय कुप्रभावों से निपटने के लिए हल भी उन्हीं देशों की टैक्नॉलॉजी में देखने की बाध्यता हमने मान ली है, जबकि तथ्य यह है कि पाश्चात्य देश भी परोक्ष रूप से यह स्वीकार रहे हैं कि उनके विकास के तरीकों से पर्यावरण व जलवायु का संकट बढ़ा है। यदि ऐसा न होता तो वे क्यों कहते कि भारत, चीन, ब्राजील जैसी तेजी से बढ़ने वाली अर्थ व्यवस्थाओं के कारण पर्यावरण व जलवायु संकट और गहरा सकते हैं।

हमने अपने देश में भी मानसिकता यही अपना ली है कि विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है। वह दोहन भी इस सीमा तक कि प्रकृति उसकी भरपाई ही न कर सके। जंगलों, जैव-विविधता का दोहन इस कदर कि पेड़ों का पुनः उगना, जंगलों में वृक्षाच्छादन का घनत्व और गुणवत्ता बनाये रखना तथा जैव-विविधता को समूल नष्ट होने से बचाये रखना निरंतर कठिन होता जा रहा है। खेदजनक है कि अपने प्रयासों से जो जंगल हमने बढ़ाये, उनमें भी पर्यावरणीय योगदान से ज्यादा व्यवसायिक लाभ का उददेश्य था। उत्तराखंड में तो चीड़ अभिशाप बन गया है। खेती में रसायनों व अत्यधिक जल का प्रयोग भी जलवायु संकट के अभिशापों को नजदीक लाया है।

भूजल का अब हम उपयोग ही नहीं कर रहे, वैज्ञानिकों की भाषा में खनन या माइनिंग कर रहे हैं। हिमनदियों के पास तक मानवीय गतिविधियां बढ़ाकर हम इन पर संकट ले आये हैं। इन सब से जलवायु संकट बढ़ेगा ही। आज बंजर क्षेत्र व मरूस्थल बढ़ रहे हैं, जबकि जंगल बढ़ाने की आवश्यकता है। 'पेरिस समझौते' के अंतर्गत भारत ने कहा था कि वह अपना वनाच्छादन इतना बढ़ायेगा कि 2.5 से 3 अरब टन के बराबर अतिरिक्त कार्बन डाई-ऑक्साइड सोख सके।

निस्संदेह भारत व अन्य देश अमेरिका के बिना भी 'पेरिस समझौते' पर आगे बढ़ेंगे, किन्तु अमेरिकी राष्ट्पति को यह तो एहसास कराया ही जाना चाहिए कि पृथ्वी के वायुमण्डल, सागरों तथा उसके समग्र स्वास्थ्य से विश्वजन का साझा भविष्य जुड़ा है। कतिपई देशों, द्वीपों व तटों का महासागरों में समाने का खतरा यथार्थ है। ऐसी चिन्ताओं के बीच अमेरिका को विश्व का सबसे ज्यादा कार्बन उत्सर्जक बने रहकर अन्य देशों में जलवायु उथल-पुथल दंश बढ़ाने का हक नहीं है।

'पेरिस समझौते' से अमेरिका के बाहर निकलने का अर्थ केवल यही नहीं होगा कि अन्य देशों को पृथ्वी का तापमान कम करने के लिए जो धन उपलब्ध होना था, वह अब नहीं होगा, बल्कि यह एक ऐसे देश का 'पेरिस सझौते' से बाहर हो जाना भी है, जिसकी 'जीडीपी' विश्व की 'जीडीपी' में 24 प्रतिशत है, जो विश्व में सबसे ज्यादा कार्बन उत्सर्जन करता है। ट्रंप ने बहस ही पलटने का उपक्रम किया है। जो मुददा 1970 के दशक में पर्यावरण और गरीबी से शुरू हुआ था उसे पर्यावरण और अमीरी का बना दिया है। 'अमेरिका फर्स्ट' को महत्ता दी है, किन्तु 'अर्थ फर्स्ट' को महत्ता नहीं दी है। (सप्रेस)

शरणार्थी बच्चों की शिक्षा पर लापरवाही

मुद्दा

अमित बैजनाथ गर्ग

लेखक पत्रकार हैं।

इंटरनेशनल रेस्क्यू कमेटी की ओर से हाल ही में जारी एक रपट कहती है कि फरवरी, 2022 से यूक्रेन और रूस में युद्ध शुरू होने के बाद से यूक्रेन के लगभग दो-तिहाई बच्चों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा है। एक अनुमान के अनुसार, यूक्रेन में चार मिलियन बच्चों को मानवीय सहायता की आवश्यकता है और 1,300 से अधिक स्कूल नष्ट हो गए हैं। इसी तरह के हालात रूस के कुछ क्षेत्रों में भी दिखाई देते हैं, जो इस बात की तस्दीक करते हैं कि युद्ध के बाद दोनों देशों में बचपन संकटग्रस्त है। एक अनुमान के अनुसार, संकटों से प्रभावित दुनिया में करीब 224 मिलियन बच्चों को शैक्षिक सहायता की आवश्यकता है, जिनमें 72 मिलियन से अधिक ऐसे बच्चे शामिल हैं, जो स्कूल नहीं जा सकते। जो लोग सीखना जारी रख सकते हैं, उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

इसी तरह साल 2023 में जारी किए गए एक वैश्विक अध्ययन में पाया गया है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता वाले संकटग्रस्त बच्चों की संख्या बढ़ रही है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि समस्या केवल पहुंच की नहीं है, बल्कि गुणवत्ता की भी है। संकटग्रस्त आधे से अधिक बच्चे शिक्षा में न्यूनतम दक्षता भी हासिल नहीं कर पा रहे हैं। इस अध्ययन में सभी के लिए समावेशी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात कही गई है। अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि संकटों में बेहतर सीखने के परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महत्वपूर्ण ह। वहीं सामूहिक कार्रवाई के लिए वैश्विक भलाई के रूप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की तत्काल आवश्यकता वाले संकटग्रस्त बच्चों पर डाटा अंतराल को भरने की जरूरत है। हालांकि इस दिशा में प्रयास उतने नहीं हो पा रहे हैं, जितने कि होने चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी (यूएनएचसीआर) की ओर से जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि स्कूल जाने योग्य 7.1 मिलियन शरणार्थी बच्चों में से 3.7 मिलियन (आधे से अधिक) बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। स्टेपिंग अपः रिफ्यूजी एजुकेशन इन क्राइसिस नामक रिपोर्ट से पता चलता है कि जैसे-जैसे शरणार्थी बच्चे बड़े होते हैं, उन्हें शिक्षा तक पहुंचने से रोकने वाली बाधाओं को दूर करना कठिन होता जाता है। केवल 63 प्रतिशत शरणार्थी बच्चे प्राथमिक विद्यालय जाते हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर यह 91 प्रतिशत है। दुनिया भर में 84 प्रतिशत किशोरों को माध्यमिक शिक्षा मिलती है, जबकि केवल 24 प्रतिशत शरणार्थियों को ही यह अवसर मिलता है। यूएनएचसीआर का कहना है कि स्कूल वह जगह है, जहां शरणार्थियों को दूसरा मौका मिलता है। शरणार्थियों को उनके भविष्य में निवेश करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान विकसित करने का अवसर न देकर उन्हें विफल किया जा रहा है, जो कि नहीं होना चाहिए।

रिपोर्ट कहती है कि शरणार्थियों को अनौपचारिक समानांतर स्कूलों में जाने के बजाय राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए और उन्हें प्री-प्राइमरी, प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूल के माध्यम से औपचारिक, मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम का पालन करने की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे उन्हें मान्यता प्राप्त योग्यताएं मिलेंगी, जो विश्वविद्यालय या उच्च व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए उनके लिए स्प्रिंगबोर्ड हो सकती हैं। भले ही शरणार्थी किशोर बाधाओं को पार करके माध्यमिक विद्यालय तक पहुंच जाते हैं, लेकिन केवल तीन प्रतिशत ही इतने भाग्यशाली होते हैं कि उन्हें किसी प्रकार की उच्च शिक्षा मिल पाती है। यह वैश्विक आंकड़ा 37 प्रतिशत के मुकाबले बहुत कम है। दुनिया भर के शरणार्थी बच्चों की शिक्षा का मुद्दा बहुत जरूरी है। 2018 के अंत तक दुनिया भर में 25.9 मिलियन से ज्यादा शरणार्थी थे, जिनमें से 20.4 मिलियन यूएनएचसीआर के अधीन थे। उनमें से लगभग आधे 18 साल से कम उम्र के थे और लाखों लोग लंबे समय से मुश्किल हालात में जी रहे थे। इनके घर लौटने की उम्मीद भी कम थी।

वहीं संयुक्त राष्ट्र की एक नई रिपोर्ट में चौंका देने वाले आंकड़े दर्शाते हैं कि संकट प्रभावित स्कूली उम्र के ऐसे बच्चों की संख्या बढ़ रही है, जिन्हें शैक्षणिक समर्थन की आवश्यकता है। इस रिपोर्ट के अनुसार, जरूरतमंद बच्चों की संख्या वर्ष 2016 में साढ़े सात करोड़ से बढ़कर अब 22 करोड़ 20 लाख तक पहुंच गई है। रिपोर्ट कहती है कि आपात हालात और लंबे समय से चले आ रहे संकट प्रभावित इलाकों में शिक्षा के लिए इन 22 करोड़ से अधिक लड़के-लड़कियों में सात करोड़ 82 लाख बच्चे स्कूल से बाहर हैं। लगभग 12 करोड़ बच्चे स्कूल में उपस्थिति के बावजूद गणित या पढ़ने में न्यूनतम कौशल हासिल नहीं कर पा रहे हैं। संकटों के असर से जूझ रहे हर 10 में से केवल एक बच्चा ही प्राथमिक या माध्यमिक स्तर पर वास्तविकता में निपुणता मानकों पर खरा उतर पा रहा है। संकट प्रभावित इलाकों में हिंसक टकराव, विस्थापन और जलवायु व्यवधान भविष्य के लिए उनके सपनों को छीनने का काम कर रहे हैं।

रिपोर्ट के विश्लेषण के अनुसार, स्कूल से वंचित होने वाले 84 प्रतिशत बच्चे लंबे समय से जारी संकटों से प्रभावित इलाकों में रह रहे हैं। इनमें अफगानिस्तान, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, इथियोपिया, माली, नाइजीरिया, पाकिस्तान, सोमालिया, दक्षिण सूडान, सूडान और यमन समेत अन्य देश हैं। यूएन का कहना है कि जरूरतें कभी भी इतनी विशाल और इतनी तात्कालिक नहीं रही हैं। कोविड के कारण निर्धनतम परिवारों में शिक्षा का नुकसान अधिक हुआ है। साथ ही वे समुदाय भी प्रभावित हुए हैं, जो पहले से ही शिक्षा में पिछड़ रहे थे। इन दोनों श्रेणियों में आम तौर पर संकट प्रभावित इलाकों में रहने वाले बच्चे आते हैं। यूएन का कहना है कि संकट प्रभावित बच्चों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा हर हाल में करनी ही होगी। इनमें न्यायोचित, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार शामिल है। हम सभी को शिक्षा को हर स्थान पर हर बच्चे की पहुंच में रखने के प्रयास करने होंगे।

एजुकेशन कैन नॉट वेट (ईसीडब्ल्यू) की रिपोर्ट कहती है कि संकटग्रस्त देशों में केवल 25 मिलियन बच्चे ही स्कूल में हैं और न्यूनतम दक्षता स्तर प्राप्त कर रहे हैं। इन देशों में जबरन विस्थापित आबादी में स्कूल न जाने वाले बच्चों की दर चिंताजनक रूप से उच्च बनी हुई है, जो स्कूली आयु वर्ग के बच्चों के लिए लगभग 58 प्रतिशत है। लगभग 14.5 मिलियन बच्चों को कार्यात्मक कठिनाइयां हैं और वे स्कूल नहीं जा रहे हैं। इनमें से लगभग 11 मिलियन उच्च-तीव्रता वाले संकटों में केंद्रित हैं। इन क्षेत्रों में माध्यमिक शिक्षा तक पहुंच अपर्याप्त है, निम्न माध्यमिक विद्यालय आयु वर्ग के लगभग एक तिहाई बच्चे स्कूल से बाहर हैं। उच्च माध्यमिक विद्यालय आयु वर्ग के लगभग आधे बच्चे शिक्षा तक पहुंच पाने में असमर्थ हैं।

एक अनुमान के अनुसार, तीन वर्ष की आयु से लेकर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा पूरी करने की अपेक्षित अवधि के अंत तक कम से कम 25 मिलियन संकटग्रस्त बच्चे अंतर-एजेंसी योजनाओं और अपीलों से बाहर रह गए हैं, जो कि कुल वैश्विक संख्या का लगभग 9.4 प्रतिशत है। उप-सहारा अफ्रीका के संकटग्रस्त देशों के तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि 7 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सीखने की गति बार-बार होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित देशों की तुलना में औसतन लगभग छह गुना धीमी हो सकती है। वहीं जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न जोखिम और संकट की गंभीरता के बीच एक संबंध है। वैश्विक स्तर पर आपात स्थितियों में स्कूल न जाने वाले लगभग 83 फीसदी बच्चे और स्कूल जाने वाले लेकिन पढ़ाई से वंचित रहने वाले लगभग 75 प्रतिशत बच्चे ऐसे देशों में रहते हैं, जिनका जलवायु परिवर्तन जोखिम सूचकांक वैश्विक औसत मूल्य 6.4 से अधिक है।

असल में संकट के समय बच्चों की शिक्षा को सबसे ज्यादा प्रभावित किया जाता है। संकट के दौरान शिक्षा को सबसे पहले निलंबित किया जाता है और सबसे आखिर में बहाल किया जाता है। संकट के समय बच्चों को बेहतर बनाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। इनमें बच्चों की शिक्षा और कल्याण को बनाए रखना जरूरी है। संकट से प्रभावित बच्चों को शिक्षा सहायता देनी होगी। शिक्षा प्रणालियों को ज्यादा संसाधनों की जरूरत होती है, लेकिन उन्हें मानवीय सहायता का तीन प्रतिशत से भी कम हिस्सा मिलता है। इसे बढ़ाना होगा। शिक्षा प्रणालियों में शिक्षण और कर्मचारियों की कमी को पूरा करना होगा। डाटा अंतराल के कारण निर्णय लेने में दिक्कत होती है और समन्वय की चुनौतियां होती हैं। इन्हें दूर करना होगा। संकट के समय बच्चों को स्कूल से सुरक्षा मिलती है। साथ ही उन्हें जीवन रक्षक भोजन, पानी, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता की सुविधा भी मिलती है। इस दौरान बच्चों को मनोवैज्ञानिक सहायता भी देनी होगी। हमें इन पहलुओं पर गंभीरता से काम करना होगा। किसी भी बच्चे का बचपन संकट में आने पर उसे बाहर निकालना ही होगा, तभी बचपन बचेगा।

संसद की खरोच कथा

कटाक्ष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भारतीय लोकतंत्र की सबसे पवित्र जगह–संसद–जो कभी संविधान की ताकत और नीतियों का केंद्र हुआ करती थी, अब एक नाटकीय अखाड़ा बन चुकी है। हाल की घटना ने इस धारणा को और पुख्ता कर दिया, जब एक मामूली-सी खरोच ने राष्ट्रीय राजनीति को झकझोर दिया। अमित शाह ने अंबेडकर पर बयान दिया, संसद गरमा गई, और फिर एक महाशय सांसद को धक्का-मुक्की में खरोच आ गई। यह खरोच ऐसी थी कि न खून निकला, न प्लास्टर चढ़ा, पर भाजपा ने इसे 'भारतीय लोकतंत्र पर सबसे बड़ा हमला' घोषित कर दिया। स्वास्थ्य इतिहास में पहली बार खरोच का इलाज आई सी यू में हो रहा है।

अब आप सोच रहे होंगे कि इतनी मामूली बात पर संसद में बवाल क्यों मचा? दरअसल, भारतीय राजनीति में यह बात सिद्ध हो चुकी है कि अगर मुद्दा न हो, तो मुद्दा बनाना पड़ता है। जरा सोचिए, यह वही देश है जहां रोज़ाना लाखों लोग गड्ढों में गिरते हैं, ट्रेन से कटते हैं, और अस्पताल के गेट पर मर जाते हैं। उन्हें वक्त पर डॉक्टर भी नसीब नहीं हो पाता हैलेकिन संसद के गलियारे में एक खरोच आ जाए, तो पूरा लोकतंत्र खतरे में आ जाता है।

खरोच पर राजनीति करना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए जबरदस्त अभिनय कौशल चाहिए। भाजपा ने इस मामले में मास्टरी हासिल कर ली है। खरोच को ऐसा पेश किया गया जैसे संसद पर हमला हुआ हो। ध्यान दें, यह खरोच 'राष्ट्रवादी खरोच' थी। कोई साधारण खरोच नहीं। इसे अंबेडकर के नाम से जोड़ा गया, ताकि विवाद का पैमाना राष्ट्रीय हो जाए। लेकिन जनता तो मूर्ख है नहीं, उसे सब पता चल गया कि गृहमंत्री के अंबेडकर पर दिए गए घतिहा बयान से बचने के लिए एक सुंदर सुनियोजित नाटक किया जा रहा है।

अब भाजपा ने राहुल गांधी को जिम्मेदार ठहरा दिया। यह तो होना ही था। बारिश हो जाए तो राहुल जिम्मेदार, धूप ज्यादा हो तो राहुल जिम्मेदार, और अब खरोच आ जाए तो भी राहुल जिम्मेदार। ऐसा लगता है कि भाजपा का हर भाषण राहुल गांधी के बिना अधूरा है। यह तो तय है कि अगली बार संसद में कोई और धक्का-मुक्की होगी, तो सरकार 'खरोच जांच आयोग' बना देगी। यह आयोग जांच करेगा कि 'खरोच कितनी गहरी थी?' , 'यह खरोच कैसे लगी?', 'क्या खरोच में विदेशी साजिश का हाथ है?' संसद के अंदर अब हर सांसद को 'खरोच बीमा' दिया जाएगा। बीमा कंपनियां भी विज्ञापन देंगी, 'खरोच लगवाओ, मुआवजा पाओ!'

मीडिया ने इस मौके को 'खरोच लाइव' बनाकर टीआरपी बटोर ली। एंकर चीख-चीखकर सवाल पूछने लगे, 'क्या यह खरोच भारतीय लोकतंत्र के ताबूत में आखिरी कील है?' विशेषज्ञ बुलाए गए, जिन्होंने खरोच पर गहरी रिसर्च कर डाली। किसी ने कहा, 'खरोच का दर्द न केवल शारीरिक है, बल्कि राजनीतिक भी है।' टेलीविजन स्क्रीन पर बड़ी-बड़ी ब्रेकिंग न्यूज फ्लैश होने लगीं: 'खरोच के पीछे कौन? लोकतंत्र खतरे में!' 'राहुल गांधी ने खरोच करवाई, भाजपा का दावा!' 'संसद में खरोचः बड़ा मुद्दा या बड़ा ड्रामा?'

यह पूरी घटना हमें एक सबक देती है। जिस देश में किसान आत्महत्या कर रहे हैं, युवा रोजगार के लिए भटक रहे हैं, और गरीब अपने बच्चों का पेट भरने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहां संसद में खरोच पर बहस हो रही है। हमारे माननीय सांसदों को चाहिए कि वे जनता के असली घावों पर ध्यान दें, न कि अपने मामूली खरोच पर। अगर खरोच से इतना बड़ा विवाद हो सकता है, तो सोचिए, अगर कोई सांसद कांटे से चुभ जाएं, तो क्या होगा? क्या संसद बंद हो जाएगी?

सांसदों की यह नाजुकता भारतीय जनता की सहनशीलता का अपमान है। आम आदमी रोज गड्ढों में गिरता है, मेट्रो की भीड़ में कुचला जाता है, लेकिन घर जाकर मुस्कुराता है। और यहां सांसदों को खरोच आ जाए तो संसद रुक जाती है। खरोच पर राजनीति करने वालों के लिए सलाह है। यह देश खरोचों से नहीं, घावों से भरा पड़ा है। उन घावों पर मरहम लगाइए। जब जनता जागेगी, तो खरोच पर राजनीति करने वालों को इतिहास के कूड़ेदान में फेंक देगी। 'खरोचों के इस खेल में, संसद का भविष्य गिरवी है। यह गिरवी कब छूटेगा, यह जनता ही तय करेगी!'

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अच्छा आदमी बनने का मूल मंत्र

व्यंग्य

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अच्छे-अच्छों को यह भ्रम हो जाता है कि वह इतना अच्छा है कि उससे अच्छा कोई है ही नहीं। दरअसल आदमी जब आत्म मूल्यांकन करने पर उतारू होता है, सारे जहां की अच्छाई को अपने खाते में दर्ज कर लेता है। ऐसा नहीं करने पर अनावश्यक रूप से मन में हीन भावना पनपने लगा करती है। आजकल के जमाने में इस बात की कतई प्रतीक्षा नहीं करना चाहिए कि जमाना हमारी पीठ थपथपाएगा। वैसे भी दूसरों के भरोसे तो रहना ही नहीं चाहिए। इसलिए इस मामले में आदमी को आत्मनिर्भर होना चाहिए। और यह इसलिए भी जरूरी है कि हर किसी को अपनी अपनी पड़ी है। इसलिए आदमी को सकारात्मक रूप से अपने निज स्वरूप में ही परिणमन करना चाहिए

जमाना बहुत तेजी के साथ बदल रहा है। हर एक आदमी की व्यस्तताएं भी बहुत बढ़ गई है। आदमी जमाने में ऊंचा उठने के लिए जमाने भर की भागदौड़ करने में मशगूल हैं। ऐसे में किसी को कहां इतनी फुरसत कि दूसरों का गुणानुवाद करते रहे। अब वह जमाना नहीं रहा कि नेकी करके उसका विसर्जन कर दिया जाए। इसलिए अपनी छोटी से छोटी उपलब्धि को भी जमाने की नजरों में लाकर आत्म मुग्धता के असीम आनंद की दिव्य अनुभूति की जा सकती है। अन्यथा आपको अपनी पहचान बनाने में मुद्दत बीत सकती है। वैसे आध्यात्मिक दृष्टि से 'मैं' की पहचान बहुत मायने रखती है। लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से 'मैं' को तो सिद्ध करना पड़ता है। अब देखिए न, सोशल मीडिया में कितने 'मैं' दिखाई देते हैं!

वास्तव में आदमी को समय के साथ चलना चाहिए। आप ऐसा नहीं करेंगे तो दूसरे तो ऐसा करते ही रहे हैं। ऐसे में आप बहुत पीछे छूट जाएंगे। इसलिए बेहतर यही है कि इस मामले में आदमी को अपने आप पर ही भरोसा करना चाहिए। यूं भी मार्केटिंग का जमाना है, जिसके चलते अच्छे से अच्छे उत्पाद को भी बुरे से बुरा उत्पाद मात दे सकता है। और अब तो आदमी के नसीब में 100 साल भी कहां लिखे हैं ? आजकल तो नई उमर की नई फसल का भी कहां ठिकाना रह गया है ! आदमी 50 का होकर भी ऊपर चला जाए तो लोग नहीं कहते कि अभी उम्र ही क्या थी! दरअसल आदमी को समय के साथ चलना चाहिए। अन्यथा समय उसको बहुत पीछे छोड़ दिया करता है।

बीते जमाने में तो आदमी के नाम के आगे किसी प्रकार का सम्मानजनक संबोधन संबंधित क्षेत्र मे उसकी दीर्घकालीन तपस्या का परिणाम हुआ करता था। लेकिन आजकल ऐसा बिल्कुल नहीं है। आप अपने आप को जिस रूप में जमाने की नजरों में लाना चाहे, बस एक पोज दे दीजिए, बाकी का काम करने में जुकरबर्ग सहायक हो जाएंगे। वास्तव में कोई अच्छा है तो जमाने को उसका अच्छा होना नजर आना भी जरूरी है। वरना जंगल में मोर के नाच का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। इसलिए दूसरों से ज्यादा केवल और केवल अपने आप पर ही विश्वास करना चाहिए। निश्चित ही जब हम बिना देर किए अपनी अच्छाई का बखान जमाने के सामने करते हैं, निहाल होने की अनुभूति से भर जाते है।

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

उपभोक्ता अधिकार : आपकी ताकत, आपकी पहचान

उपभोक्ताओं के विभिन्न हितों और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए देश में प्रतिवर्ष 24 दिसम्बर को 'राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस' मनाया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, उनके हितों के लिए बनाए गए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियमों तथा उनके अंतर्गत आने वाले कानूनों की जानकारी देना है। दरअसल ऑनलाइन खरीददारी हो या ऑफलाइन, ग्राहकों को कई बार सामान की गड़बड़ी अथवा अन्य प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इसी तरह की समस्याओं से उन्हें निजात दिलाने तथा उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। हालांकि वर्ष 2020 तक विभिन्न ई-कॉमर्स साइटों से ऑनलाइन खरीददारी को लेकर उपभोक्ताओं को कोई संरक्षण प्राप्त नहीं था लेकिन उपभोक्ता संरक्षण कानून-2019 (कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट-2019) में ई-कॉमर्स को भी दायरे में लाकर उपभोक्ताओं को और मजबूती देने का प्रयास किया गया। पुराना उपभोक्ता संरक्षण कानून करीब साढ़े तीन दशक पुराना हो चुका था, जिसमें समय के साथ बड़े बदलावों की जरूरत महसूस की जा रही थी। इसीलिए ग्राहकों के साथ अक्सर होने वाली धोखाधड़ी को रोकने और उपभोक्ता अधिकारों को ज्यादा मजबूती प्रदान करने के लिए 20 जुलाई 2020 को 'उपभोक्ता संरक्षण कानून-2019' (कन्ज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट-2019) लागू किया गया, जिसमें उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की ठगी और धोखाधड़ी से बचाने के लिए कई प्रावधान शामिल हैं।

राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस वास्तव में उपभोक्ताओं को उनकी शक्तियों और अधिकारों के बारे में जागरूक करने का महत्वपूर्व अवसर है। भारत में उपभोक्ता आन्दोलन की शुरूआत मुम्बई में वर्ष 1966 में हुई थी। तत्पश्चात् पुणे में वर्ष 1974 में ग्राहक पंचायत की स्थापना के बाद कई राज्यों में उपभोक्ता कल्याण के लिए संस्थाओं का गठन किया गया। इस प्रकार उपभोक्ता हितों के संरक्षण की दिशा में यह आन्दोलन आगे बढ़ता गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पहल पर 9 दिसम्बर 1986 को उपभोक्ता संरक्षण विधेयक पारित किया गया, जिसे राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बार 24 दिसम्बर 1986 को देशभर में लागू किया गया। पिछले कई वर्षों से भारत में प्रतिवर्ष इसी दिन राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण दिवस मनाया जा रहा है। यह दिवस मनाए जाने का मूल उद्देश्य यही है कि उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए और अगर वे धोखाधड़ी, कालाबाजारी, घटतौली इत्यादि के शिकार होते हैं तो वे इसकी शिकायत उपभोक्ता अदालत में कर सकें। उपभोक्ता संरक्षण कानून में स्पष्ट उल्लेख है कि प्रत्येक वह व्यक्ति उपभोक्ता है, जिसने किसी वस्तु या सेवा के क्रय के बदले धन का भुगतान किया है या भुगतान करने का आश्वासन दिया है और ऐसे में किसी भी प्रकार के शोषण अथवा उत्पीड़न के खिलाफ वह अपनी आवाज उठा सकता है तथा क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। खरीदी गई किसी वस्तु, उत्पाद अथवा सेवा में कमी या उसके कारण होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के बदले उपभोक्ताओं को मिला कानूनी संरक्षण ही उपभोक्ता अधिकार है। यदि खरीदी गई किसी वस्तु या सेवा में कोई कमी है या उससे आपको कोई नुकसान हुआ है तो आप उपभोक्ता फोरम में अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम ने उपभोक्ताओं को छह प्रमुख अधिकार प्रदान किए हैं, जिनमें सुरक्षा का अधिकार के तहत खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं से बचाव का अधिकार, सूचना का अधिकार के तहत वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा, शुद्धता और कीमत की सही जानकारी का अधिकार, विकल्प का अधिकार के तहत प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों पर वस्तुओं और सेवाओं का चयन का अधिकार, सुने जाने का अधिकार के तहत उपभोक्ता की शिकायतों और समस्याओं पर ध्यान दिया जाना का अधिकार, निवारण का अधिकार के तहत उपभोक्ता की शिकायतों और समस्याओं पर ध्यान दिया जाना का अधिकार, उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार के तहत अनुचित व्यापार प्रथाओं और शोषण के खिलाफ न्याय का अधिकार शामिल हैं। जहां तक उपभोक्ता की जिम्मेदारियां की बात है तो उपभोक्ताओं को चाहिए कि वे खरीदारी से पहले उत्पाद की गुणवत्ता और वैधता की जांच करें, नकली और घटिया उत्पादों से बचने के लिए प्रमाणित ब्रांड्स को ही प्राथमिकता दें, अपनी शिकायतों को दर्ज कराने में सक्रिय रहें, जागरूकता फैलाने में योगदान दें।

अगर उपभोक्ताओं का शोषण होने और ऐसे मामलों में उनके द्वारा उपभोक्ता अदालत की शरण लिए जाने के बाद मिले न्याय के कुछ मामलों पर नजर डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि उपभोक्ता अदालतों का उपभोक्ताओं के हितों के संरक्षण में क्या योगदान है। दरअसल विभिन्न छोटी-बड़ी समस्याओं का सामना जीवन में कभी न कभी हम सभी को करना पड़ता है लेकिन अधिकांश लोग अपने अधिकारों की लड़ाई नहीं लड़ते। इसका प्रमुख कारण यही है कि देश की बहुत बड़ी आबादी अशिक्षित है, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अनभिज्ञ है। हालांकि जब शिक्षित लोग भी अपने उपभोक्ता अधिकारों के प्रति उदासीन नजर आते हैं तो हैरानी होती है। यदि आप एक उपभोक्ता हैं और किसी भी प्रकार के शोषण के शिकार हुए हैं तो अपने अधिकारों की लड़ाई लड़कर न्याय पा सकते हैं। कोई वस्तु अथवा सेवा लेते समय हम धन का भुगतान तो करते हैं पर बदले में उसकी रसीद नहीं लेते। शोषण से मुक्ति पाने के लिए सबसे जरूरी है कि आप जो भी वस्तु, सेवा अथवा उत्पाद खरीदें, उसकी रसीद अवश्य लें। यदि आपके पास रसीद के तौर पर कोई सबूत ही नहीं है तो आप अपने मामले की पैरवी सही ढ़ंग से नहीं कर पाएंगे। पिछले कुछ वर्षों में ऐसे अनेक मामले सामने आ चुके हैं, जिनमें उपभोक्ता अदालतों से उपभोक्ताओं को पूरा न्याय मिला है लेकिन आपसे यह अपेक्षा तो होती ही है कि आप अपनी बात अथवा दावे के समर्थन में पर्याप्त सबूत तो पेश करें। उपभोक्ता अदालतों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनमें लंबी-चौड़ी अदालती कार्रवाई में पड़े बिना ही आसानी से शिकायत दर्ज कराई जा सकती है। यही नहीं, उपभोक्ता अदालतों से न्याय पाने के लिए न तो किसी प्रकार के अदालती शुल्क की आवश्यकता पड़ती है और मामलों का निपटारा भी शीघ्र होता है।

खेल

शाहिद नकवी

लेखक स्तंभकार हैं।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से अश्विन की विदाई पर सवाल ही सवाल

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के 287 मैचों में 765 विकेट और अगर प्रथम श्रेणी के मैचों के 758 विकेट भी मिला दिया जाए तो ये आंकड़ा 1523 विकेट तक पहुंच जाता है।यानी इतने दिग्गज विकेट टेकर भारतीय टीम के कैरम बॉल फेंकने में माहिर स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह दिया है।जिस खामोशी से और अचानक कैरम बाल के रचयिता ने ये कह कर इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह दिया कि अभी उनके भीतर खेल? बाकी है,वह सवालों के घेरे में है। वैसे ताकतवर बीसीसीआई,चयनकर्ताओं और टीम मैनेजमेंट से कभी इस तरह के सवालों का ठीक ठीक जवाब नहीं मिला है। वैसे भी इस दौर में तो जवाब की उम्मीद करना तो बेईमानी है। क्यों कि निष्पक्षता और पारदर्शिता पर पर्दा पड़ गया लगता है।लेकिन जब सवाल उठे हैं तो वह पूछे ही जाएंगे।ये सवाल बड़ी खबर भी नहीं बनते अगर पूर्व कप्तान कपिल देव,नवजोत सिद्धू जैसे कुछ अन्य पूर्व खिलाड़ियों ने भी प्रश्न नहीं उठाए होते? वैसे अश्विन अकेला नाम नहीं है,जिसे इस तरह क्रिकेट सामान समेटना पड़ा हो। मोहिंदर अमरनाथ से लेकर वसीम जाफर, युसुफ़ पठान तक बहुत लम्बी लिस्ट है।

आस्ट्रेलिया में ब्रिस्बेन के गाबा टेस्ट मैच के ड्रॉ होने के बाद अश्विन ने अपने संन्यास का ऐलान किया। रविचंद्रन अश्विन गाबा टेस्ट मैच में टीम इंडिया के प्लेइंग इलेवन का हिस्सा नहीं थे।ऐसे में उन्हें विदाई मैच भी नहीं मिला। अश्विन ऑस्ट्रेलिया दौरे पर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के एडिलेड टेस्ट मैच में मैदान पर उतरे थे,लेकिन इसमें उनका प्रदर्शन बेहतर नहीं रहा था। ब्रिसबेन के तीसरे टेस्ट में उनकी जगह रविन्द्र जडेजा को टीम में शामिल किया गया।गेंदबाजी में जडेजा भी कोई कमाल नहीं कर सके उन्होंने 23 ओवर में 95 रन देकर कोई विकेट नहीं लिया था। लेकिन उनकी टिकाऊ बल्लेबाजी में 77 रन के योगदान से भारत मैच बचा पाने में सफल हो सका। जबकि पर्थ के पहले टेस्ट में अश्विन की जगह वाशिंगटन सुंदर को खिलाया गया था। भले ही वाशिंगटन भी आप स्पिनर हैं, लेकिन उनकी और अश्विन की तुलना नहीं की जा सकती है। अश्विन सदाबहार गेंदबाज और बेहद उपयोगी बल्लेबाज भी थे। जबकि वाशिंगटन ने अभी तक अपने 81 मैचों के अंतराष्ट्रीय (तीनों फार्मेट) क्रिकेट कैरियर में 100 विकेट और 1000 रन का आंकड़ा भी नहीं छुआ है।

वैसे रविचंद्रन अश्विन पिछले एक दशक से टेस्ट क्रिकेट में टीम इंडिया के अग्रणी और विकेट टेकर स्पिनर रहे हैं।यही कारण है कि वे टीम इंडिया की तरफ से लाल गेंद फॉर्मेट में दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी बने।उनसे अधिक विकेट सिर्फ अनिल कुंबले 619 ने लिए हैं। ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले टीम इंडिया में अश्विन के लिए सब कुछ ठीक चल रहा था। न्यूजीलैंड के खिलाफ अश्विन ने दमदार गेंदबाजी भी की, लेकिन आखिर ऐसा क्या हुआ कि उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिर्फ एक मैच खेलने का बाद ही संन्यास की घोषणा कर दी। ऐसे में सवाल ये उठता है कि क्या विदेशी धरती पर अश्विन का असरदार नहीं होने के कारण उन्हें प्लेइंग इलेवन से बाहर रखा गया, जिसके बाद उन्होंने संन्यास लेने का फैसला किया।क्योंकि एडिलेड के बाद ब्रिस्बेन में उनकी जगह रवींद्र जडेजा को मैदान पर उतारा गया।बतौर सीनियर खिलाड़ी के तौर पर लगातार अनदेखी करना एक तरह का यह संदेश ही था कि अब अश्विन की टीम में जगह नहीं बन रही है। इसमें कोई शक नहीं है कि रविचंद्रन अश्विन अब अपने करियर के आखिरी पड़ाव में थे। टीम इंडिया के लिए 16 साल के लंबे करियर में अश्विन ने कई यादगार पल जिए, लेकिन जब उनके रिटायरमेंट का समय आया तो आखिर क्या वजह थी कि उन्हें विदाई मैच भी नहीं मिला।यहां पर एक दिलचस्प आंकड़ा देना उचित रहेगा। दरअसल आंकड़े कहते हैं कि टेस्ट क्रिकेट में अब तक 3198 खिलाड़ियों ने गेंदबाजी की है।इनमें सिर्फ 9 ने करियर में 500 विकेट लिए। इन 9 में से 4 तेज गेंदबाज हैं। सिर्फ 5 स्पिनर्स ही ऐसे हुए,जिन्होंने 500 या इससे ज्यादा विकेट लिए। अश्विन इन 5 में से एक हैं। भारत के लिए अनिल कुंबले के बाद सिर्फ दूसरे स्पिनर। तीनों फॉर्मेट मिलाकर अश्विन ने 765 विकेट लिए हैं। स्पिनर्स में उनसे ज्यादा विकेट सिर्फ मुथैया मुरलीधरन, शेन वार्न और अनिल कुंबले ने ही लिए हैं। टेस्ट क्रिकेट के टॉप 5 विकेट टेकर्स की बात करें, तो 133 टेस्ट मैच में मुरलीधरन ने सर्वाधिक 800 विकेट लिए हैं। शेन वॉर्न ने 145 टेस्ट में 708 विकेट लिए। अनिल कुंबले ने 132 टेस्ट में 619 टेस्ट विकेट लिए। चौथे टेस्ट में 106 टेस्ट में 537 विकेट लिए।पांचवें नंबर पर नाथन लियोन 123 टेस्ट में 532 विकेट लिए हैं।अनिल कुंबले ने इंटरनेशनल क्रिकेट में कुल 956 विकेट लिए हैं और अगर उनके आईपीएल के 45 और मिला दें तो ये आंकड़ा 1001 को पार कर रहा है।ये अश्विन की खासियत है कि वह यहां भी कुंबले के ठीक पीछे खड़े हैं।

ऐसे में यह एक लाज़मी सवाल है? इसके साथ ही यह समझा जा सकता है कि करियर के अंतिम पड़ाव में कही ना कही अश्विन की अनदेखी की गई। अश्विन को ऑस्ट्रेलिया दौरे पर स्क्वाड में शामिल तो किया गया, लेकिन प्लेइंग इलेवन उन्हें जगह नहीं मिल रही थी। पर्थ में टेस्ट में अश्विन को बाहर बैठाया गया। एडिलेड में पिंक बॉल टेस्ट मैच में उन्हें मौका मिला था तो वह कुछ खास कमाल नहीं कर सके और सिर्फ 1 विकेट ही ले पाए। इसके बाद ब्रिस्बेन के गाबा में फिर से उन्हें बाहर रखा गया। ऐसे में लगातार टीम से बाहर किए जाने के कारण भी अश्विन को यह समझ में आ गया था कि अब टीम इंडिया में उनके दिन पूरे हो गए हैं और टीम मैनेजमेंट चाहती है कि वह संन्यास लेने का फैसला करे।ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गाबा टेस्ट के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में आकर अश्विन ने अपना फैसला सभी को बताया। 2010 में अश्विन ने भारत के लिए डेब्यू किया था। जल्द ही वह तीनों फॉर्मेट में टीम के प्रमुख स्पिनर बन गए। क्रिकेट के हर दिग्गज का मानना है कि वह प्रयोग करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे और यह चीज उनको अन्य से अलग करती थी। क्रिकेट एक ऐसा खेल है जिसमें बल्लेबाजों को अधिक प्रशंसा मिलती है, उसमें अश्विन ने अपने लिए अलग से जगह बनाई।

अश्विन सचमुच साहसी गेंदबाज थे। वह मैच में किसी भी समय गेंदबाजी कर सकते थे।क्या इंटरनेशनल क्रिकेट में आपको ऐसे गेंदबाज मिलते हैं जो बहुत अच्छे रणनीतिकार हों और परिस्थितियों से तेजी से सामंजस्य से बिठाते हों। वह अपने समय के हर कप्तान के सबसे पसंदीदा गेंदबाज थे।अश्विन एक दिग्गज, बहुमुखी और अपरंपरागत गेंदबाज थे,जो लगातार अपनी गति में बदलाव और चतुराई भरी लाइन और लेंथ से बल्लेबाजों को परेशान करते थे।वह भारत की तरफ से सर्वाधिक मैन ऑफ द सीरीज पुरस्कार जीतने वाला खिलाड़ी थे।वह कभी हार न मानने वाला खिलाड़ी थे। वह एक दुर्लभ स्पिनर थे जो अनिल कुंबले की तरह ही नई गेंद से गेंदबाजी कर सकता थे। ये भी कहा जाता है कि कैरम बॉल उनकी उपज थी। दरअसल क्रिकेट और जीवन में कितनी समानता है। जिस प्रकार से जीवन में उतार चढ़ाओ आता है उसी प्रकार से क्रिकेट के खेल में भी एक व्यक्ति विशेष के क्रिकेट जीवन में उतार चढ़ाव आता है । दोनों ही अवस्था में हर कोई चाहता है की उसकी अंतिम विदाई कष्टप्रद ना हो। क्रिकेट के खेल में अक्सर देखा गया है की ज्यादातर प्रथम श्रेणी व टेस्ट खिलाड़ियों की विदाई काफी कष्टप्रद होती है।विरले ही होते हैं जिनकी विदाई उनके इच्छा अनुसार होती है।अश्विन की विदाई भी काफी कष्टप्रद रही । हर खिलाड़ी चाहता है कि उसकी विदाई सम्मानपूर्वक हो लेकिन ज्यादातर खिलाड़ियों की विदाई उनके इच्छा के अनुसार नहीं होती है।

अश्विन को जिस प्रकार से टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के लिए कहा गया होगा उससे उनका नाराज होना व अपमानित होना स्वाभाविक है। भारतीय क्रिकेट में अति विशिष्ट योगदान रहा है। तमाम पूर्व खिलाड़ियों और भारतीय क्रिकेट फैन्स का मानना है कि उसे देखते हुए उनकी विदाई भी अच्छी से होनी चाहिए थी। चयनकर्ताओं व टीम मैनेजमेंट को उन्हें बता देना चाहिए था की ऑस्ट्रेलिया का दौरा उनका अंतिम दौरा होगा और हम सभी चाहते हैं कि आप सिडनी टेस्ट के बाद टेस्ट क्रिकेट को सम्मानपूर्वक अलविदा कह दे। तभी तो आहत हो कर पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा कि मुझे नहीं पता कि अश्विन ने ऐसा क्यों किया। मैं उनकी कहानी सुनना चाहूंगा। उन्हें वह सम्मान दें। उन्होंने देश के लिए 106 टेस्ट खेले हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई भी भारतीय क्रिकेट में उनके विशाल योगदान की बराबरी कर सकता है।कपिल देव ने कहा कि अगर मैं होता तो अश्विन को इस तरह नहीं जाने देता।सिध्दू सहित कुछ और पूर्व खिलाड़ियों और अश्विन के पिता ने भी इस तरह के संन्यास पर आश्चर्य व्यक्त किया है। पिता ने तो नाराजगी भी जताई है। आस्ट्रेलिया टीम के भी कई खिलाड़ियों ने कहा कि अश्विन उनके लिए हमेशा मुश्किल गेंदबाज रहे और खासकर भारत में तो कई बार उनको खेलना सम्भव नहीं होता था। महान स्पिन चौकड़ी की बिदाई के बाद दिलीप दोषी, सुनील जोशी, शिवलाल यादव,अरशद अय्यूब, मनिंदर सिंह, अनिल कुंबले और हरभजन सिंह जैसे तमाम स्पिनरों ने एक दूसरे की भरपाई की, लेकिन फिलहाल ऐसा कोई नहीं दिखता जो अश्विन की जल्दी भरपाई कर सके।बहरहाल जो भी हो अश्विन एक बेहतरीन खिलाड़ी रहे है और उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

जन्म शताब्दी वर्ष पर विशेष

हर्षवर्धन पाण्डे

लेखक पत्रकार हैं।

सुरों के सरताज़ मोहम्मद रफ़ी

मोहम्मद रफ़ी भारतीय संगीत और सिनेमा के अद्वितीय गीतकार, गायक और संगीतकार एक ऐसी शख्सियत हैं जिनका योगदान अविस्मरणीय है। आज भी ऐसा लगता है मानो उनका संगीत और आवाज़ भारतीय सिनेमा की आत्मा में समाहित हो गए हैं। रफ़ी साहब के व्यक्तित्व का प्रभाव सिर्फ उनके गीतों के माध्यम से ही नहीं बल्कि उनकी सरलता, विनम्रता और पेशेवर अंदाज में भी महसूस किया जा सकता था।

रफ़ी का जन्म 24 दिसम्बर 1924 को पंजाब (अब पाकिस्तान) के अमृतसर जिले के कोटला सुलतान सिंह गांव में हुआ था। उनका परिवार संगीत के प्रति स्नेह रखने वाला था। इनके बड़े भाई की नाई दुकान थी। रफ़ी जब सात साल के थे तो वे अपने बड़े भाई की दुकान से होकर गुजरने वाले एक फकीर का पीछा किया करते थे जो उधर से गाते हुए जाया करता था। उसकी आवाज रफ़ी को पसन्द आई और रफ़ी उसकी नकल किया करते थे। उनकी नकल में अव्वलता को देखकर लोगों को उनकी आवाज भी पसन्द आने लगी। लोग नाई दुकान में उनके गाने की प्रशंसा करने लगे। उनके मन में संगीत का बीज एक भीख मांगने वाले फ़कीर को देखकर अंकुरित हुआ। तब उनके मन में भी उस फ़कीर जैसे गाने की इच्छा जगी। जब उन्होनें गाना शुरू किया तो पिता ने ही सबसे पहले विरोध किया जिसके लिए उनकी पिटाई भी हुई लेकिन संगीत को मन में बसाने की तमन्ना लिए रफ़ी कभी भी अपने लक्ष्य से नहीं डिगे। लाहौर में कुन्दनलाल सहगल जब अपना स्टेज शो करने निकले तब रफ़ी महज 13 बरस की उम्र में उनको सुनने गए। वहां मंच पर लाइट चली गई तो भीड़ शांत करने के लिए एक नौजवान को गाने का मौका मिला। रफ़ी ने ऐसा गाना उस स्टेज में गाया सब देखते रहे और सबको झूमने पर मजबूर कर दिया। तब संगीतकार श्यामसुन्दर ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और मायानगरी में आकर प्लेबैक गायक बनने का मौका दिया और पंजाबी फिल्म गुल बलोच में गाना गाया।यह गाना रफी का ज़ीनत बेगम के साथ एक युगल गीत था जिसके बोल थे : नी सोहनिये नी हीरिये तेरी याद ने। इनके बड़े भाई मोहम्मद हमीद ने इनके संगीत के प्रति इनकी रुचि को देखा और उन्हें उस्ताद अब्दुल वाहिद खान के पास संगीत शिक्षा लेने को कहा। उनका रुझान शास्त्रीय संगीत की ओर तेजी से बढ़ा और उनका गायक बनने का सपना साकार होने की दिशा में कदम बढ़ने लगे। रफ़ी की गायन-प्रतिभा को पहचानते हुए संगीतकार फिरोज़ निज़ामी ने रफ़ी को आल इंडिया रेडियो लाहौर में नौकरी दिलवा दी।

रफ़ी की हिन्दी गायकी की असल शुरुआत 1941 में हुई जब उन्होंने पहली बार रेडियो पाकिस्तान के लिए गाना गाया लेकिन उनका बॉलीवुड में प्रवेश 1944 में हुआ जब उन्होंने 'सोनिये नी हीरिये', 'तू हिंदू बनेगा मुसलमान बनेगा' और अन्य छोटे-छोटे गीतों के माध्यम से हिंदी सिनेमा में अपनी अलहदा पहचान बनाने की दिशा में तेजी से अपने कदम बढ़ाये। हालांकि उन्हें असली पहचान 1946 में फिल्म 'गांव की गोरी' से मिली जिसमें उनका गीत 'सोनिये नी हीरिये' काफी हिट हुआ। भारत का वो दौर याद करें जब देश विभाजन के सदमे की त्रासदी से उबर ही रहा था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की गोली मार कर हत्या कर दी गई थी। उस दौर में राजेंद्र कृष्ण के लिखे गीत 'सुनो सुनो ए दुनिया वालों, बापू की ये अमर कहानी' को हुस्नराम भगत राम ने अपना संगीत से कालजयी बना डाला। इस नग्मे को 'रफ़ी साहब' ने अपनी दिलकश आवाज़ से झंकृत करने का काम बखूबी किया। उस दौर में रफ़ी होने के मायने आप इस बात से समझ सकते हैं कि इस गीत को सुनने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ख़ासतौर से 'रफ़ी साहब' को अपने दिल्ली निवास स्थान पर आमंत्रित किया और इस गीत सुनकर नेहरू की आँखें भी नम हो गई। भारत की आज़ादी की पहली वर्षगाँठ पर नेहरू ने उस दौर में रफ़ी को चाँदी का एक छोटा सा मेडल भेंट किया तब मोहम्मद रफ़ी की उम्र महज 24 बरस की रही जो उनके लिए किसी बड़े सम्मान से कम नहीं था।

रफ़ी ने अपनी गायकी में विविधता और प्रयोग की कोई कमी नहीं छोड़ी। चाहे वह रोमांटिक गीत हों या फिर देशभक्ति गीत हों या फिर दर्द भरे नग्मे, रफ़ी की दिलकश आवाज़ में वह ताकत थी कि हर गीत उस दौर में अपनी पूरी कहानी खुद बयां कर देता था। उन्होंने अपने करियर के दौरान लगभग 28,000 से अधिक गीत गाए जो आज भी हर संगीत प्रेमी के दिल में गूंजते हैं। उनके गायन में जो मिठास थी वह अनमोल मानी जाती है। रफ़ी के गाने सिर्फ सुरों और शब्दों का मिलाज नहीं होते थे बल्कि उन गीतों में जो भावनात्मक गहराई थी जो उस दौर के रेडियो सुनंने वालों को दिल में उतार देती थी। 'तेरा मुझसे है पहले का नाता कोई' (नौशाद द्वारा संगीतबद्ध), 'कुछ

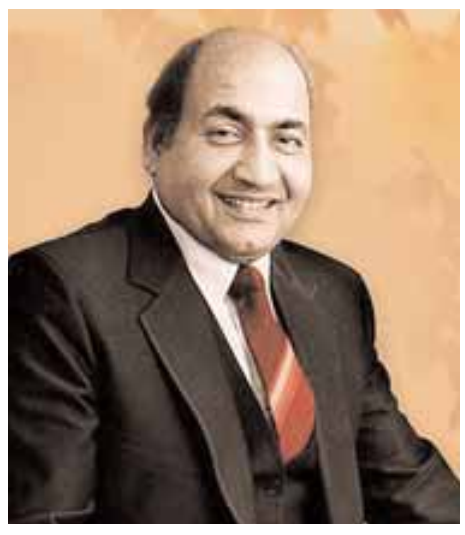

तो लोग कहेंगे' (शंकर जयकिशन), 'आजकल पाँव ज़मीन पर नहीं' (आर.डी. बर्मन) जैसे गीतों में रफ़ी की आवाज़ ने न केवल गीतों को संजीवनी दी बल्कि ये सभी गीत हिंदी सिनेमा की अनमोल धरोहर बन गए। रफ़ी ने हिन्दी सिनेमा के लिए बिना फीस लिये या बेहद कम पैसों लेकर भी नायाब गीत गाए। उनका कहना था, 'मेरा काम घास - घोड़ा चिल्लाना नहीं है। मेरा काम इंसानों के काम आना है। इंसानो से दोस्ती करने का है। मेरा शौक, मेरी इबादत संगीत है। वह करना मुझे अच्छा लगता है इसलिए मैं कभी भी पैसे के लिए नहीं गाता। न मैंने कभी भी किसी से पहले से कोई समझौता किया जिसने जो दे दिया मैंने अपनी रोजी-रोटी समझकर रख लिया क्योंकि गायिकी मेरी अपनी जागीर नहीं थी। खुदा की दी हुई नायाब नेमत है'।

रफ़ी की गायकी का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि वे हर प्रकार के गीत गाने में माहिर थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, भक्ति गीत, भजन, ग़ज़ल, रोमांटिक गीत, हास्य गीत और यहां तक कि फ़िल्मी गानों के साथ भी प्रयोग किया। 'मन तड़पत हरि दर्शन को' (बैजू बावरा), 'सारे जहाँ से अच्छा' (पाकिस्तान दिवस पर गाया गया गीत) जैसी विविधताएं दर्शाती हैं कि रफ़ी का गायन सिर्फ एक शैली तक सीमित नहीं था। रफ़ी की आवाज़ में वह सहजता और सरलता थी जो उन्हें एक आम आदमी से जोड़ देती थी। उनकी आवाज़ में गंभीर सादगी नजर आती थी जो श्रोताओं के दिलों के भीतर उतर जाती थी। रफ़ी के संगीतकारों के साथ सम्बन्ध भी बड़े सौहार्दपूर्ण रहे। उन्होंने नौशाद, शंकर जयकिशन, ओ.पी. नैय्यर, एस.डी. बर्मन, आर.डी. बर्मन, और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल जैसे महान संगीतकारों के साथ काम किया। रफ़ी और नौशाद की जोड़ी ने हिंदी सिनेमा को कई कालजयी गीत दिए हैं। नौशाद की फ़िल्म ÷बैजू बावरा÷ में रफ़ी की गायकी ने सिनेमा जगत को एक नया मोड़ दिया। रफ़ी साहब की पहचान एक संगीतकार से अधिक एक कलाकार के रूप में थी। वे न केवल अपने गीतों के लिए प्रसिद्ध थे बल्कि उनके व्यक्तित्व की विनम्रता भी लोगों के दिलों में बसी थी। उनकी आवाज़ ने सैकड़ों अभिनेता-अभिनेत्रियों की फिल्मों में जान डाली।

1945 से जब से गोल्डन एरा शुरू हुआ तब से ही हर अभिनेता की इच्छा होती थी कि रूपहले पर्दे पर मुझे महान रफ़ी साहब की रूहानी मिलें। ख़ासकर देव, दिलीप, शम्मी कपूर, राजेन्द्र कुमार, धर्मेंद्र, शशि कपूर, धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना सरीखे कई अदाकारों आदि की कामयाबी में सबसे बड़ा रोल रफ़ी का रहा। हिन्दी सिनेमा में रफ़ी ने सबसे ज्यादा शम्मी के लिए गाया। क्लासिकल ग़ज़ल के उस्ताद रफ़ी साहब शम्मी कपूर की इमेज का पूरा ख्याल रखते थे। 'शंकर-जयकिशन' का संगीत और मोहम्मद रफी की आवाज में लिखे जो खत तुझे'- कन्यादान का गाना आज भी उतना चर्चित है जितना यह 1968 में था। आशा पारेख और शशि कपूर पर शूट किया गया यह गाना मोहम्मद रफ़ी की बेहतरीन पेशकश में से एक है। मुगल-ए-आजम फिल्म को भला कौन भूल सकता है। सलीम और अनारकली की प्रेम कहानी की लोकप्रियता को देखते हुए ही आगे चलकर इस फिल्म को कलर रूप दिया गया। इसके गाने आज भी बहुत पॉपुलर हैं । मोहम्मद रफ़ी ने सबसे ज्यादा गाने शम्मी कपूर के लिए गाए थे। मोहम्मद रफ़ी और शम्मी कपूर के नाम कई हिट 'बदन पे सितारे', 'तुमसे अच्छा कौन है','चाहे कोई मुझे जंगली कहे' हैं। शम्मी कपूर अपने आप को मोहम्मद रफ़ी के बिना अधूरा मानते थे। मोहम्मद रफ़ी और शम्मी कपूर की जोड़ी ने कई हिट गाने दिए हैं। इन्हीं में एक गाना था 'जंगली' फिल्म का 'सुकु-सुकु'।ये गाना आज भी उतना ही खुशमिजाज लगता है जितना उस दौर में लगता था।

रफ़ी को उनके योगदान के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए। उन्हें 1967 में 'पद्मश्री' और 1977 में 'पद्मभूषण' जैसे उच्चतम सम्मान प्राप्त हुए। साथ ही उन्हें 6 फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिले। मोहम्मद रफ़ी का आखिरी गीत फिल्म 'आस पास' के लिए था जो उन्होंने लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के लिए अपने निधन से ठीक दो दिन पहले रिकॉर्ड किया था। गीत के बोल थे 'शाम फिर क्यों उदास है दोस्त'...। संगीत जगत में रफ़ी जिस मुकाम पर थे शायद यदि कोई और होता तो उसे सफल होने का घमंड होता लेकिन रफ़ी का व्यक्तित्व सहज और सरल था। वो किसी का हक मारने में विश्वास नहीं रखते थे। वे बहुत ही नेकदिल इंसान थे।

आज भी रफ़ी का संगीत सिनेमा प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके गाए गीत आज की नई पीढ़ी की जुबां पर उतरते हैं। रफ़ी की दिलकश आवाज़ ने भारतीय सिनेमा को वह रूप दिया है जिसे सिनेमा प्रेमी सदियों तक याद करेंगे। रफ़ी के जन्म शताब्दी वर्ष पर यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि रफ़ी सरीखे गायक हजार बरस में एक बार पैदा होते हैं। रफ़ी साहब जब दुनिया रुखसत कर गए तो संगीत के सिरमौर नौशाद ने रफी पर कसीदे पढ़ते हुए सच ही कहा था

कहता है कोई दिल गया दिलबर चला गया
साहिल पुकारता है समुन्दर चला गया
लेकिन जो बात सच है, वो कहता नहीं कोई
दुनिया से मौसकी का, पयम्बर चला गया।

किसान नहीं कराते मिट्टी का परीक्षण, रासायनिक खाद मिट्टी से छीन रहे पोषक तत्व

मिट्टी कैसे उगले सोना, जिंक, सल्फर की कमी दूर ही नहीं

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले की कृषि योग्य भूमि की मिट्टी में पोषक तत्वों की लगातार कमी होती जा रही है। हालांकि कृषि विभाग हर वर्ष समस्या के समाधान के लिए लगातार किसानों को खेतों पर खरपतवार नहीं जलाने, रासायनिक खाद के बजाय जैविक खाद का प्रयोग करने व बुवाई से पहले मृदा परीक्षण कराने के लिए प्रोत्साहित करता है, लेकिन अभी वांछित सफलता नहीं मिली है। मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के अधिकारियों की माने, तो उपजाऊ मिट्टी के परीक्षण में जिंक सल्फर की मात्रा न्यूनतम पाई गई है। जिसका प्रभाव फसल उत्पादन पर दिखाई देता है। यहां उल्लेखनीय है कि मिट्टी में कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम, मैग्नीशियम,सल्फर, जिंक, आयरन, कॉपर, बोरान, मैंगनीज, मोलिब्डेनम, क्लोरीन व जिंक सल्फर सहित कुल 16 पोषक तत्व होते है, जो सभी प्रकार के पौधे और फसलों के जीवन चक्र के लिए जरूरी है। इसमें यदि किसी भी पोषक तत्व की कमी रह जाती है, तो फसल की पैदावार कम होती है। जिंक की कमी से पौधे की नीचे की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं, लाल धब्बे भी हो जाते हैं, जिसके कारण पौधे सूर्य की किरणों से अपना पर्याप्त भोजन प्राप्त नहीं कर पाते है और उत्पादन पर असर पड़ता है।

ढाई लाख किसान, कम ही कराते है मिट्टी परीक्षण- वैसे तो जिले में करीबन 3 लाख हेक्टेयर भूमि में खेती होती है। जिसमें करीब ढाई लाख किसान खरीफ, रबी सहित अन्य फसल के अलावा सब्जियों का उत्पादन लेते है। लेकिन ढाई लाख किसानों में से कम ही ऐसे किसान है जो मिट्टी का परीक्षण कराते है। बैतूल बाजार के मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के लैब इंचार्ज चंद्रशेखर चौधरी ने बताया कि क्षमता के अनुरूप हर साल करीब दस हजार मिट्टी के नमूनों की जांच की

जाती है। जिसमें बैतूल जिले के विभिन्न क्षेत्रों में जिंक, सल्फर की कमी सामने आई है। जिसके पीछे कारण यह है कि किसान सिर्फ डीएपी और यूरिया ही खेतों में डालते हैं। जिससे मिट्टी में सिर्फ नाइट्रोजन और फास्फेट की ही कमी पूरी हो पाती है।

जिंक, सल्फर कम होने के यह है कारण- कृषि वैज्ञानिकों की माने, तो किसान फसल उत्पादन बेहतर प्राप्त करने के लिए बड़े स्तर पर रासायनिक खादों का प्रयोग ज्यादा करते है, लेकिन जिंक, सल्फर नहीं डालते है। क्योंकि ज्यादातर खादों में जिंक की मात्रा कम होती है, या नहीं होती है। जिसके लिए किसानों को अलग से इसका प्रयोग करना होता है, जो नहीं हो रहा है। सामान्यतः किसानों को 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से जिंक का प्रयोग करना चाहिए, किसान वह भी नहीं कर रहे हैं। जमीन में जिंक की तीन श्रेणियां मध्यम, न्यूनतम व अति न्यूनतम होती हैं। ऐसे में किसान को अपने खेत की मिट्टी के पोषक तत्व की कमी जानने के लिए मिट्टी की जांच करानी चाहिए, ताकि पोषक तत्वों की कमी को समय पर दूर किया जा सके।

मिट्टी परीक्षण के लिए ब्लाकों में भी बनी है प्रयोगशालाएं- जिले के ब्लाकों में मिट्टी परीक्षण के लिए 11 परीक्षण प्रयोगशालाएं बनाई गई है। शासन ने मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला के लिए हर ब्लाक में 35-35 लाख रुपये खर्च किए। जिसमें से केवल बैतूल बाजार की दो मृदा प्रयोगशाला ही चालू थी, शेष 9 प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षित स्टाफ की नियुक्ति नहीं होने से प्रयोगशालाएं बंद थी, अब इन प्रयोगशालाओं को कृषि विभाग द्वारा चालू करने की कवायद शुरू कर दी है। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि ब्लॉक की मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं के टेंडर के बाद ज्वाइनिंग के लिए लोग आ रहे है, उन्हें सामान सहित अन्य व्यवस्थाएं करवा दी है और पांच प्रयोगशालाएं औपचारिक रूप से चालू हो चुकी है। अन्य प्रयोगशालाओं का भी जल्द नियमित संचालन शुरू करने का प्रयास किया जा रहा है।

जानिए.... क्यों जरूरी है मिट्टी परीक्षण

पौधे की समुचित वृद्धि व विकास के लिए सर्वमान्य रूप से मिट्टी में 16 पोषक तत्व होने चाहिए। ये सभी तत्व मिट्टी में प्राकृतिक रूप से मौजूद होते है। लगातार फसल लेते रहने से मिट्टी से आवश्यक तत्व कम होते जाते है। पोषण पर्याप्त नहीं मिल पाने से पौधे कमजोर व रोग, कीट से ग्रसित हो जाते हैं। जिससे आशा अनुरूप फसल उत्पादन नहीं हो पाता। मिट्टी परीक्षण से खेतों में उर्वरक उपयोग की सही मात्रा व उचित फसल चयन किया जा सकता है। किसान कई सालों के अनुभव के बावजूद भी उपजाऊ मिट्टी का अंदाज नहीं लगा पाते हैं। ऐसे में फसल की पैदावार पर असर पड़ता है। किसानों को खेत की उपजाऊ मिट्टी का सही अंदाजा लगाना जरुरी है, ताकि फसल की अच्छी पैदावार हो सके। इसके लिए खेती की मिट्टी का परीक्षण करना जरूरी है। किसानों को जानकारी होनी चाहिए कि खेत में कौन-कौन सा उर्वरक कितनी मात्रा में डालना है। मिट्टी परीक्षण से भूमि में उपलब्ध नाइट्रोजन फॉस्फोरस, पोटाश आदि तत्वों और लवणों की मात्रा और पीएच मान का पता चलता है। इसके साथ ही भूमि की भौतिक बनावट भी मालूम पड़ती है। जो फसल बोना हैं, उसमें खादों की कितनी मात्रा डालना है इसकी जानकारी मिलती है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि कम से कम तीन साल में एक बार जांच करवाना चाहिए। इससे मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी होने पर पूर्ति करने से उत्पादन में वृद्धि होती है। इसके अलावा खाद की निर्धारित मात्रा का पता चलने से खाद की बचत होती है।

इनका कहना है -

जिले भर से मिट्टी परीक्षण के जो नमूने आये थे, उसमें जिंक, सल्फर की मात्रा कम पाई गई है। किसानों को इसके लिए जागरूक किया जा रहा है। वैसे किसानों को कम से कम तीन साल में मिट्टी का परीक्षण जरूर करना चाहिए, जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों की कमी के बारे में जानकारी मिलती है। इन कमियों को दूर करके किसान अच्छा उत्पादन ले सकता है।

- चंद्रशेखर चौधरी, लैब इंचार्ज, मृदा परीक्षण प्रयोगशाला, बैतूल बाजार

जिले के विभिन्न ब्लाकों में कुल 11 मुद्रा परीक्षण प्रयोगशालाए है जिसमें से दो प्रयोगशालाएं तो सुचारू रूप से चालू है। शेष 9 के लिए भी निविदा जारी की गई थी और इन प्रयोगशालाओं के लिए 9 संस्थाओं का चयन भी कर लिया गया है। उम्मीद है कि इन प्रयोगशालाओं को वर्ष के अंत तक चालू कर लिया जाएगा।

- आनंद बडोनिया, उप संचालक, कृषि विभाग, बैतूल

बांग्लादेश में भागवत कथा करने वाले कथाकार को देंगे एक करोड़ रुपये

बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने किया ऐलान

बैतूल। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार का विरोध देश-दुनिया में जारी है। इसी बीच बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने एक नई घोषणा कर खलबली मचा दी है। इसमें बांग्लादेश में नये साल में विशाल स्तर पर भागवत कथा कराने का ऐलान किया है। भारत के पांचवेधाम श्री रुक्मणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल के संस्थापक सेम वर्मा ने आज सोमवार को भगवान बालाजी के दर्शन के बाद घोषणा की कि वे बालाजीपुरम के बैनर तले बांग्लादेश में भागवत कथा कराना चाहते हैं। अप्रवासी भारतीय सेम वर्मा ने कहा कि जिस तरह

बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर कट्टरवादी मुसलमानों द्वारा अत्याचार किया जा रहा है वह निंदनीय है। ऐसे में भगवान श्रीकृष्ण की कथा जहां धर्म की राह पर चलने की प्रेरणा देगी वहीं सभी संप्रदायों को सद्भावना से रहने की सीख भी देगी। इसी पावन उद्देश्य से एक विशाल भागवत कथा का आयोजन बांग्लादेश में करना तय किया गया है। इसके लिए बांग्लादेश सरकार और बांग्लादेशी सनातन संस्थाओं से भी संपर्क किया गया है। भारतीय गृह और विदेश मंत्रालय को भी इस संबंध में सूचित किया जा रहा है। श्री वर्मा ने कहा कि दुखद यह है कि बांग्लादेश में कथा के लिए कई कथाकारों से संपर्क किया लेकिन कोई भी प्रसिद्ध और विद्वान कथाकार तैयार नहीं हो रहा है। अतः उन्होंने उस कथाकार को एक करोड़ रुपये की दक्षिणा देने की घोषणा की है जो बांग्लादेश में कथा करेगा। उन्होंने कहा कि वो कथाकार और उनकी पूरी टीम के आने-जाने व वहां के आयोजन का संपूर्ण व्यय भी देने को तैयार हैं। फरवरी में बालाजीपुरम ब्रह्मोत्सव के बाद कभी भी कथा का समय दिया जा सकता है। बालाजीपुरम संस्थापक श्री वर्मा ने सभी कथाकार संतों से अपील की है कि वे बांग्लादेश के सनातनियों के लिए सहृदयता दिखाते हुए भागवत कथा का संकल्प लें और सद्भावना की ज्योति जलाएं।

सुशासन सप्ताह अंतर्गत आयोजित एक दिवसीय जिलास्तरीय कार्यशाला

मुख्य अतिथि जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण उमेश सोनी व विशेष अतिथि प्रभारी कलेक्टर अभिषेक चौधरी थे

धार। जिला प्रशासन द्वारा सुशासन सप्ताह अन्तर्गत एक जिलास्तरीय कार्यशाला का आयोजन जिला पंचायत सभाकक्ष में किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि जिला न्यायाधीश एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण उमेश सोनी व विशेष अतिथि प्रभारी कलेक्टर अभिषेक चौधरी थे। कार्यशाला में सुशासन के अन्तर्गत श्रेष्ठ प्रथाओं में राजोद जल प्रदाय पर फ़िल्म का प्रदर्शन कर, सफल योजना क्रियान्वन का उदाहरण प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात तपेदिक बीमारी पर

कार्ययोजना, प्रसवपूर्व देखभाल पंजीयन एवं चुनाव प्रबन्धन में जी आई एस पद्धति पर क्रमशः मेडिकल ऑफिसर डॉ संजय जोशी, मुख्य स्वास्थ व चिकित्सा अधिकारी राकेश शिन्दे व एस डी ओ, जल संसाधन राकेश डावर ने पी पी टी प्रेजेंटेशन भी दिए। कार्यशाला में डाइट प्राचार्य मनोज शुक्ला एवं वरिष्ठ अभिभाषक वल्लभ विजयवर्गीय द्वारा सुशासन का अर्थ समझा कर शासन व नागरिकों की भागीदारी की भूमिका पर उद्बोधन भी दिये गए।

मुख्य अतिथि उमेश सोनी ने सुशासन में विधि सम्मत रहकर कार्य करने एवं न्यायिक प्रकिया पर प्रकाश डाला। उद्घाटन भाषण प्रभारी कलेक्टर व मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी ने देते हुए, गुड गरवनेन्स के तत्वों को बता कर, दक्षता से कार्य करने पर बल दिया। पूर्व में अतिथियों का स्वागत एडीएम अश्विन रावत व एसडीएम रोशनी पाटीदार ने पुष्प गुच्छ भेंट कर किया। संचालन डॉ नवीन राठौर ने किया। अंत मे आभार एडीएम श्री रावत ने माना। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शासकीय अधिकारी व प्रबुध्दजन उपस्थित थे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद मध्यभारत प्रांत जनजातीय छात्र कार्य प्रमुख बने मानिक कुमरे

बैतूल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 57वाँ प्रान्त अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें आठनेर नगर की युवा तरुणाई, छात्र हित में कार्य करने वाले मानिक कुमरे को मध्यभारत प्रांत जनजातीय छात्र कार्य प्रमुख बनाया गया है। गौरतलब है कि मानिक कमरे वर्ष 2018 से

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सक्रिय सदस्य है और समय- समय पर उनके द्वारा संगठन द्वारा दी गई जिम्मेदारियों का ईमानदारी पूर्वक निर्वहन किया गया है। मानिक कुमरे विद्यार्थी परिषद के नगर जनजातीय प्रमुख, ज़िला ह्यद्धस्र प्रमुख ,प्रांत कार्यकारिणी सदस्य जैसे महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे गए। जिसका उन्होंने निष्ठापूर्वक निर्वहन कर संगठन को आगे बढ़ाने का कार्य किया। मानिक कुमरे के नाम की घोषणा होते ही उनसे स्नेह रखने वाले सभी लोगों ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

युवती से चचेरे भाई ने किया दुष्कर्म, गर्भवती होने पर खुलासा, आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। 20 वर्षीय युवती के साथ उसके ही चचेरे भाई ने बलात्कार किया। घटना तब सामने आई जब लडक़ी को पेट दर्द के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां पता चला कि वह गर्भवती है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। घोड़ाडोंगरी पुलिस चौकी में पदस्थ एएसआई संतकुमार परतेती ने बताया कि एक युवती से उसके चचेरे भाई ने दुष्कर्म किया। जिसके कारण युवती 4 महीने की गर्भवती हो गई। घटना का खुलासा डॉक्टर्स की जांच में हुआ। जिसके बाद युवती के परिजनों ने उसे साथ लेकर पुलिस चौकी में शिकायत दर्ज कराई। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि अगस्त महीने में वह बकरी चराने गई थी।

स्कॉलरशिप घोटाले के विरोध में जयस संगठन ने सौंपा ज्ञापन

जिले के अन्य महाविद्यालयों में चल रही गड़बड़ियों की जांच की मांग

बैतूल। जिले के जयवंती हक्सर पी.जी. कॉलेज में 1.62 करोड़ छात्रवृत्ति घोटाले का मामला सामने आया है। इस मामले में जयस संगठन के जिलाध्यक्ष संदीप धुर्वे के नेतृत्व में जयस कार्यकर्ताओं एवं छात्राओं ने महामहिम राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा, जिसमें इस गंभीर मामले की निष्पक्ष जांच और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की गई है। जयस का आरोप है कि इस घोटाले में आदिवासी छात्राओं की छात्रवृत्ति भी फर्जी खातों में ट्रांसफर की गई। इसके साथ ही जयस ने जिले के भीमपुर, भैंसदेही, शाहपुर, आठनेर, घोड़ाडोंगरी, मुलताई और आमला के शासकीय महाविद्यालयों में लाइब्रेरी के लिए आवंटित राशि और छात्रों को दी जाने वाली स्टेशनरी में पिछले पांच वर्षों से चल रही गड़बडियों की जांच की मांग की है। जयस ने ज्ञापन में बताया कि गांव की बेटी योजना और प्रतिभा किरण योजना के तहत सरकारी राशि का गबन कर फर्जी खातों में पैसे ट्रांसफर किए गए। आरोप है कि 347 छात्राओं के हिस्से की 17.35 लाख रुपये की राशि 95 फर्जी खातों में डाली गई। इससे पहले भी की बेटी योजना में 1.44 करोड़ रुपये का गबन उजागर हो चुका है, जिसमें कुल 3,240 बार अलग-अलग खातों में धनराशि ट्रांसफर की गई। इस घोटाले में कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. राकेश तिवारी, डॉ. विजेता चौबे और वर्तमान प्राचार्य की बड़ी लापरवाही सामने आई है।

प्रवीण गुगनानी को मिला अटल बिहारी साहित्य अकादमी सम्मान

सम्मान की 1 लाख की राशि परिषद को समर्पित करने का लिया निर्णय

बैतूल। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् मप्र के महामंत्री प्रवीण गुगनानी को अखिल भारतीय स्तर पर अटल बिहारी साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित किया गया। इस प्रतिष्ठित सम्मान के तहत उन्हें 1 लाख रुपये की राशि दी जाएगी, जिसे उन्होंने साहित्य परिषद् को समर्पित करने की घोषणा की। उनके इस निर्णय की साहित्य जगत में प्रशंसा हो रही है। उल्लेखनीय है कि साहित्य अकादमी, संस्कृति विभाग, द्वारा वर्ष 2022 में प्रकाशित कृतियों के लिए प्रादेशिक एवं अखिल भारतीय स्तर के सम्मान की घोषणा कर दी गई है। बड़े ही गौरव व प्रसन्नता का विषय है कि इस सूची में अखिल भारतीय स्तर के पुरस्कार व सम्मान हेतु बैतूल के साहित्यकार प्रवीण गुगनानी (विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में सलाहकार, राजभाषा) को 'अखिल भारतीय अटलबिहारी वाजपेयी पुरस्कार' प्रदान किया गया है। श्री गुगनानी को यह अखिल भारतीय सम्मान उनकी पुस्तक 'स्वप्न ही तो है कविता' के लिए दिया गया है। इस सम्मान के अन्तर्गत उन्हें पदक के साथ-साथ एक लाख रुपये की राशि भी दी जाएगी। साहित्य अकादमी एवं संस्कृति विभाग द्वारा श्री गुगनानी को यह

पुरस्कार शीघ्र ही एक भव्य व गरिमामय आयोजन में प्रदान किया जाएगा। श्री गुगनानी को इसके पूर्व प्रभासाक्षी हिंदी सेवा सम्मान,पौरुष स्मृति अलंकरण पुरस्कार, जनजातीय लेखन हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ एवं नार्वे सरकार का संयुक्त एरिक एल्हम सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। श्री गुगनानी को गत वर्ष ही मप्र के जनजातीय विषयों पर पर लेखन हेतु ह्युमिनिटीज़ विषय में केलीफोर्निया यूनिवर्सिटी द्वारा मानद डॉक्टरेट भी प्रदान की गई है।

प्रवीण गुगनानी ने बताया है कि इस पुस्तक का औपचारिक विमोचन भी अब तक नहीं हो पाया है। अब शीघ्र ही इसका विमोचन कार्यक्रम भी किया जाएगा। प्रवीण गुगनानी जो कि अखिल भारतीय साहित्य परिषद के मप्र के महामंत्री हैं, उन्होंने इस सम्मान का श्रेय अपने संगठन से मिली शिक्षा को देते हुए अकादमी के निदेशक श्री विकास जी दवे के प्रति आभार प्रकट किया है। प्रवीण भाई ने इस अवसर अपने माता पिता को प्रणाम करते हुए, भाव प्रकट किए हैं कि उनका लेखन, उनके मातृ संगठन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, से सतत मिलती प्रेरणा से ही संभव हो पाता है। श्री गुगनानी ने यह भी बताया कि इस पुरस्कार की एक लाख की राशि वे साहित्य परिषद् के ग्वालियर में बन रहे भवन हेतु सहयोग स्वरूप, संगठन को अर्पित कर रहें हैं। सभी मित्रों, परिजनों, स्वजनों की ओर से श्री गुगनानी को बधाइयाँ व शुभकामनाएं प्रेषित की गई है।

समन्वित प्रयासों से जिले के समग्र विकास के लिए आगे बढ़ें : विधायक डॉ. पंडाग्रे

प्रशासन गांव की ओर के संबंध में जिलास्तरीय कार्यशाला आयोजित

बैतूल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास के पथ पर सतत अग्रसर हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए हर जिले की तरह बैतूल जिले का भी विस्तृत विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया गया है। इस विजन डॉक्यूमेंट में जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, विकास हर आयामों पर उत्कृष्ट कार्य करने के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। साथ ही संपर्क विहिन क्षेत्रों में बेहतर रोड कनेक्टिविटी और जनजातीय वर्गों को मुख्यधारा से जोड़ने के संकल्प भी निर्धारित हैं। सभी जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी समन्वित प्रयासों से इस विजन डॉक्यूमेंट के अनुरूप बेहतर कार्य कर जिले के समग्र विकास के लिए एक साथ आगे बढ़े। यह बात विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे ने सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित सुशासन सप्ताह प्रशासन गांव की ओर अभियान के संबंध में जिला स्तरीय कार्यशाला में कहीं। कार्यशाला में कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, उपाध्यक्ष जिला पंचायत हंसराज धुर्वे, अध्यक्ष नगर पालिका श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं विभागों के अधिकारियों उपस्थित रहें।

विधायक डॉ पंडाग्रे ने कहा कि कोसमी, मोही,चोरडोंगरी कढ़ाई, इत्यादि जिले के औद्योगिक क्षेत्र को शीघ्र विकसित जाए ताकि यहां भूमि औद्योगिक इकाईयों के लिए आवंटित की जा सकें। जिससे जिले में औद्योगिक विकास के साथ स्थानीय लोगों को रोजगार भी प्राप्त हो। उन्होंने जिले में सिंचाई सुविधा के विस्तार के लिए टोपोग्राफी अनुरूप बैराजो के निर्माण करने और माइनिंग सेक्टर को भी विजन डॉक्यूमेंट में शामिल करने के सुझाव दिए। अध्यक्ष नगर पालिका श्रीमती बारस्कर जिले में कृषि के विकास पर विशेष ध्यान देने की बात कही। उन्होंने कहा कि कृषि विभाग के अधिकारी सतत फील्ड में रहकर किसानों को निरंतर समसामयिक सलाह दें। उन्हें फसल चक्र, उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग, नवीन तकनीकी, जैविक कृषि, मृदा परीक्षण इत्यादि बिंदुओं पर समझाइश दी जाए। उन्होंने जिले में स्वच्छता के विभिन्न पैरामीटर पर भी कार्य करने पर विशेष जोर दिया।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि प्रत्येक विभाग जिले के हर क्षेत्र में विकास की हर संभावनाओं का स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों से समन्वय कर अच्छे से आकलन करें। विकास के लिए नवाचारों को अपनाएं। प्रस्तावित कार्ययोजनाओं का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन किया जाए और उनका सतत मॉनिटरिंग भी करें। विजन डॉक्यूमेंट के निर्धारित लक्षण को पूर्ण करने में सभी सक्रिय सहभागी बने। मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री जैन ने कार्यशाला में जिले की बेस्ट प्रैक्टिसेज जिसमें प्रमुख रूप से लखपति दीदी अभियान के संबंध में विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने विजन डॉक्यूमेंट के प्रमुख 8 थीम जिसमें रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य , कृषि, पर्यटन, सार्वजनिक अवसंरचना एवं नागरिक सुविधा, पर्यावरण संरक्षण और कला खेल और संस्कृति के विकास के विजन के संबंध में जानकारी दी गई। जिस पर विस्तृत चर्चा और विचार विमर्श किया गया।

धार में बही हजरत अमीर खुसरो के हिंदी फारसी कलामों की बयार..

रंग व कुल की महफिल के साथ हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती के उर्स का समापन हुआ

धार। प्रसिद्ध सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया दिल्ली के खास शिष्य व अमीर खुसरो के पीर भाई हजरत मौलाना कमालुद्दीन चिश्ती के सालाना उर्स का समापन रंग व कुल की महफिल में अमीर खुसरो के कलामों से हुआ।

देश दुनिया की मशहूर कव्वाल पार्टियों ने रंग की महफिल में हजरत अमीर खुसरो के कलाम आज रंग है ऐ मा रंग है री मोरे महबूब के घर रंग है री मोहे पीर निजामुद्दीन औलिया जब देखो मोरे संग है री व अन्य सूफियाना कलाम कर नजराना देने पर मजबूर कर दिया।

उर्स की आखरी रात कव्वालों ने पढ़े शानदार कलाम- रविवार देर रात तक श्रद्धालुओं ने बाबा कमाल के आस्ताने पर हाजरी दी और कव्वाली का लुत्फ उठाया रविवार की रात प्रसिद्ध कव्वाल हमसर हयात अतहर हयात निजामी दिल्ली जुनैद सुल्तानी बदायूँ नदीम जाफर इकबाल वारसी कव्वाल जयपुर हाजी मुकर्रम वारसी कव्वाल भोपाल ने बाबा कमाल की शान में सूफियाना कलाम पड़े।

अमन चेन की दुआ मांगी गई- सोमवार सुबह आठ बजे से बाबा कमाल के आस्ताने के सामने रंग व कुल की महफिल की शुरुआत दरगाह के पगड़ीबन कव्वाल नाहर खान शमशेर खा ने की उनके बाद आजम अफजाल साबरी नदीम जाफर जयपुर हमसर हयात दिल्ली ने कलाम पड़े अंत मे

सबने मिलकर रंग पड़ा दरगाह के खादिम काजी मोईनुद्दीन भुरू बाबा ने शजरा पड़ा खादिम काजी निजामुद्दीन ने फातिहा ओर अमन सुकून की दुआएं की उसके बाद सभी ने गले मिलकर एक दूसरे को उर्स की मुबारक बाद दी।

उर्स कमेटी अध्यक्ष ने प्रशासन पुलिस व मीडिया का आभार व्यक्त किया- बाबा कमाल के चार दिवसीय उर्स के सफलतापूर्वक संपन्न होने व उर्स के दौरान बेहतर व्यवस्था और सहयोग करने पर उर्स कमेटी अध्यक्ष सुहेल निसार एडवोकेट ने कलेक्टर प्रियंक मिश्रा , एसपी मनोज कुमार सिंह, एसडीएम रोशनी पाटीदार डीएसपी आनंद तिवारी प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार साथियों सहित सीएसपी रविंद्र वास्कले नपा सीएमओ विकास डावर कोतवाली टीआई समीर पाटीदार नोगाँव टीआई सुनील शर्मा व्यवस्था में तैनात सभी थाना क्षेत्रों के टीआई पुलिस कर्मी नपा ओर बिजली कंपनी के अधिकारी कर्मचारियों का आभार जताया व सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

उर्स कमेटी के पदाधिकारियों का हुआ सम्मान - बाबा कमाल के रंग के दौरान आस्ताने पर उर्स कमेटी के अध्यक्ष सुहेल निसार उपाध्यक्ष शकील अहमद इफ्तेखार उद्दीन शेख सचिव रफीउद्दीन सैयद जावेद अंजुम अबुल चौधरी नवाब खान शकील खान खजांची अब्दुल सलाम लल्ला उस्मान पीर नाजिम शेख जुल्फिकार उद्दीन नदीम नईम हुसैन कुरैशी सफदर हुसैन मिर्जा रेहमान बेग सेंडो मोनू नेता मो.फारूक रफीक खान हबीब खान शफीक मंसूरी गुलरेज मंसूरी मोइनुद्दीन मोनू रिजवान शोएब सहित कई पदाधिकारियों की दस्तारबंदी की गई साथ ही सूफी संतो मेहमानों का भी इस्तकबाल किया गया।

भोजपाल साहित्य संस्थान की मासिक काव्य गोष्ठी सम्पन्न

भोपाल। भोजपाल साहित्य संस्थान की मासिक साहित्यिक गोष्ठी का भोपाल हाट परिसर में किया गया। कार्यक्रम संस्था के अध्यक्ष प्रियदर्शी खैरा की अध्यक्षता व विवेक रंजन श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य व कार्यकारी अध्यक्ष श्री सुदर्शन सोनी की विशिष्ट उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस बार गोष्ठी का विषय 'नया साल' रखा गया था। रचनाकारों ने एक से बढ़कर एक गद्य व पद्य दोनो विधाओं में रचनाएं सुनाई। वरिष्ठ साहित्यकार गोकुल सोनी, सतीश श्रीवास्तव, एस डी श्रीवास्तव, सुरेश पटवा, कमल किशोर दुबे, विवेक रंजन, अशोक व्यास, प्रियदर्शी खैरा , कार्यकारी अध्यक्ष सुदर्शन सोनी द्वारा व्यंग्य पाठ किया गया। चंदर सिंह पवार, दीपक पंडित, अशोक धमैनियां, डाक्टर विमल शर्मा, शिव कुमार दीवान, चन्द्रभान राही, डॉ. गिरजेश सक्सेना, द्वारा कविता व गजल पाठ किया गया। कार्यक्रम के दौरान संस्था के आजीवन सदस्यों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम संचालन चंद्रभान राही ने किया।

एम्स भोपाल के डॉ. बाबू लाल ने एओएमएसआई राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत की उन्नत और सस्ती चिकित्सा तकनीकें

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में ट्रॉमा और आपातकालीन चिकित्सा विभाग के सहायक प्रोफेसर, डॉ. बाबू लाल ने कोलकाता में आयोजित एसोसिएशन ऑफ ओरल एंड मैक्सिलोफेशियल सर्जन्स ऑफ इंडिया के 48वें राष्ट्रीय सम्मेलन में अपनी विशेषज्ञता और नवाचारों का प्रदर्शन किया। यह प्रतिष्ठित सम्मेलन देश-विदेश के मैक्सिलोफेशियल सर्जन्स, छात्रों और विशेषज्ञों को इस क्षेत्र में नवीन प्रगति पर विचार-विमर्श का अवसर प्रदान करता है।

प्रो. सिंह ने इस अवसर पर कहा यह हमारे लिए गर्व की बात है कि डॉ. बाबू लाल ने एम्स भोपाल का नाम इस प्रतिष्ठित सम्मेलन में गौरवान्वित किया। यह न केवल चिकित्सा क्षेत्र में नई सोच को प्रोत्साहित करता है, बल्कि बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। डॉ. बाबू लाल ने सम्मेलन में दो प्रमुख विषयों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने चेहरे की सौम्य बीमारियां पर एक विशेषज्ञ पैनल में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने अमेलोब्लास्टोमा और ओडोन्टोजेनिक केराटोसिस्ट जैसे रोगों के प्रबंधन की चुनौतियों पर प्रकाश डाला और इनके आणविक स्तर पर अध्ययन की आवश्यकता बताई, जिससे नई दवाओं का विकास संभव हो सके और मरीजों को जटिल सर्जरी से बचाया जा सके। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पोस्ट-ट्रॉमैटिक राइनोप्लास्टी पर अपने अनुभव साझा किए, जहां उन्होंने नाक की हड्डी में चोटों के प्रबंधन के लिए एम्स भोपाल में विकसित कम लागत वाली तकनीकों को प्रस्तुत किया। डॉ. बाबूलाल ने यूरिनरी कैथेटर और सर्जिकल स्ट्रिप्स से बनाए गए किफायती स्प्लिंट्स का उल्लेख किया, जो सीमित संसाधनों वाले क्षेत्रों के लिए अत्यधिक प्रभावी हैं।

सारा देश टीबी उन्मूलन के लिये संकल्पबद्ध : उप मुख्यमंत्री

श्री विमल मीणा ने स्वर्गीय पिता की तेरहवीं पर बाँटे 10 टीबी मरीजों को बांटे फूड बास्केट, उप मुख्यमंत्री ने की सराहना

भोपाल। 100 दिवसीय निक्षय भारत अभियान के तहत टीबी उन्मूलन के प्रति जागरूकता फैलाने का एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए गरोठ में पदस्थ लैब टेक्नीशियन श्री विमल मीणा ने अपने स्वर्गीय पिता की तेरहवीं के कार्यक्रम में 10 फूड बास्केट टीबी रोगियों को वितरित किए। उनके परिवार ने इस अवसर को समाज के लिए उपयोगी बनाते हुए नि-क्षय मित्र बनने की पहल की।

उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का एक अद्वितीय उदाहरण है। ऐसे कार्य न केवल टीबी उन्मूलन के प्रति जागरूकता को बढ़ाते हैं, साथ ही यह विश्वास दिलाते हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर सारा देश टीबी उन्मूलन के लिए संकल्पबद्ध है। हम निश्चित रूप से 2025 तक भारत और मध्यप्रदेश को टीबी मुक्त बनायेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की केंद्रीय मंत्री श्री चौहान से मुलाकात

भोपाल नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार की शाम केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की। इस अवसर पर उपस्थित उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और मध्यप्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भी केंद्रीय मंत्री श्री चौहान से भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सागर में आयोजित कार्यक्रम से लौटने के अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री चौहान से भेंट कर उनका अभिवादन किया। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान के पुणे से लौटने पर राजकीय विमान तल पर मुलाकातों का यह संयोग हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री धामी द्वारा सागर के कार्यक्रम में सहभागिता के लिए उनका आभार व्यक्त किया और उन्हें उत्तराखंड वापसी यात्रा के लिए विदाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इसके बाद विमान द्वारा नई दिल्ली रवाना हुए।

जिला कांग्रेस कमेटी भोपाल द्वारा लिली टॉकीज चौराहे से जिंसी चौराहा तक बाबा साहब अम्बेडकर सम्मान मार्च निकाला जायेगा

भोपाल। 18 वीं लोकसभा के शीतकालीन सत्र के दौरान सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी द्वारा संविधान और संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का अपमान देश के संसदीय इतिहास में दर्ज हो गया है। बीजेपी हमेशा से लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों के प्रति तिरस्कार दिखाने का कोई मौका नहीं छोड़ती। इस बार तो हद ही पार कर दी, संविधान के पचहत्तर वर्ष पूरे होने पर कांग्रेस समेत इंडिया गठबंधन के दलों ने संसद में सरकार से संविधान पर चर्चा की मांग रखी।

जिला कांग्रेस कमेटी भोपाल द्वारा 24 दिसंबर को दोपहर 12 बजे से राजधानी भोपाल के लिली टॉकीज चौराहे से जिंसी चौराहा तक बाबा साहब अम्बेडकर सम्मान मार्च निकला जायेगा

कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, मप्र विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार, विधायक आरिफ मसूद, आतिफ अकील सहित तामम वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता पैदल मार्च में शामिल रहेंगे नेताओं ने बताया कि अडानी, मणिपुर, संभल जैसे मामलों पर सदन में बहस की मांग लगातार ठुकराए जाने के बाद प्रतिपक्ष की संविधान पर चर्चा की मांग मान ली गई। इस मौके पर कांग्रेस समेत सभी दलों ने सरकार को लोकतांत्रिक और संवैधानिक मूल्यों की प्रतिबद्धता याद दिलाई. समता, समानता और न्याय के डॉ. अंबेडकर के आदर्शों पर चलने की सलाह बीजेपी को कतई रास नहीं आई. सत्तापक्ष ने लगातार विपक्ष को बोलने से रोकने की कोशिश की। यही नहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने डॉ. अंबेडकर का अपमान कर संघ और बीजेपी की मनुवादी मानसिकता उजागर कर दी। अमित शाह ने कहा कि अभी एक फैशन हो गया है अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर। इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।

बेस्ट ऑफ फाइव योजना एमपी बोर्ड में फिर लागू

अप्रैल 2024 में रद्द करने के बाद फिर से लागू

भोपाल (नप्र)। एमपी बोर्ड की बेस्ट ऑफ फाइव योजना को फिर से लागू कर दिया गया है। इसके तहत 10वीं बोर्ड के छह प्रश्नपत्रों में से पांच में पास होने वाले परीक्षार्थी पास माने जाएंगे। अप्रैल 2024 में स्कूल शिक्षा विभाग ने एक अधिसूचना जारी कर इसे रद्द कर दिया था।

● छात्रों को अपनी ताकत के अनुसार प्रदर्शन करने का मौका मिलता है।

क्या है बेस्ट ऑफ फाइव योजना

यह योजना छात्रों को 10वीं बोर्ड परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन और सफलता की अधिक संभावना प्रदान करने के लिए लागू की गई है। इसके तहत, यदि छात्र छह अनिवार्य प्रश्नपत्रों में से किसी पांच में पास हो जाता है, तो उसे पास माना जाएगा। यह नियम परीक्षा के तनाव को कम करने और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

कैसे काम करती है योजना

- 10वीं कक्षा के लिए एमपी बोर्ड के अंतर्गत 6 अनिवार्य विषयों की परीक्षा होती है।
- छात्रों को इनमें से पांच विषयों में न्यूनतम पासिंग मार्क्स (आमतौर पर 33 प्रतिशत) लाने होंगे।
- यदि किसी छात्र का एक विषय कमजोर रहता है, तो वह अन्य पांच विषयों में अच्छे अंक लाकर पास हो सकता है।
- छात्रों पर पढ़ाई का दबाव कम होता है
- जिन छात्रों का एक विषय कमजोर हो, उन्हें फेल नहीं किया जाता।

अप्रैल 2024 में रद्द होने और पुनः लागू होने का कारण

अप्रैल 2024 में इसे रद्द करने के पीछे उद्देश्य छात्रों को सभी विषयों में समान रूप से ध्यान देने के लिए प्रेरित करना था। हालांकि, व्यापक जनहित और छात्रों की मांग को देखते हुए इसे फिर से लागू किया गया है।

कौन से छात्र होंगे लाभान्वित

यह योजना विशेष रूप से उन छात्रों के लिए लाभकारी है जो किसी एक विषय में कमजोर हैं लेकिन अन्य विषयों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं। यह योजना न केवल छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाती है, बल्कि उनके मानसिक तनाव को भी कम करती है, जिससे वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं

सपने में आई भाभी तो देवर ने खोद दी कब्र, 39 दिन पहले हुई थी मौत

सीधी (नप्र)। भाभी की मौत के उन्तालीस दिन बाद उसके सगे देवर ने कब्र खोद दिया। पुलिस ने आरोपित को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। पूछताछ में आरोपित ने कहा कि अल्लाह के आदेश पर ऐसा किया है। जिसकी शिकायत पति ने सिटी कोतवाली पुलिस में दर्ज कराया है। घटना सिटी कोतवाली अंतर्गत थनहवा टोला की है। पुलिस ने मामला पंजीबद्ध कर जांच में जुटी है।

आरोपित के बड़े भाई अमानत खान ने बताया कि 39 दिन पहले मेरी पत्नी की सामान्य बीमारी के कारण मौत हो गई थी। मुस्लिम रीति रिवाज से दफनाया गया था। 39 दिन बाद भाई अरमान खान कब्र को खोद दिया। ऐसे में मेरी पत्नी का अपमान हुआ है। तंत्र मंत्र के चक्कर में उसने ऐसा किया है।

पॉवर जनरेटिंग कंपनी के श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह को मिला प्रतिष्ठित कलिंगा सेफ्टी एक्सीलेंस अवॉर्ड

भोपाल (नप्र)। इंस्टीट्यूट ऑफ क्वालिटी एन्ड एनवायरनमेंट मैनेजमेंट सर्विसेस एवं इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक इंटरप्राइजेस का प्रतिष्ठित कलिंगा सेफ्टी एक्सीलेंस अवार्ड 2023 मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना को भुवनेश्वर में आयोजित एक समारोह में दिया गया। श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह की ओर से यह अवार्ड सेफ्टी ऑफिसर शैलेष चौहान और विल्सन जॉय लाकरा ने ग्रहण किया।

विद्युत गृह को यह अवार्ड लार्ज स्केल इंटरप्राइजेस मेजर इंडस्ट्री केटेगरी में प्रदान किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित यह अवार्ड, उद्योगों में संरक्षा एवं कर्मचारी स्वास्थ्य के क्षेत्र में उच्च मानकों की प्राप्ति पर प्रदान किया जाता है। इसके लिए कर्मचारी सुरक्षा एवं स्वास्थ्य, स्वच्छ तकनीक (क्लीन टेक्नॉलजी), अपशिष्टनिपटान, जल खपत में कमी आदि की स्पष्ट कसौटी पर मूल्यांकन किया गया था। अवार्ड का उद्देश्य उद्योगों में संरक्षा प्रबंधन एवं जागरूकता के स्तर को ऊंचाई प्रदान करना है। उल्लेखनीय है कि श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना ने अवार्ड के लिए निर्धारित सेफ्टी (संरक्षा) से संबंधित सभी मापदंडों को सफलातपूर्वक पूर्ण किया। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर और अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री नीरज मंडलोई ने श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना के समस्त अभियंताओं और कार्मिकों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

अवार्ड समारोह में ओडिशा के उप मुख्यमंत्री कनकवर्धन सिंहदेव, लेसोथो की उच्चायुक्त लेबोहांग वेलेंटीनेव मोचाबा, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के उप महावाणिज्य दूत योंग किन, स्विट्जरलैंड के डॉ. एस. ईटीएच मार्क फुएलेमान और जर्मनी के प्रो. कार्ल-हेंज नोएटेल सहित कई देश-विदेश के तकनीकी विशेषज्ञ उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना के अलावा विभिन्न श्रेणियों में एनटीपीसी, आईओसीएल, टाटा मोटर्स आदि प्रतिष्ठित संस्थानों को भी पुरस्कृत किया गया।

मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के प्रबंध संचालक श्री मनजीत सिंह ने कहा कि श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह ने सेफ्टी (संरक्षा) के उच्चतम मानकों को बनाए रखने में सफलता हासिल की है और परिणाम स्वरूप इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना को ये पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान संरक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ विद्युत परियोजना के भीतर सुरक्षा मानकों में नए मानक स्थापित करने के प्रति सतत् समर्पण को मान्यता देता है।

मध्य प्रदेश के भोपाल, इंदौर और ग्वालियर में रोजगार मेले का आयोजन हुआ

भोपाल में केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके ने नवनियुक्तों के सौंपे नियुक्ति पत्र

भोपाल/इंदौर/ग्वालियर । सोमवार को देश भर में 45 स्थानों पर रोजगार मेला आयोजित किए गए जिसमे 71000 से अधिक नवनियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कार्यक्रम को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया। अपने वक्तव्य में प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार रोजगार मेलों जैसी पहलों के माध्यम से भारत की युवा प्रतिभाओं के पूर्ण उपयोग को प्राथमिकता दे रही है। पिछले 10 वर्षों में, विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में सरकारी नौकरियां प्रदान करने के लिए एक ठोस प्रयास किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी देश का विकास उसके युवाओं की कड़ी मेहनत, क्षमता और नेतृत्व पर निर्भर करता है। भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए प्रतिबद्ध है क्योंकि देश की नीतियां और निर्णय अपने प्रतिभाशाली युवाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित हैं।

भोपाल में सशस्त्र सीमा बल अकादमी द्वारा चिरायु मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, बैरागढ़ के सभागार में आयोजित रोजगार मेले में 378 से अधिक नवनियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री दुर्गादास उइके, राज्य मंत्री, जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने कर कमलो से कुल 25 युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए। उन्होंने अपने संबोधन में नवनियुक्त युवाओं को बधाई दी और देश के युवाओं को सरकारी नौकरी से आगे बढ़ कर सरकार की विभिन्न योजनाओं के सहारे निजी क्षेत्र में बढ़ रहे रोजगार के अपार अवसरों का लाभ उठाने के लिए आह्वान किया। माननीय मंत्री जी ने युवाओं का आहवान किया कि उन्हें अमृत काल से शताब्दी काल के इस महत्वपूर्ण समय में विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाना है जिसके लिए उन्हें सदैव तत्पर रहना पड़ेगा। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं तथा विशेष रूप से स्वच्छ भारत अभियान में भागीदारी के लिए युवाओं को प्रेरित किया। सशस्त्र सीमा बल अकादमी के श्री अजीत सिंह राठौड़, कमांडेंट ने अतिथियों का स्वागत एवं सत्कार किया। समारोह में विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, निदेशक, चिरायु मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, बैरागढ़ एंव भारत सरकार व राज्य सरकार के विभिन्न पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

इंदौर में सीएसडब्ल्यूटी बीएसएफ परिसर में रोजगार मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 400 से अधिक नवनियुक्तों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर ने सभी नवनियुक्त उम्मीदवारों को बधाई दी और विश्वास व्यक्त किया कि वे देश की प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि कि भारत सरकार की मनसा अनुसार युवाओं के हर हाथ में काम और रोजगार हो। इस दिशा मे सरकार नित नई स्वरोजगार के कार्यक्रम संचालित कर रही है।

ग्वालियर के टेकनपुर में सीमा सुरक्षा बल द्वारा रोजगार मेला का आयोजन किया गया। केन्द्रीय संचार एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने नवनियुक्तों को नियुक्त पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए श्री सिंधिया ने कहा कि आज के दिन देश भर में 45 स्थानों पर अलग-अलग विभागों में चयनित हुए 71 हज़ार से अधिक अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए जा रहे है। उल्लेखनीय है कि रोजगार मेला रोजगार सृजन के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में एक कदम है।

मध्यप्रदेश ड्रोन टेक्नोलॉजी के उपयोग में अग्रणी राज्य : सर्वेयर जनरल श्री मकवाना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश ड्रोन टेक्नोलॉजी में अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है। राज्य में ड्रोन टेक्नोलॉजी के लिए बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने और ड्रोन नीति पर विचार विमर्श के लिए सोमवार को शासन में ड्रोन का उपयोग एवं मध्यप्रदेश में ड्रोन पारिस्थितिक तंत्र का विकास विषय पर कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में कार्यशाला हुई। कार्यशाला में ड्रोन प्रौद्योगिकी के व्यापक अनुप्रयोगों पर चर्चा की गयी। सर्वेयर जनरल ऑफ इंडिया श्री हितेश कुमार मकवाना, अपर मुख्य सचिव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी श्री संजय दुबे, प्रबंध निदेशक एमपीएसईडीसी श्री आशीष वशिष्ठ ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। इस अवसर पर ड्रोन केन्द्र सूचना पोर्टल भी लाँच किया गया।

सर्वेयर जनरल श्री मकवाना ने कहा कि भारत में पिछले छ-वर्षों में ड्रोन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ है। ड्रोन के शुरूआती सीमित उपयोग से लेकर आज इसके व्यापक उपयोग तक ड्रोन एक बहुउपयोगी उपकरण के रूप में उभरा है। भारत सरकार ने ड्रोन टेक्नोलॉजी के व्यापक उपयोग के लिये ड्रोन नीति बनाई है। मध्यप्रदेश ड्रोन टेक्नोलॉजी के उपयोग में एक अग्रणी राज्य के रूप में उभर रहा है। राज्य ने स्वामित्व योजना के क्रियान्वयन मे ड्रोन टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुये विशेष उपलब्धि हासिल की है। ड्रोन टेक्नोलॉजी कुशल, सुलभ और कम लागत मे उपलब्ध टेक्नोलॉजी है। एसीएस श्री संजय दुबे ने कहा कि केन्द्र सरकार ने ड्रोन नीति के तहत ड्रोन टेक्नोलॉजी आधारित इको-सिस्टम विकसित करने का लक्ष्य रखा है। इसमें ड्रोन के संचालन के लिये आवश्यक नियम, लाइसेंसिंग प्रक्रियाएं, संचालन की अवधि आदि निर्धारित की गई हैं।

01033/01034 छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस-मऊ- छत्रपतिशिवाजी महाराज टर्मिनस कुम्भमेला स्पेशल ट्रेन

भोपाल मंडल के खिरकिया,हरदा,बनापुरा एवं इटारसी स्टेशन से होकर गुज़रेगी

भोपाल। रेल प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं एवं यात्रियों को सुगम, सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कुम्भ मेला विशेष ट्रेनें संचालित की जा रही हैं। इसी कड़ी में, गाड़ी संख्या 01033/01034 छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस - मऊ - छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस कुम्भ मेला स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है, जो भोपाल मंडल के खिरकिया, हरदा, बनापुरा एवं इटारसी स्टेशनों पर ठहरकर गंतव्य तक जाएगी। गाड़ी संख्या 01033 छत्रपतिशिवाजी महाराज टर्मिनस-मऊ कुम्भमेला स्पेशल ट्रेन दिनांक 9,17,22,25 जनवरी एवं 5,22,26 फरवरी को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस स्टेशन से 11.30 बजे प्रस्थान कर 22.12 बजे खिरकिया, 22.38 बजे हरदा, 23.08 बजे बनापुरा, 23.55 बजे इटारसी और मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए दुसरे दिन 22.00 बजे मऊ स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 01034 मऊ- छत्रपतिशिवाजी महाराज टर्मिनस कुम्भमेला स्पेशल ट्रेन दिनांक 10,18,23,26 जनवरी एवं 6,23,27 फरवरी को मऊ स्टेशन से 23.50 बजे प्रस्थान कर, अगले दिन 22.30 बजे इटारसी, 23.06 बजे बनापुरा,23.38 बजे हरदा, तीसरे दिन 00.05 बजे खिरकिया एवं मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए 14.30 बजे छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पहुंचेगी।

भोपाल मंडल रेल प्रबंधक ने रानी कमलापति-अशोक नगर रेल खंड का व्यापक निरीक्षण किया

भोपाल। भोपाल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी के नेतृत्व में रानीकमलापति-अशोक नगर रेल खंड का सघन निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने सांची, विदिशा, गंज बसोदा और अशोक नगर जैसे प्रमुख स्टेशनों का दौरा किया। इन सभी स्टेशनों को अमृत स्टेशन योजना के अंतर्गत आधुनिक और उन्नत सुविधाओं से सुसज्जित किया जा रहा है। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य यात्रियों की सुविधाओं को और बेहतर बनाना, संरक्षा सुनिश्चित करना और अमृत स्टेशन योजना के तहत प्रगति की समीक्षा करना था।

अमृत स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों का आधुनिकीकरण- मंडल रेल प्रबंधक ने सांची, विदिशा, गंज बसोदा और अशोक नगर स्टेशनों पर अमृत स्टेशन योजना के तहत चल रहे कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने इन सभी स्टेशनों पर प्लेटफार्म, प्रतीक्षालय, बुकिंग कार्यालय, खानपान इकाइयों, फुट ओवर ब्रिज और सर्कुलेटिंग एरिया जैसी यात्री सुविधाओं के आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया। श्री त्रिपाठी ने यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि सभी कार्य उच्च गुणवत्ता और समयबद्धता के साथ पूरे किए जाएं ताकि यात्रियों को सुविधाजनक और आरामदायक अनुभव प्रदान किया जा सके।

सांची स्टेशन पर उन्होंने इस ऐतिहासिक स्थल के महत्व को ध्यान में रखते हुए स्वच्छता और सुविधाओं के उन्नयन की समीक्षा की। विदिशा स्टेशन पर उन्होंने भविष्य की जरूरतों और यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अमृत स्टेशन योजना के तहत चल रहे कार्यों को तेज गति से पूरा करने के निर्देश दिए। गंज बसोदा और अशोक नगर स्टेशनों पर उन्होंने सर्कुलेटिंग एरिया, प्रतीक्षालय और यात्री सुविधाओं के विस्तार कार्यों की प्रगति देखी। अमृत स्टेशन योजना के तहत चल रहे इन कार्यों को उन्होंने संरक्षा और यात्री अनुभव को प्राथमिकता देने की दृष्टि से समयबद्ध रूप से पूरा करने के निर्देश दिए।

विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण के दौरान, उन्होंने रेलवे ट्रैक, सिग्नलिंग सिस्टम और संरक्षा उपायों का गहन निरीक्षण किया। श्री त्रिपाठी ने अधिकारियों से कहा कि रेलवे संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नियमित और व्यवस्थित निरीक्षण आवश्यक है।

निरीक्षण के उपरांत मंडल रेल प्रबंधक ने कहा कि रेलवे अमृत स्टेशन योजना के तहत यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं और संरक्षा प्रदान करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

निरीक्षण के दौरान उनके साथ वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय) श्री ऋचुराज शर्मा, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (उत्तर) श्री नरेन्द्र लोधी, वरिष्ठ मंडल अभियंता (मध्य) श्री कृष्ण कुमार निगम, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री रोहित मालवीय, वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर (सामान्य) श्री संजय मानोरिया, मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री पंकज कुमार दुबे सहित अन्य अधिकारी और पर्यवेक्षक उपस्थित रहे।

आरटीओ के पूर्व आरक्षक सहित 4 सहयोगियों को समन जारी

3 सदस्यीय टीम का गठन, लोकायुक्त ने आयकर से मांगी जब्त सोने और कैश की जानकारी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जिस आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा के घर लोकायुक्त की टीम ने छापा मारा उसके खिलाफ आरोप तय कर दिए हैं। उसके खिलाफ आए से अधिक संपत्ति मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। उसके साथी चेतन सिंह को भी आरोपी बनाया गया है। दोनों को समन भी जारी कर दिए गए हैं।

इस पूरे मामले को लेकर लोकायुक्त डीजी जयदीप प्रसाद ने बताया कि सौरभ के संबंध में फिलहाल कोई जानकारी नहीं है। मीडिया रिपोर्ट्स में ही उसके दुबई में होने की जानकारी मिली थी। मामले की जांच के लिए तीन टीमों का गठ किया है। हवाला के एंगल पर भी मामले की जांच कर रहे हैं। कैश और गोल्ड से भरी गाड़ी की भी जांच कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कैश और गोल्ड से भरी कार के बारे में लोकल पुलिस ने लोकायुक्त को जानकारी नहीं दी थी। मीडिया रिपोर्ट्स से ही जानकारी मिली की कार चेतन सिंह की है।

सरकारी डॉक्टर रहे हैं सौरभ के पिता- सौरभ शर्मा के पिता शासकीय चिकित्सक रहे हैं। उनके निधन के बाद सौरभ को अनुकंपा

सौरभ शर्मा

नियुक्ति मिली। 2015 से 2023 के बीच व विभिन्न नाकों पर पदस्थ रहा है। इस दौरान उसने अवैध धन अर्जित किया। इस काले धन से उसने कई संपत्तियां, साले, पत्नी, दो सहयोगी और मां के नाम से खरीदीं। उसके द्वारा एक होटल का भी संचालन किया जा रहा है।

लोकायुक्त ने इनके खिलाफ दर्ज की एफआईआर- आरोपी सौरभ शर्मा, उसकी पत्नी और मां उसकी सबसे बड़ी राजदार रही हैं। इसी के साथ शरद जयसवाल एवं चेतन सिंह गौर भी उसके सर्वाधिक वश्वसनीय हैं। सौरभ सहित पांचों को पूछताछ के लिए समंस सोमवार को जारी किया गया है।

आईटी से मांगी कार और सोने की जानकारी- चेतन सिंह गौर के नाम से पंजीकृत इनोवा से आयकर विभाग द्वारा जब्त किए गए कैश और सोना के संबंध में लोकायुक्त की टीम ने जानकारी मांगी है। जानकारी मिलने पर इसे प्रकाण की विवेचना में शामिल किया जाएगा।इनोवा से आयकर विभाग द्वारा जब्त किए गए कैश और सोना के संबंध में लोकायुक्त की टीम ने जानकारी मांगी है।

संपत्ति का आंकलन जारी- आरोपी के मकान और कार्यालय में सर्च के दौरान मिले संपत्ति संबंधी अभिलेखों के विस्तृत परीक्षण कर निवेश में वाय की गई राशि का आकलन और अपराध में सहयोगी अन्य व्यक्तियों की भूमिका की जांच की जाएगी। सर्च के दौरान प्राप्त बैंक खातों की जानकारी के आधार पर संबंधित बैंकों से खाता विवरण प्राप्त कर परीक्षण किया जाएगा।

सौरभ शर्मा ने जमीन में गाड़ रखी थी 2 क्विंटल चांदी- भोपाल में लोकायुक्त की रेड के दौरान आरटीओ के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के ठिकाने से चांदी की 200 सिल्लियां मिली थी। ये सिल्लियां उसने अपने ऑफिस में जमीन के अंदर गाड़ रखी थी। सौरभ शर्मा ने जयपुरिया स्कूल के ग्राउंड फ्लोर पर अपना ऑफिस बना रखा है। यहां उसने फ्लोर में अंडर ग्राउंड लॉकर बना रखा था। जिस पर दो टाइल्स रखे थे और इसके ऊपर कार्पेट बिछा रखा था।

सौरभ शर्मा-चेतन गौर के खिलाफ ईडी ने दर्ज किया केस

आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा की बेहिसाबी संपत्ति के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की भी एंट्री हो गई है। ईडी ने सोमवार को सौरभ और उसके सहयोगी चेतन गौर के खिलाफ धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के अंतर्गत प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) दर्ज की है।दूसरी ओर, केंद्रीय राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने भोपाल में मेंडोरी के जंगल में कार से गोल्ड-कैश मिलने के मामले की जांच शुरू कर दी है। इस गोल्ड के विदेश से आयात किए जाने की आशंका के मद्देनजर डीआरआई आयकर विभाग के पैरेलल जांच करेगा। इस संबंध में निदेशालय के अधिकारी एक होटल और स्कूल से जुड़े निवेश की भी जांच कर रहे हैं।

कांग्रेस में अंग्रेजों के जीन्स : वीडी शर्मा

विपक्ष गांधी-अंबेडकर के विचारों पर नहीं चलता, एनसीईआरटी में नेहरू को बाबा साहब को कोड़े मारते दिखाया

भोपाल (नप्र)। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने सोमवार को प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और कांग्रेस पार्टी पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि दिग्विजय सिंह झूठ परोसने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस में आज भी अंग्रेजों के जीन्स हैं। उन्होंने कांग्रेस पर फूट डालकर राज करने का आरोप लगाया है।

वीडी शर्मा ने कांग्रेस पर आरोप लगाए कि यूपीए-2 के शासन के दौरान 2012 में एनसीआरटी की किताब में एक चित्र में पंडित नेहरू को बाबा साहब अंबेडकर को कोड़े मारते दिखाया गया।

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस पार्टी के द्वारा गृह मंत्री अमित शाह के अंबेडकर पर दिए बयान के लिए घेरने का विरोध किया। उन्होंने कहा-मोदी जी, अमित शाह जी और भाजपा का पूरा नेतृत्व बाबा साहब अंबेडकर और महात्मा गांधी के विचारों से परिपूर्णता के साथ देश के अंदर काम हमारा करता है।

वीडी शर्मा ने कहा कि, दिग्विजय सिंह जी ने कहा था कि गांधी जी चाहते थे कि बाबा साहब अंबेडकर को संविधान सभा का अध्यक्ष बनाया जाए। मैं यह पूछना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी ने कब गांधी जी और बाबा साहब के विचारों पर काम किया?

वीडी बोले- बाबा साहब को चुनाव हराने नेहरू ने सभा की- बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने दिग्विजय सिंह के उस बयान का जवाब दिया जहां दिग्विजय सिंह ने कहा था कि अमित शाह ने बाबा साहब को

अपमानित किया। वीडी ने कांग्रेस नेतृत्व से पूछा कि किसने बाबा साहब का अपमान और तिरस्कार किया? कांग्रेस का नेतृत्व राहुल गांधी, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी और दिग्विजय सिंह जवाब दे कि बाबा साहब को देश में कानून मंत्री से इस्तीफा क्यों देना पड़ा था?

उन्होंने इस मामले में जवाहरलाल नेहरू पर भी निशाना साधा। वीडी शर्मा ने कहा- नेहरू जी का ऑन रिकॉर्ड वक्तव्य है कि इससे (बाबा साहब के इस्तीफे से) कोई फर्क नहीं पड़ता। वीडी शर्मा ने कहा-बाबा साहब को चुनाव हराने के लिए, आपके नेता नेहरू जी दो-दो बार उनके खिलाफ सभा करने क्यों गए थे?

बीजेपी की सरकार ने बाबा साहब को भारत रत्न दिया- वीडी शर्मा ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि उन्होंने गांधी परिवार के सदस्यों को भारत रत्न दिया। लेकिन बाबा साहब अंबेडकर को नहीं।वीडी ने बोला- अगर कांग्रेस बाबा साहब का जरा भी सम्मान करती तो राजीव गांधी से लेकर गांधी परिवार को भारत रत्न मिल गए। लेकिन बाबा साहब को भारत रत्न नहीं मिला।

उन्होंने कहा- हमारे नेतृत्व के मन में बाबा साहब अंबेडकर के प्रति सम्मान है। भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व की सरकारों ने ही बाबा साहब को भारत रत्न देकर सम्मानित किया। वीडी शर्मा ने कहा कि गांधी जी के विचारों को जमीन पर प्रतिपादित भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है।

बाबा साहब के पंचतीर्थों का विकास किया- वीडी शर्मा ने कांग्रेस पार्टी से सवाल किए कि अपने 55 साल के कार्यकाल में उन्होंने बाबा साहब के लिए क्या किया? वीडी शर्मा ने कहा कि, हमने बाबा साहब के पंचतीर्थों का विकास किया। मध्य प्रदेश में भी बाबा साहब की जन्मस्थली पर किसी ने काम किया तो वो सुंदरलाल पटवा थे।

वीडी शर्मा ने सवाल उठाए कि क्या धारा 370 लगाने में बाबा साहब की सहमति थी? उन्होंने कहा- धारा 370 के अंदर प्रावधान था कि जो सफाई कर्मी मित्र है वो जिंदगी भर सफाई कर्मी ही रहेगा। चाहे उसका बेटा कितना ही टैलेंटेड हो।

उन्होंने कहा- धारा 370 हट रही थी तब अमित शाह जी ने संसद में कहा था, कि मेरे सफाई मित्र जिंदगी भर सफाई ही करेंगे ये प्रावधान कर नेहरू जी ने बाबा साहब अंबेडकर के अनुयायी मित्रों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया था।

कांग्रेस पर नकारात्कता फैलाने के आरोप लगाए

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वह देश में नकारात्मक, झूठ और छल कपट को राजनीति का आधार बना रहे हैं। उन्होंने कहा कांग्रेस देश की संसद में और अन्य स्थानों पर झूठ परोसने का काम कर रही है।

वीडी शर्मा ने दिग्विजय सिंह के इंदौर में दिए उस बयान का भी जवाब दिया जहां उन्होंने कहा था कि विदेशों में पीएम मोदी विश्व बंधुत्व की बात करते हैं, लेकिन भारत लौटते ही हिंदुत्व का राग अलापते हैं।

इस पर बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि दिग्विजय सिंह को देश के अंदर कुछ अच्छा नहीं लगता। ना हिंदुत्व अच्छा लगता है और ना ही विश्व बंधुत्व। उन्होंने कहा- कुवैत में पीएम मोदी को सर्वोच्च सम्मान मिलता है तो दिग्विजय सिंह कभी तो यह सोचो की भारत के प्रधानमंत्री को दुनिया एपरिशियेट करती है। नकारात्मक राजनीति यही कांग्रेस के नेतृत्व का आधार है।

कांग्रेस पर अमित शाह को बदनाम करने के आरोप लगाए

वीडी शर्मा ने कांग्रेस पर आरोप लगाए कि वे अमित शाह को बदनाम करने के प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा- कांग्रेस के इन प्रयासों से अमित शाह जैसा व्यक्तित्व जो संपूर्ण जीवन देश के लिए लगाकर, गरीबों के कल्याण के लिए, बाबा साहब अंबेडकर के विचारों पर काम करने वाले को बदनाम नहीं कर सकते। उन्होंने बाबा साहब के बारे में कहा कि उनके विचारों के चलते ही देश एकसूत्र में रहा।

भोपाल-डिंडौरी समेत कई जिलों में कोहरा-धुंध

प्रदेश में आज से 28 दिसंबर के बीच सीजन का पहला मावठा, ओले भी गिर सकते हैं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में एक बार फिर मौसम बदला है। भोपाल-डिंडौरी समेत कई जिलों में सुबह से बादल और कोहरा छाया था। दफ्तर-स्कूल जाने वाले लोगों को गाड़ियों की हेडलाइट जलाकर सफर करना पड़ा।

मौसम विभाग के मुताबिक, पश्चिमी विक्षोभ के असर के चलते दो-तीन दिन से न्यूनतम तापमान में हो रही बढ़ोतरी के बाद आज एक बार फिर मध्यप्रदेश का पारा नीचे आया है। जिसके कारण ठंड बढ़ गई है। विभाग ने आज से 28 दिसंबर के बीच प्रदेश में सीजन का पहला मावठा गिरने का अनुमान जताया है। बारिश के साथ कुछ हिस्सों में ओले भी गिरेंगे।

सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया, प्रदेश में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के चलते उत्तर-पश्चिमी हवाएं आएंगी। ये अरब सागर से नमी लाएंगी। बंगाल की खाड़ी से पूर्वी हवाएं भी आएंगी। इस कारण प्रदेश में बादल छाने के साथ हल्की या मध्यम बारिश हो सकती है। कुछ जगहों पर ओले गिरने की संभावना भी है। डिंडौरी में सोमवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। मौसम विभाग ने बारिश की संभावना जताई है।

दिसंबर में बारिश का रहता है ट्रेंड- प्रदेश में दिसंबर में बारिश का ट्रेंड भी है। इस बार भी ऐसा ही मौसम रहेगा। इस वजह से दिन-रात के तापमान में 2

से 3 डिग्री की बढ़ोतरी और हो जाएगी लेकिन सिस्टम के गुजरने के बाद सर्दी फिर से तेज हो जाएगी।

अगले 4 दिन ऐसा रहेगा मौसम

24 दिसंबरः ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, सागर, रायसेन, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज और सीधी में कहीं-कहीं हल्की बारिश हो सकती है।

25 दिसंबरः ग्वालियर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर और पन्ना में कोहरा रहेगा।

26 दिसंबरः भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, छतरपुर, सागर, दमोह, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सीहोर, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, देवास, शाजापुर, राजगढ़, आगर-मालवा, खरगोन, बड़वानी, धार, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, अलीराजपुर में कहीं-कहीं बारिश हो सकती है।

पचमढ़ी सबसे ठंडा, कई शहरों में पारे में गिरावट- मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार-रविवार की रात में प्रदेश के कई शहरों में पारे में गिरावट हुई है। इकलौता हिल स्टेशन पचमढ़ी में पारा सबसे कम 3.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। खजुराहो में 5.6 डिग्री और रीवा में पारा 5.8 डिग्री रहा। नौगांव, रायसेन, टीकमगढ़, राजगढ़, सतना, मंडला, उमरिया, दमोह में पारा 10 डिग्री से नीचे रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 7.9 डिग्री, इंदौर में 13.9 डिग्री, ग्वालियर में 7.3 डिग्री, उज्जैन में 11 डिग्री और जबलपुर में पारा 8.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

सिंधिया ने कहा-जनजातीय समाज हमारे देश का वैभव

ग्वालियर में कहा- अमित शाह ने त्रिपुरा के आदिवासियों को दी करोड़ों की सौगात

ग्वालियर (नप्र)। केंद्रीय पूर्वोत्तर विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ग्वालियर दौरे पर हैं। सोमवार को उन्होंने गृहमंत्री अमित शाह ने त्रिपुरा के ब्रू आदिवासियों को दी गई करोड़ों की सौगात को ऐतिहासिक कदम बताया है। कहा कि ब्रू आदिवासियों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। त्रिपुरा का यह जनजातीय समाज हमारे देश का वैभव है। मैं मानता हूं कि यह जनजातीय समाज हमारे देश की पूंजी है। उत्तर पूर्वी राज्यों की इस पूंजी को राष्ट्र पटल पर ही नहीं बल्कि विश्व पटेल पर ले जाने का काम मोदी जी कर रहे है, इस लिहाज से ही यह कदम बढ़ाया है।

20 साल के युवक ने किया सुसाइड

राजा भोज की प्रतिमा के पास तालाब में छलांग लगाकर दी जान ; सड़क किनारे मिली मोपेड

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वीआईपी रोड पर सड़क किनारे मोपेड को पार्क करने के बाद 20 साल के युवक ने तलाब में छलांग लगाकर खुदकुशी कर ली। वह घर से शोरूम जाने का बोलकर निकला था। उसने खुदकुशी क्यों की, इस बात का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस को

उसके पास से कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

तलैया थाने के टीआई सीबी राठौर ने बताया कि मोहम्मद साद पुत्र मोहम्मद इलियास (20) निवासी सुभाष कॉलोनी एक बाइक शोरूम में जॉब करता था। उसके मां पिता का निधन हो चुका है। बड़े पिता के साथ रहता था। हर रोज की तरह सुबह शोरूम पर जाने का बोलकर निकला था। शोरूम न जाते हुए, वीआईपी रोड पर स्थित राजा भोज की प्रतिमा के पास उसने अपने वाहन को पार्क किया। इसके बाद तालाब में छलांग लगा दी। पुलिस का कहना है कि परिजन के डिटेल बयानों के बाद ही मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं को दी बधाई

71 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपने के लिए प्रधानमंत्री मोदी का माना आभार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में सोमवार को रोजगार मेले के माध्यम से देश के 71 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। युवाओं के सामर्थ्य एवं प्रतिभा से विकवित भारत का संकल्प साकार होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं को नई दिशा देने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार मानते हुए, नियुक्ति पत्र प्राप्त करने वाले युवाओं को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

मप्र में घोषित की 2025 की छुट्टियां

शनिवार-रविवार के कारण 22 में से कर्मचारियों को 8 छुट्टी का नुकसान

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश शासन ने साल 2025 के सामान्य और ऐच्छिक अवकाश घोषित कर दिए हैं। इस साल कर्मचारियों को 22 सामान्य और 68 ऐच्छिक अवकाश मिलेंगे। कर्मचारियों को इनमें से 8 छुट्टियों का नुकसान हुआ है। दरअसल, गुड़ी पड़वा/महर्षि गौतम जयंती/चैती चांद/गणतंत्र, रामनवमी एवं मोहर्रम त्योहार रविवार के दिन पड़ रहे हैं। इस दिन पहले से ही अवकाश रहता है। ऐसे ही ईद, रक्षाबंधन, बिरसा मुंडा जयंती,जन्माष्टमी शनिवार के दिन पड़ रही हैं। कोरोना के समय से प्रदेश में शनिवार को भी अवकाश रहता है।

इंदौर एयरपोर्ट से आधे घंटे में पहुंचेंगे महाकाल मंदिर

नए साल में सरकार शुरू करेगी 5 मेगा प्रोजेक्ट, उज्जैन से दिल्ली-मुंबई की दूरी घटेगी

भोपाल (नप्र)। इंदौर एयरपोर्ट से महाकाल मंदिर महज 30 मिनट में पहुंचा जा सकेगा। मध्यप्रदेश सरकार इंदौर-उज्जैन के बीच नया फोर लेन ग्रीन फील्ड हाईवे बनाने जा रही है। इस रूट पर कोई भी क्रॉसिंग नहीं होगी, न ही यू टर्न होगा। साथ ही इंदौर-उज्जैन के बीच जो मौजूदा 4 लेन हाईवे है उसे 6 लेन में बदला जा रहा है।

इसके अलावा उज्जैन-जावरा के बीच ग्रीनफील्ड एक्सेस कंट्रोल्ड हाईवे का भी निर्माण होने वाला है। इसके पूरा होते ही उज्जैन से दिल्ली या मुंबई का सफर 10 घंटे में पूरा होगा। इन तीन प्रोजेक्ट्स के अलावा डॉ. मोहन सरकार भोपाल से विदिशा और सागर से दमोह 4 लेन हाईवे भी बनाने जा रही है। इनके बनने के बाद भोपाल से कानपुर, लखनऊ, प्रयागराज, वाराणसी सीधे कनेक्ट हो जाएंगे।

दरअसल, ये सारी तैयारियां 2028 में होने वाले सिंहस्थ महाकुंभ को लेकर की जा रही है। सिंहस्थ में इस बार 15 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। नए साल में इन पांचों मेगा प्रोजेक्ट पर काम शुरू होगा। सरकार की कोशिश 2027 तक इन्हें पूरा करने की है।

इंदौर एयरपोर्ट से महाकाल मंदिर तक दो हिस्सों में काम

इंदौर-उज्जैन ग्रीन फील्ड 4 लेन को कैबिनेट से 20 दिन पहले मंजूरी मिल चुकी है। चिंतामन गणेश मंदिर से इंदौर एयरपोर्ट तक की दूरी करीब 70 किमी है। इसे दो हिस्सों में बनाया जाएगा। इसमें उज्जैन सिंहस्थ बायपास को टू लेन से 4 लेन किया जाएगा। 20 किलोमीटर की इस सड़क के निर्माण की लागत 701 करोड़ होगी।

साथ ही उज्जैन-इंदौर के बीच 48 किमी का फोर लेन ग्रीन फील्ड रोड बनेगा। 1370 करोड़ की लागत वाली इस सड़क को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है। यह सड़क पीथमपुर के औद्योगिक क्षेत्र को भी जोड़ेगी।

ये तीन फायदे..

1. **एयरपोर्ट से सीधे महाकाल मंदिर:** यात्री इंदौर एयरपोर्ट से सिंहस्थ बायपास फोरलेन सड़क मार्ग से चलकर आधे घंटे में सीधे महाकाल मंदिर पहुंच सकेंगे।
2. **आर्थिक विकास में मददगार:** पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र को जोड़ने से क्षेत्र के आर्थिक विकास में भी मददगार साबित होगी।
3. **स्थानीय रोजगार मिलेगा:** फोरलेन के निर्माण से जुड़े गांवों में स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, होटल, गोदाम और पेट्रोल पंप के लिए जमीन पहले से ही आरक्षित की जा रही है। इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

काम कब शुरू होगा

मुख्यमंत्री के निर्देशों के अनुसार, अधिकारियों को इस परियोजना पर तेजी से काम करने के लिए कहा गया है, जिससे जल्द से जल्द निर्माण प्रक्रिया प्रारंभ हो सके। मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक नए साल में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर धरातल पर काम शुरू कर दिया जाएगा।

7वीं पास निकला फ्रॉड का मास्टर माइंड

3 महीने में 3 करोड़ रुपए के ट्रांजेक्शन ; साइबर जालसाजों को 200 बैंक अकाउंट बेचे

भोपाल (नप्र)। भोपाल की कोलार पुलिस ने एक साइबर जालसाजों को खाता बेचने वाले गिरोह को पकड़ा है। जिसका मास्टरमाइंड 7वीं पास है। इनमें लिवइन पार्टनर्स भी शामिल है। इनके दो खातों में तीन महीने में तीन करोड़ के ट्रांजेक्शन हुए हैं।

आरोपियों के पास से 3 कार्ड स्वाइप मशीन, 6 मोबाइल फोन, 34 क्रेडिट डेबिट कार्ड ,20 चेक, 24 चेक बुक ,6 पास बुक, सिम रैपर, 77 सिम कार्ड, 2 डायरी, 1 कॉपी, 12 एटीएम, पिन रैपर, 1 लैपटॉप, 2 वाई-फाई राउटर समेत 8 लाख कैश मिली है। दर्जनों जिलों की पुलिस ने होल्ड लगवाया है।

आरोपी आधार और पेन कार्ड, गुमास्ता बनवाने का काम करते थे। गरीब और मजदूरों के दस्तावेज बहाने से हासिल कर फर्जी तरीके से खाते खुलाते थे। इन खातों को देश भर में साइबर जालसाजों को बेच दिया जाता था। आरोपियों के दो खातों में तीन महीने में तीन करोड़ के ट्रांजेक्शन हुए। खाता धारक जब खाता बंद कराने बैंक पहुंचा तो बैंक अधिकारियों को शक हुआ। जिसकी सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने खाता धारक को हिरासत में लेकर पूछताछ की।

तब उसने दंपती के साथ मिलकर खाता बेचने की बात को स्वीकार किया। इसके एवज में उसे कमिशन मिलता था। इसी खाता धारक की निशानदेही पर दंपती को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने 200 से अधिक खातों को बेचने की बात स्वीकार की है।

पुलिस ने गिरोह के सरगना, उसकी पत्नी और एक युवक और युवती को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक और युवती लिवइन पार्टनर्स बताए जा रहे हैं। दोनों आधार, पेन, फूड लायसेंस और गुमासता बनवाने का काम करते हैं। बागसेवनिया इलाके में उनकी दुकान है।

आरोपी राहुल श्रीवास्तव उर्फ बब्लू पिता शांति स्वरूप श्रीवास्तव (42) 7वीं कक्षा तक पढ़ा है। उसके पास से एक मोबाइल फोन व 2 पासबुक व संबंधित दस्तावेज जब्त किए गए हैं।

एडिशनल डीसीपी मलकीत सिंह ने बताया कि 19 दिसंबर को बैंक ऑफ महाराष्ट्र मंदाकिनी कोलार रोड शाखा से ईमेल कोलार पुलिस को प्राप्त हुआ। जिसमें बताया गया कि राहुल श्रीवास्तव उनकी बैंक में खाता बंद करवाने आया है। इस शख्स के दो बैंक खातों में पिछले 2-3 माह में करीबन 3 करोड़ रुपए का लेनदेन हुआ है।

भोपाल में बाइक सवार मां-बेटे को कार ने टक्कर मारी

बेटे की मौत, मां की हालत नाजुक ; प्लेटिनम प्लाजा के पास हुआ हादसा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के माता मंदिर स्थित प्लेटिनम प्लाजा के पास बाइक सवार मां और बेटे को सोमवार की सुबह कार ने टक्कर मार दी। हादसे में बेटे की मौत हो गई, मां का हमीदिया हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। दोनों करोंद मंडी से सब्जी खरीदकर पंचशील नगर स्थित घर जा रहे थे। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक अंकित कुशवाह (20) पुत्र जीवन कुशवाह पंचशील नगर में रहता था। रातीबढ़ स्थित एक पेट्रोल पंप में नौकरी करता था। उसकी मां सोमवती बाई घर के बाहर ही सब्जी की दुकान लगाती हैं। दोनों मां-बेटे करोंद मंडी दुकान की सब्जी लेने पहुंचे थे।

सब्जी खरीदकर घर लौट रहे थे। रास्ते में प्लेटिनम प्लाजा के पास उनकी बाइक को तेज रफ्तार कार ने ओवरटेक करने के प्रयास में टक्कर मार दी। हादसे में अंकित की मौके पर ही मौत हो गई।

परिवार का बड़ा बेटा था अंकित- अंकित परिवार का बड़ा बेटा था। उससे छोटे दो भाई लव और कुश हैं। दोनों स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं। अंकित के पिता मजदूरी करते हैं। परिजन का कहना है कि घर में आर्थिक सहयोग में अंकित की अहम भूमिका थी। हादसे के बाद चालक कार को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया है। चालक की तलाश की जा रही है।

नियुक्ति में मदद करने वाले नेता चिंतित

परिवहन आरक्षक सौरभ शर्मा के घर मिली अकूत दौलत को लेकर भोपाल से लेकर दिल्ली तक के राजनीतिक आकाओं से लेकर मंत्रालय के प्रशासनिक हल्कों तक में इन दोनों चर्चाओं का दौर गरम है। चर्चा है कि आखिर यह दौलत है किसकी ? सूत्र बताते हैं कि यह दौलत भाजपा के एक बहुत बड़े कद्दावर नेता, दो वर्तमान मंत्री, एक पूर्व मंत्री और एक सेवानिवृत आईपीएस अफसर के द्वारा जमा की गई अकूत धन संपदा का एक मामूली हिस्सा है। बताया जाता है कि जिस तरीके से परिवहन

मोहन का मंत्रालय

हर मंगलवार

कुमार आशीष

आरक्षक सौरभ शर्मा को नियम कायदों को ताक में रखकर अनुकंपा नियुक्ति मिली, इसमें इन नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान है। छापे के बाद से नेताओं की नींद उड़ी हुई है। सूत्र बताते हैं कि सौरभ शर्मा को नियम के अनुसार क्लर्क का काम ऑफिस में सौंपा जाना था, लेकिन अनुकंपा नियुक्ति के साथ ही उसे सीधे फील्ड पोस्टिंग दे दी गई। परिवहन विभाग में आरक्षक का पद प्रवर्तन श्रेणी का है और इसे व्यापम के जरिए ही भरा जा सकता है। नियुक्ति मिलने के बाद आरक्षक ने मैनेजर खजांची का दायित्व संभाल लिया और कुछ ही समय में भाजपा के कद्दावर नेता का विश्वास पात्र बन गया। अब कद्दावर भाजपा नेता और सेवानिवृत आईपीएस अफसर की नींद उड़ी हुई है कि अगला छापा कहां पढ़ने वाला है? सूत्र बताते हैं कि छापे का यह सफर अब बुंदेलखंड की तरफ जाता दिखाई दे रहा है। सूत्र बताते हैं कि एक बड़े भाजपा नेता से भी आईटी पूछताछ कर सकती है।

डीजीपी की पहली जनसुनवाई और मीडिया की नो एंट्री

मध्य प्रदेश पुलिस के मुखिया, पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना की मंगलवार को पहली ही जनसुनवाई चर्चाओं में रही। डीजीपी मकवाना की जनसुनवाई की खबरें जस की तस या कहें अन्दर खाने की खबरें मीडिया में न प्रकाशित हो जाएं, इसके लिए डीजीपी साहब ने मीडिया का प्रवेश ही वर्जित कर दिया। पुलिस मुख्यालय से मीडिया कवर करने वाले अखबार नवीस जब पीएचक्यू पहुंचे तो उन्हें भी डीजीपी की जनसुनवाई में जाने से रोक दिया गया। पत्रकारों से कहा गया कि ऊपर से निर्देश है कि जनसुनवाई में मीडिया की एंट्री न हो। सूत्र बताते हैं कि पुलिस अफसरों ने निर्देश दिया था कि जनसुनवाई में आने वाले पीड़ितों की डीजीपी से चर्चा जस की तस मीडिया में स्थान न बना ले, जिस से पुलिस मुखिया या अफसरान की किरकिरी न हो। हालांकि बाद में पुलिस मुख्यालय से शाम को जनसुनवाई का सरकारी प्रेस नोट जरूर जारी हुआ। डीजीपी को जनसुनवाई में मीडिया की एंट्री से क्यों परहेज रहा ? चर्चा का विषय है जबकि डीजीपी की कार्य प्रणाली पारदर्शिता के लिये जानी जाती है।

हाशिये पर चल रहे आईएएस को मिली तवज्जो !

लंबे समय से हाशिये पर चल रहे हैं राज्य शासन के एक वरिष्ठ आईएएस अफसर फिर लूप लाइन से मेन लाइन पर आ गए हैं। आईएएस अफसर अब इससे खुश भी नजर आ रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि मोहन सरकार में वरिष्ठ आईएएस अफसर को एक प्रमुख विभाग से हटकर लूप लाइन में भेज दिया था, लेकिन अब उन्हें सरकार की प्राथमिकता वाला एक विभाग सौंपा गया है। इसका नतीजा यह है कि वरिष्ठ आईएएस अफसर पिछले दिनों सरकार के मुखिया के साथ विदेश यात्रा पर भी गए और वहां निवेश की संभावना पर उद्योगपतियों के साथ चर्चा में प्रमुख भूमिका निभाई। सरकार के मुखिया भी वरिष्ठ आईएएस ऑफिसर की कार्य प्रणाली से खुश हैं। मुख्य सचिव तक वरिष्ठ आईएएस अफसर के कामकाज की मीटिंग के दौरान तारीफ कर चुके हैं।

विधायकों की उदासीनता

मध्य प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र में सत्ता और विपक्ष के विधायकों की उदासीनता एक संशोधन विधेयक में दिखाई दी। विधायकों ने संशोधन विधेयक पर न चर्चा में भाग लिया ना सुझाव दिया और संशोधन विधेयक पारित हो गया। ऐसी उदासीनता शायद पहले ना देखने को मिली हो। प्रदेश विधानसभा में पिछले दिनों नगरीय निकाय के दो संशोधन विधेयक पारित हुए। जिसमें एक संशोधन विधेयक के जरिए नगर पालिका परिषद के अध्यक्षों का निर्वाचन प्रत्यक्ष प्रणाली से कराए जाने का प्रावधान किया गया और यह संशोधन सदन में बिना चर्चा के पारित हो गया। सदन से विधेयक पास होकर कानून का रूप लेते हैं। हमारे द्वारा चुने गए विधायक चर्चा में रुचि न लें यह दुर्भाग्य जनक स्थिति है।

सदन में अध्यक्ष ने जब आसंदी से घोषणा की कि संशोधन विधेयक के लिए एक भी विधायक ने चर्चा के लिए नाम नहीं दिया है तो विभाग के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने सदन में संशोधन विधेयक पारित करने का अनुरोध किया जो बाद में पारित हो गया। बता दें कि संशोधन विधेयक से पूर्व नगर पालिका परिषद में अध्यक्ष का निर्वाचन पार्षद करते थे अब जनता चुनेगी।

सदस्यता अभियान में टांय-टांय फिस

मध्य प्रदेश भाजपा ने सदस्यता के अभियान में राष्ट्रीय स्तर पर झंडे गाड़ दिये हों किंतु प्रदेश के ही कुछ कद्दावर नेताओं के यहां सदस्यता अभियान टाय टाय फिस हो गया। कद्दावर नेता दिल्ली तक बातें बड़ी बड़ी बातें करके आए, लेकिन सदस्यता अभियान ने उनकी साख पर बट्टा लगा दिया है... पार्टी में कद्दावर नेताओं के विरोधी मूँछ पर ताव देते फिर रहे हैं की सरकार चलाने वाले रसूखदारों के यहाँ सदस्यता का भांडा फूट गया.. और आस लगाए बैठें की अब कम से कम ऐसे नेताओं पर नकेल कसेगी..